पर्यावरण अध्ययन

आस-पास

चौथी कक्षा के लिए

पाठ्यपुस्तक

0428

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

© NCERT not to be republished

0428 – आस-पास
कक्षा 4 के लिए पाठ्यपुस्तक

ISBN 81-7450-692-6

प्रथम संस्करण
फरवरी 2007 माघ 1927

पुनर्मुद्रण
नवंबर 2007 कार्तिक 1929
जनवरी 2009 माघ 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
नवंबर 2010 कार्तिक 1932
जून 2012 ज्येष्ठ 1934
मार्च 2013 फाल्गुन 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
दिसंबर 2016 पौष 1938
दिसंबर 2017 पौष 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
अगस्त 2019 भाद्रपद 1941
अगस्त 2021 श्रावण 1943
दिसंबर 2021 अग्रहायण 1943

PD 15T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2007

₹ 65.00

आवरण के चित्र
ताहिरा पठान और रबिया शेख
हिम्मत, अहमदाबाद।

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा विद्या प्रकाशन मन्दिर (प्रा.) लि., विद्या इस्टेट, बागपत रोड, मेरठ- 250 002 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 **Phone : 011-26562708**

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बैंगलुरु 560 085 **Phone : 080-26725740**

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 **Phone : 079-27541446**

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप
पनिहटी
कोलकाता 700 114 **Phone : 033-25530454**

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 **Phone : 0361-2674869**

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*विपिन दिवान*
सहायक संपादक	:	*शशि चड्डा*
उत्पादन सहायक	:	*सुनील कुमार*

आवरण और सज्जा
श्वेता राव

चित्रांकन
जोयल गिल, आलोक हरि, अरूप गुप्ता, मनीष राज, दीपा बलसावर, पर्यावरण शिक्षा केंद्र, अहमदाबाद, अवेही अबेकस प्रोजेक्ट, मुंबई

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है, जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए, तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारिणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेण्डर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव कराने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान व अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत् कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में, यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद्, इस समिति के कार्यों में मार्गदर्शन के लिए प्राथमिक पाठ्यपुस्तक समिति के सलाहकार समूह की अध्यक्ष अनीता रामपाल, *प्रोफ़ेसर*, सी.आई.ई., दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; मुख्य सलाहकार डॉ. सावित्री सिंह, *प्राचार्या*, आचार्य नरेंद्र देव कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; सह-मुख्य सलाहकार, फ़राह फ़ारूकी, *प्रवाचक*, ज़ामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान दिया। इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा

© NCERT not to be republished

प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनीटरिंग कमेटी) के सदस्यों के प्रति अमूल्य सुझाव देने के लिए आभार व्यक्त करते हैं।

व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी., टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी, जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

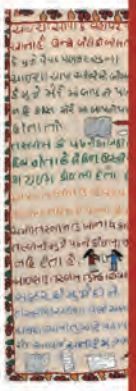

© NCERT not to be republished

दो शब्द शिक्षकों एवं अभिवावकों से

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ़.) 2005 में कथित उद्देश्यों को एक राष्ट्रीय स्तर की पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक में प्रस्तुत करना लेखक मंडल के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा। लेखक मंडल पाठ्यपुस्तक के विकास से जुड़े अपने अनुभव तथा मुद्दों को सबके साथ बाँटना चाहेगा।

इस आयु वर्ग के बच्चे अपने परिवेश को समग्र रूप में देखते हैं भागों में नहीं। वे इससे जुड़े किसी भी विषय को 'विज्ञान' तथा 'सामाजिक अध्ययन' के रूप में नहीं देखते। अतः यह आवश्यक समझा गया कि इस पुस्तक में बच्चों के परिवेश के प्राकृतिक और सामाजिक घटकों को समग्र रूप में प्रस्तुत किया जाए। पर्यावरण अध्ययन के पाठ्यक्रम में भी अलग-अलग विषयों की सूची लेने की बजाए ऐसे उप-विषय (थीम) प्रस्तावित किए जा रहे हैं, जो कि बच्चों के जीवन के बहुत करीब हों। पाठ्यपुस्तक में प्रयास है कि प्रत्येक उप-विषय से जुड़े प्राकृतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष बहुत सूक्ष्म रूप से उभरें, जिससे बच्चे अपने विचार सोच-समझ कर बनाएँ।

राष्ट्रीय स्तर पर कक्षा के बहुसांस्कृतिक स्वरूप को प्रतिबिंबित करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा। यह आवश्यक समझा गया कि सभी बच्चों को महत्त्व मिले–उनका समाज, संस्कृति, रहन-सहन आदि सभी महत्त्वपूर्ण हैं। पाठ्यपुस्तक लिखते समय मुख्य प्रश्न था कि हम किन बच्चों को संबोधित कर रहे हैं? – क्या वे किसी बड़े शहर के किसी बड़े विद्यालय के बच्चे हैं, या किसी झुग्गी-झोंपड़ी में स्थित किसी विद्यालय के या किसी एक ग्रामीण स्कूल के या फिर दूर-दराज के किसी पहाड़ी इलाके के स्कूल के? इतनी विविधताओं को पाठ्यपुस्तक में कैसे समाहित किया जाए? लिंग, वर्ग, संस्कृति, धर्म, भाषा, भौगोलिक स्थिति आदि सभी को कैसे समाहित किया जाए। बच्चों को व्यक्तियों में होने वाली भिन्नताओं के प्रति संवेदनशील कैसे बनाया जाए?— ये कुछ मुख्य मुद्दे थे, जो पाठ्यपुस्तक में समाहित किए हैं तथा जिन्हें अध्यापकों को भी अपने तरीके से सँभालना है।

इस विषय से जुड़े मुद्दों पर बात-चीत से पहले इस विषय का पाठ्यक्रम पढ़ें। इस विषय का नया पाठ्यक्रम 6 थीम में बाँटा गया है– परिवार एवं मित्र, भोजन, पानी, आवास, यात्रा तथा हम चीजें कैसे बनाते हैं। पूरा पाठ्यक्रम एन.सी.ई.आर.टी. की वेब साइट www.ncert.nic.in पर भी उपलब्ध है। पाठ्यक्रम पढ़कर अगर इस विषय को पढ़ाएँगे तो इस विषय की समझ आप ज़्यादा बना पाएँगे।

पुस्तक में विषय-वस्तु बाल-केंद्रित रखी गई है, जिससे बच्चों को स्वयं खोजकर पता करने का अवसर मिले। पाठ्यपुस्तक में यह प्रयास किया गया है कि रटने की प्रवृत्ति कम हो। अतः परिभाषाएँ, वर्णन, अमूर्त्त प्रत्यय आदि को स्थान नहीं दिया गया है। पाठ्यपुस्तक में जानकारी देना बहुत ही सरल कार्य है। वास्तविक चुनौती है कि बच्चों को मौका दिया जाए, जिससे वे अपने विचार प्रकट करें, उत्सुकता को बढ़ा सकें, करके सीखें, प्रश्न करें तथा प्रयोग कर सकें। बच्चे पाठ्यपुस्तक से खुशी-खुशी जुड़ें, इसके लिए पाठों का प्रस्तुतीकरण विविध तरीकों से किया गया है, जैसे– किस्से-कहानियाँ, संवाद, कविताएँ, पहेलियाँ, हास्य खंड, नाटक, क्रियाकलाप आदि। बच्चों में कुछ बातों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने के लिए अकसर किस्से-कहानियों का इस्तेमाल महत्त्वपूर्ण माना गया है, क्योंकि बच्चे कहानी के पात्रों से अपने को आसानी से जोड़ सकते हैं। पुस्तक में प्रयुक्त भाषा भी 'औपचारिक' नहीं है, बल्कि बच्चों की बोल-चाल की भाषा है।

© NCERT not to be republished

ज्ञान-सृजन के लिए बच्चों का क्रियात्मक रूप से शामिल होना ज़रूरी है। पर्यावरण अध्ययन की पढ़ाई को कक्षा की चारदीवारी के बाहर से जोड़ा गया है। पाठ्यपुस्तक में दिए गए क्रियाकलापों द्वारा बच्चों में अवलोकन क्षमता विकसित करने के लिए उनको बाहरी परिवेश बाग-बगीचे, तालाब के किनारे, प्रकृति भ्रमण आदि के अनुभवों से जोड़नें की ज़रूरत है। इससे उनमें अवलोकन के साथ-साथ अन्य कौशलों का विकास भी होगा। पाठ्यपुस्तक में बच्चों के स्थानीय ज्ञान को विद्यालय के ज्ञान से जोड़ने का प्रयास किया गया है। यह ध्यान देने की बात है कि पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित क्रियाकलाप मात्र सुझावात्मक है। क्रियाओं व प्रश्नों को पाठों के अंत में न देकर उन्हें पाठ का ही हिस्सा बनाया गया है। अतः अध्यापकों को पुस्तक में दिए गए क्रियाकलापों और इस्तेमाल की गई सामग्री को स्थानीय परिवेश के अनुसार रूपांतरित करना है। पुस्तक में विविध प्रकार के क्रियाकलाप हैं, जो बच्चों को अवलोकन, खोज, वर्गीकरण, प्रयोग, चित्र बनाना, बात-चीत करना, अंतर ढूँढ़ना, लिखना आदि कौशल सीखने का मौका देंगे। पाठ्यपुस्तक में बहुत सारे ऐसे क्रियाकलाप हैं, जिन्हें बच्चे स्वयं अपने हाथों से करेंगे और उससे उनमें क्रियात्मक कौशल का विकास होगा। बच्चों में सृजनात्मकता को उभारना, रचना करने का कौशल एवं सौन्दर्यबोध का विकास भी होगा। क्रियाकलापों के बाद उस विषय पर चर्चा, बच्चों को अपने अवलोकन के निष्कर्ष निकालने में सहायक होगी। साथ ही सही दिशा में चर्चा या सुझाव बच्चे में व्यक्तिगत रूप से सीखने में ज़्यादा मददगार हो सकते हैं।

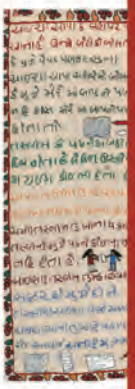

पुस्तक में इस बात की काफ़ी गुँजाइश है कि बच्चे ज्ञान के लिए शिक्षक और पाठ्यपुस्तक के अलावा अन्य स्रोतों की मदद लें, जैसे – परिवार के सदस्य, समुदाय के लोग, समाचारपत्र एवं अन्य पुस्तकें इत्यादि। इससे यह स्पष्ट हो सकेगा कि पाठ्यपुस्तक ही मात्र सीखने का स्रोत नहीं है। बहुत समय पहले की जानकारी या इतिहास की झलक के लिए बच्चों को अपने बड़ों की मदद लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। इससे बच्चों के अभिभावकों और समाज का विद्यालय से जुड़ाव तो होगा ही, साथ ही उनका योगदान भी बढ़ेगा। शिक्षक को भी बच्चों के परिवारों के बारे में जानने का मौका मिलेगा।

'चित्र' इस आयु वर्ग के बच्चों की पुस्तकों के महत्त्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। लेखक दल ने ध्यान रखा है, कि चित्र की प्रकृति लिखित बातों को प्रतिबिंबित करे। पुस्तक में विषय-वस्तु को चित्रों की सहायता से बढ़ाना एक प्रमुख आधार रखा गया है। चित्रों का इस्तेमाल इस तरह भी किया गया है कि वे लिखित कार्य के पूरक हों। चित्र बच्चों को खुशी तो प्रदान करें ही, साथ ही वे उनसे चुनौतीपूर्ण तरीके से कुछ सीखें भी।

पाठ्यपुस्तक में बच्चों को काम करने के विविध अवसर दिए गए हैं, जैसे-अकेले, छोटे समूह या बड़े समूह में काम करना। समूह में किए गए पारस्परिक क्रियाकलापों से बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं। इससे मिलकर कार्य करने की क्षमता बढ़ती है। बच्चे शिल्पकला और चित्रकला को समूह में करके आनंदित होते हैं। जब बच्चों की रचनात्मकता की प्रशंसा की जाती है, तो वे बहुत खुश होते हैं व उसके प्रति प्रेरित भी होते हैं। अतः उनकी प्रशंसा की जाए, उनकी रचनात्मकता को अनावश्यक रूप से नकारा न जाए।

पाठ में प्रश्नों तथा क्रियाकलापों का उद्देश्य, सूचना अथवा जानकारी को जाँचना नहीं है, बल्कि बच्चों को अपने विचार प्रकट करने का अवसर देना है। इन प्रश्नों तथा क्रियाकलापों को करने के लिए उन्हें पूरा समय दिया जाना चाहिए, क्योंकि हर बच्चा अपनी गति से सीखता है। अध्यापक बच्चों की आवश्यकता, पढ़ाने का तरीका तथा स्थानीय स्थिति के अनुरूप अपने मूल्यांकन के तरीके स्वयं निर्धारित

© NCERT not to be republished

करें। मूल्यांकन पर और समझ बनाने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. ने स्रोत पुस्तक इस विषय पर भी तैयार की हैं। उसे भी अवश्य पढ़ें। बच्चों के कौशलों का मूल्यांकन, उनके द्वारा की गई क्रियाओं–कक्षा में अथवा कक्षा के बाहर-के अनुरूप होना चाहिए। मूल्यांकन एक सतत् प्रक्रिया है। अतः विभिन्न परिस्थितियों, जैसे–अवलोकन करना, प्रश्न पूछना, ड्रॉइंग अथवा चित्रकारी करना, समूह में चर्चा करना आदि के दौरान मूल्यांकन होना ज़रूरी है। इसलिए प्रत्येक पाठ में क्रियाकलाप एवं प्रश्न पाठ के अंदर ही दिए है अंत में नहीं। उन्हें उसी क्रम में करवाना उचित होगा।

पाठ्यपुस्तक के विकास में लेखक मंडल के सामने एक प्रमुख मुद्दा था कि समाज में पाई जाने वाली भिन्नताओं के प्रति बच्चों की संवेदनशीलता बढ़ाई जा सके, चाहे वे भिन्नताएँ शारीरिक क्षमताओं, आर्थिक स्थिति तथा हमारे व्यवहार में अंतर के कारण हों। ये सब बातें हमारे रहन-सहन, पहनावे तथा भौतिक सुविधाओं की उपलब्धता आदि में परिलक्षित होती हैं। हमें हर बच्चे में यह समझ उत्पन्न करनी होगी, कि किसी भी समाज में भिन्नता स्वाभाविक है। हमें इन भिन्नताओं की प्रशंसा तथा सम्मान करना सीखना है। अध्यापकों को इस बात पर विशेष ध्यान देना होगा, जिससे सामाजिक मुद्दों को संवेदनशीलता के साथ सँभाला जा सके, खासकर जब कक्षा में विशेष आवश्यकता समूह वाले या फिर परेशान माहौल से आने वाले बच्चे हों।

यह पुस्तक कुछ और मुख्य बिंदु हमारे समक्ष रखती है। इस पुस्तक में दिए गए कुछ अध्याय वर्तमान जीवन के उदाहरणों पर आधारित हैं। इन अध्यायों में वास्तविक घटनाओं से संबंधित कहानियाँ हैं या फिर उन घटनाओं से जुड़े पात्रों की कुछ झलक है, क्योंकि जीवन अपने-आप में ज्ञान-सृजन और सीखने का अहम् स्रोत होता है। साथ ही वास्तविक जीवन से जुड़ी ये घटनाएँ हमें प्रेरित भी करती हैं, हमारे समक्ष एक विशेष रोचकपूर्ण संदर्भ प्रस्तुत करती हैं तथा हमें, हमारे पूर्व अनुभवों पर फिर-से विचार करने के अवसर प्रदान करती हैं।

जीवन से जुड़े ये किस्से-कहानियाँ लोगों की सफ़लता, उपलब्धि अथवा विचलित व्यवहार से संबंधित हैं। ये दृष्टांत हमने ऐसे लोगों के जीवन से चुने हैं, जिन्हें बहुत कम लोग जानते हैं। हमने प्रसिद्धि प्राप्त लोगों के जीवन से जुड़े उदाहरणों को नहीं चुना है, क्योंकि ऐसा महसूस किया गया है कि साधारण जन का जीवन बच्चों को अधिक प्रेरणा दे सकता है तथा पाठक और पात्र/विषय के बीच की दूरी को भी कम कर सकता है। यह आशा की जाती है कि इन घटनाओं अथवा पाठ के अंशों को पढ़ने के बाद बच्चे उनसे सृजनात्मक रूप से जुड़ेंगे, ऊपरी तौर पर नहीं। क्रियाकलाप और चर्चा के द्वारा प्रत्येक अध्याय में ऐसे सुअवसर प्रदान करने का विशेष ध्यान रखा गया है। इस बात पर ज़ोर देना होगा कि इस संकलन व चयन को 'इंस्टेंट मील' की तरह न देखा जाए। कोई भी लेख, चाहे वह सकारात्मक हो या नकारात्मक, बिना सोचे-समझे प्रतिस्पर्धा, तिरस्कार या उन्हें अस्वीकार करने के इरादे से नहीं लिखा गया है। यह आशा की जाती है कि बच्चे और वयस्क समान रूप से अपने अनूठे अनुभवों, जीवन मूल्यों और विश्लेषण कौशल से इनकी समालोचना करेंगे। यह प्रक्रिया शिक्षण और सीखने की क्षमता को समृद्ध करेगी और बच्चों में जीवन की समझ पैदा करने के तरीकों को नए आयाम प्रदान करेगी।

लेखक मंडल ने न केवल बच्चों के बारे में सोचा है, अपितु अध्यापकों को भी ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा है, जो ज्ञान सृजन करते हैं और अपने अनुभवों को बढ़ाते हैं। अतः इस पाठ्यपुस्तक को सीखने-सिखाने की सामग्री की तरह देखा गया है, जिसके इर्द-गिर्द शिक्षक अपनी पढ़ने-पढ़ाने की क्रिया को संगठित करें, ताकि बच्चों को सीखने के अवसर मिल सकें।

© NCERT not to be republished

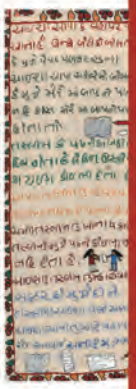

एस. अमाल जेरी अर्थपुथराज, 10 वर्ष,
सेंट पैट्रिक मॉडर्न उच्च माध्यमिक विद्यालय, पुदुच्चेरी

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, प्राइमरी पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

अनीता रामपाल, *प्रोफ़ेसर*, शिक्षा विभाग (सी.आई.ई.), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

मुख्य सलाहकार

सावित्री सिंह, *प्राचार्या*, आचार्य नरेंद्र देव कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सह-मुख्य सलाहकार

फ़राह फ़ारूकी, *प्रवाचक*, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, शिक्षा विभाग, दिल्ली

सदस्य

लतिका गुप्ता, *कन्सलटेंट* (सलाहकार), सर्व शिक्षा अभियान, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

ममता पंड्या, *कार्यक्रम निदेशक*, पर्यावरण शिक्षा केंद्र, अहमदाबाद

पूनम मोंगिया, *सहायक अध्यापिका*, सर्वोदय कन्या विद्यालय, विकासपुरी, नई दिल्ली

रीना आहूजा, *प्रोग्राम ऑफ़िसर*, नेशनल एजुकेशन ग्रुप-फ़ायर, गौतम नगर, नई दिल्ली

संगीता अरोड़ा, *प्राथमिक अध्यापिका*, केंद्रीय विद्यालय, शालीमार बाग, दिल्ली

सिमंतिनी धुरू, *निदेशक*, अवेही अबेकस प्रोजेक्ट, मुंबई, महाराष्ट्र

स्वाति वर्मा, *अध्यापिका*, दि हेरीटेज स्कूल, सेक्टर-23, रोहिणी, दिल्ली

सदस्य एवं समन्वयक

मंजु जैन, *प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उन समस्त लेखकों, कवियों और संस्थाओं के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने इस पुस्तक में अपनी रचना-सामग्री का प्रयोग करने की अनुमति प्रदान की—लीसा हैडलोफ़ (लेखिका), *चलो, चलें स्कूल* के लिए (अध्याय 1, *गोइंग टू स्कूल इन इंडिया* नामक पुस्तक से) और *बच्चों की कलम से* (अध्याय 1—एकलव्य द्वारा प्रकाशित *चकमक* से); *अनीता की मधुमक्खियाँ* के लिए *गोइंग टू स्कूल,* यूनिसेफ से सहायता प्राप्त संस्था (अध्याय 5, अनीता की केस स्टडी पर आधारित); *चूँ-चूँ करती आई चिड़िया* (अध्याय 16, गिजूभाई बधेका कृत *रुतु ना रंग* से) के लिए विमूबेन बधेका, दक्षिणामूर्ति बालमंदिर; *पानी कहीं ज़्यादा, कहीं कम* के लिए *संस्था—द कंसर्न्ड फॉर वर्किंग चिल्ड्रन,* कर्नाटक (अध्याय 18, भीमा संघ, बच्चों की पंचायत की केस स्टडी से); *कोशिश हुई कामयाब* (अध्याय 27, रूपांतरित कहानी) के लिए सुजाता पद्मनाभन (लेखिका) मधुवन्ती अनन्तराजन, मनीषा शेठ गुटमैन (चित्रकार), नाम्ग्याल इन्स्टीट्यूट फॉर पीपल विद डिसेबिलिटी, लेह, लद्दाख।

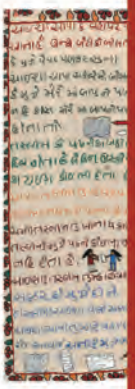

हम *पोचमपल्ली साड़ियाँ* पर बच्चों का निबंध संकलित करने हेतु एस. विनायक, ए.एम.ओ., एस.एस.ए., आंध्र प्रदेश और इस निबंध (अध्याय 23) का अनुवाद करने के लिए के. कल्याणी, लेडी श्रीराम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। हम पर्यावरण शिक्षा केंद्र, अहमदाबाद और अवेही अबेकस, मुंबई के प्रति भी आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने अपने प्रकाशन से रचना सामग्री प्रयोग करने की अनुमति प्रदान की, जिस पर इस पुस्तक के कुछ अध्याय आधारित हैं। विभिन्न संगठनों, संस्थानों और उनके द्वारा नियुक्त विशेषज्ञों का योगदान भी विशेष रूप से प्रशंसनीय रहा। वे हैं- डायरेक्टर, पर्यावरण शिक्षण केंद्र, अहमदाबाद; डायरेक्टर, अवेही अबेकस, मुंबई; प्रिंसिपल, केंद्रीय विद्यालय, शालीमार बाग, दिल्ली; प्रिंसिपल, सर्वोदय कन्या विद्यालय, विकासपुरी, नई दिल्ली; प्रिंसिपल, द हेरीटेज स्कूल, रोहिणी, दिल्ली। सर्जन लेफ्टिनेंट कमाण्डर वहीदा प्रिज़्म का साक्षात्कार (अध्याय 26) लेने में डायरेक्टर जनरल, आर्म्ड फोर्स मेडिकल सर्विसिस, रक्षा मंत्रालय, (एम. ब्लॉक), नई दिल्ली की अपरिमित सहायता, स्टेट प्रोजेक्ट डायरेक्टर, एस.एस.ए., उत्तर प्रदेश *इत्र* (अध्याय 11) और आँध्र प्रदेश द्वारा *पोचमपल्ली साड़ियाँ* (अध्याय 23) पर रचना सामग्री उपलब्ध कराने तथा केंद्रीय विद्यालय, असम की अध्यापिका बुलबुल (धूलियाजन) और वी.डी. शर्मा (नामरूप) द्वारा पाठ 20 में बीहू पर रचित सामग्री एवं पृष्ठ 170 का फोटोग्राफ उपलब्ध कराने के लिए हम उनका धन्यवाद करते हैं।

हम कृष्णकांत वशिष्ठ, *प्रोफ़ेसर* और *विभागाध्यक्ष,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने इस पुस्तक के विकास में बड़े पैमाने पर हर संभव सहयोग दिया। श्वेता उप्पल, *मुख्य संपादक,* एन.सी.ई.आर.टी. के प्रति भी आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने पुस्तक के संपादन के दौरान महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए। किरण देवेन्द्र, *प्रोफ़ेसर,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, सुषमा जयरथ, *प्रवाचक,* महिला अध्ययन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. का भी आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने लिंगभेद जैसे मुद्दों पर अपने सुझाव दिए। शाकम्भर दत्त, *इंचार्ज,* कम्प्यूटर कक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग; विजय कौशल, *डी.टी.पी. ऑपरेटर;* श्रेष्ठा वत्स, *कॉपी एडीटर;* शशि देवी, *प्रूफ रीडर;* प्रारम्भिक शिक्षा विभाग का योगदान प्रशंसनीय रहा। इस पुस्तक के प्रकाशन में प्रकाशन विभाग, एन.सी.ईआर.टी. का उद्यमशील प्रयास सराहनीय है।

© NCERT not to be republished

विषय सूची

	आमुख	*iii*
	दो शब्द शिक्षकों एवं अभिभावकों से	*v*
1.	चलो, चलें स्कूल!	1
2.	कान-कान में	11
3.	नन्दू हाथी	21
4.	अमृता की कहानी	31
5.	अनीता की मधुमक्खियाँ	38
6.	ओमना का सफ़र	47
7.	खिड़की से	53
8.	नानी के घर तक	60
9.	बदलते परिवार	66
10.	हु तू तू, हु तू तू	77
11.	फुलवारी	84
12.	कैसे-कैसे बदले घर	96
13.	पहाड़ों से समुंदर तक	106

© NCERT not to be republished

14. बसवा का खेत 113

15. मंडी से घर तक 119

16. चूँ-चूँ करती आई चिड़िया 127

17. नंदिता मुंबई में 137

18. पानी कहीं ज़्यादा, कहीं कम 146

19. जड़ों का जाल 158

20. मिलकर खाएँ 166

21. खाना-खिलाना 174

22. दुनिया मेरे घर में 179

23. पोचमपल्ली 186

24. दूर देश की बात 191

25. चटपटी पहेलियाँ! 199

26. फ़ौजी वहीदा 204

27. कोशिश हुई कामयाब 210

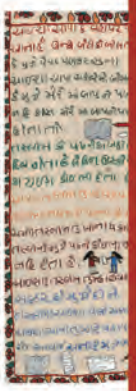

© NCERT not to be republished

पाठ-1
चलो, चलें स्कूल!

0428CH01

आओ, कुछ बच्चों से मिलें और देखें, कैसे-कैसे ये बच्चे स्कूल पहुँचते हैं।

बाँस से बना पुल

हमारे यहाँ बारिश बहुत होती है। कभी-कभी तो चारों तरफ़ घुटनों तक पानी भर जाता है। फिर भी हम स्कूल जाने से नहीं रुकते। एक हाथ में किताबें उठाते हैं और दूसरे हाथ से बाँस को पकड़ते हैं। हम जल्दी-जल्दी बाँस और रस्सी से बना पुल पार कर जाते हैं।

चलो, करके देखें

- कुछ ईंटें लो। इन्हें किसी खुली जगह पर सीधी लाइन में रखो, जैसे चित्र में दिखाया गया है। अब इन पर चलने की कोशिश करो। क्या यह आसान लगा?
- अपनी टीचर की मदद से चार-पाँच बाँसों को बाँध कर एक छोटा-सा पुल बनाओ। उस पर चल कर देखो। तुम्हें कैसा लगा? गिरे तो नहीं? कई बार चलोगे तो आसान लगने लगेगा।
- जूते या चप्पल पहन कर पुल पर चलना ज़्यादा आसान होगा या नंगे पैर? क्यों?

© NCERT not to be republished

ट्रॉली भी

स्कूल पहुँचने के लिए हमें रोज़ नदी पार करनी होती है। खूब चौड़ी और गहरी नदी। नदी के पार जाती हुई मज़बूत लोहे की रस्सी होती है। यह दोनों तरफ़ से भारी पत्थरों या पेड़ों से कस कर बँधी रहती है। ट्रॉली (लकड़ी से बना झूला) पुली की मदद से इस रस्सी पर सरकती है। हम चार-पाँच बच्चे एक साथ ट्रॉली में बैठ जाते हैं और पहुँच जाते हैं नदी के उस पार!

करके देखो

चित्र 1 और 2 को देखो। बच्चे कुँए से बाल्टी खींच रहे हैं। क्या दोनों चित्रों में अंतर बता सकते हो? इन दोनों में से किस तरह से खींचना आसान होगा—पुली (घिरनी) के साथ या बिना पुली के?

1

2

- अपने आस-पास देखो। तुम कहाँ-कहाँ पुली का प्रयोग देखते हो? उनकी सूची बनाओ।
- तुम भी चरखी या खाली धागे की रील से पुली बनाकर कुछ सामान उठाने की कोशिश करो।

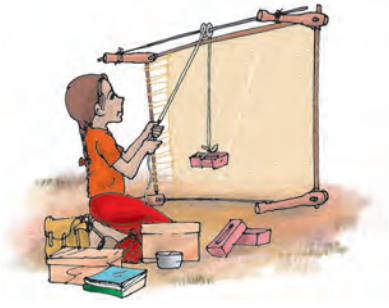

© NCERT not to be republished

सीमेंट का पुल

हमें भी कई बार कई जगह पानी पार करना पड़ता है। तब हम भी पुल से जाते हैं। ये सीमेंट, ईंटों और लोहे के सरियों से बने होते हैं। देखो, पुल पर चढ़ने-उतरने के लिए सीढ़ियाँ भी हैं।

- यह पुल बाँस के बने पुल से किस तरह अलग है?

- अंदाज़ा लगाओ, इस पुल को एक समय पर कितने लोग पार कर सकते हैं?

तुमने देखा कि कैसे बच्चे अलग-अलग पुलों की मदद से ऊबड़-खाबड़ रास्ते और नदियों को पार करके स्कूल पहुँचते हैं।

- अगर तुम्हें मौका मिले, तो तुम कौन-से पुल से जाना चाहोगे? क्यों?

- स्कूल जाने के लिए क्या तुम भी कोई पुल पार करते हो? वह पुल कैसा दिखाई देता है? उसका चित्र बनाओ।

- अपने दादा-दादी से पता करो कि उनके बचपन के समय में पुल कैसे होते थे?

© NCERT not to be republished

अपने आस-पास किसी पुल या पुलिया को देखो और उसके बारे में कुछ बातें पता करो–

- वह कहाँ बना है–पानी पर, सड़क पर, पहाड़ों के बीच या कहीं और?
- पुल को कौन-कौन पार करता है? लोग ही जाते हैं या जानवर और गाड़ियाँ भी?
- क्या वह पुल पुराना-सा लगता है या नया?
- पता करो कि वह पुल किन-किन चीज़ों से बना है? उन चीज़ों की सूची बनाओ।
- उस पुल का चित्र कॉपी में बनाओ। पुल पर चलती ट्रेन, गाड़ियाँ, जानवर और लोग दिखाना मत भूलना।
- सोचो, अगर वह पुल नहीं होता, तो क्या-क्या परेशानियाँ होतीं?

कुछ अन्य तरीके देखें, जिनसे बच्चे स्कूल पहुँचते हैं।

वल्लम

केरल के कुछ भागों में बच्चे पानी को पार करने के लिए वल्लम (लकड़ी की बनी छोटी नाव) में बैठकर स्कूल तक पहुँचते हैं।

केरल

© NCERT not to be republished

- क्या तुमने किसी और तरह की नाव देखी है?
- पानी पार करने के और क्या तरीके हो सकते हैं?

ऊँट-गाड़ी

हम रेगिस्तान में रहते हैं। हमारे यहाँ दूर-दूर तक रेत ही रेत नज़र आती है। दिन में तो रेत खूब तपती है। हम ऊँट-गाड़ी में बैठकर स्कूल पहुँचते हैं।

- क्या तुम भी कभी ऊँट-गाड़ी या ताँगे पर बैठे हो? कहाँ? खुद चढ़े थे या किसी ने बिठाया था?

- तुम्हें उस गाड़ी पर बैठकर कैसा लगा? अपना अनुभव कक्षा में बताओ।

बैलगाड़ी

हम बैलगाड़ी पर बैठकर हरे-भरे खेतों में से धीरे-धीरे निकलते हुए स्कूल पहुँचते हैं। तेज़ धूप या बारिश हो तो हम अपनी छतरियाँ खोल लेते हैं।

अध्यापक के लिए—जानवरों को गाड़ी खींचते समय कैसा महसूस होगा? जानवरों के प्रति संवेदनशीलता पर चर्चा करें।

© NCERT not to be republished

- क्या तुम्हारे यहाँ भी बैलगाड़ियाँ होती हैं?

- क्या उसमें छत होती है?

- उसके पहिये कैसे होते हैं?

- बैलगाड़ी का चित्र कॉपी में बनाओ।

साइकिल की सवारी

हम लंबे रास्तों पर साइकिल चलाकर स्कूल जाते हैं। पहले तो, स्कूल दूर होने के कारण कई लड़कियाँ स्कूल जा ही नहीं पाती थीं, पर अब सात-आठ लड़कियों की टोली मुश्किल रास्तों को भी पार कर जाती है।

- तुम्हारे स्कूल में कितने बच्चे साइकिल से आते हैं?

- क्या तुम्हें साइकिल चलानी आती है? यदि हाँ, तो किससे सीखी?

© NCERT not to be republished

जंगल से जाते बच्चे

स्कूल पहुँचने के लिए हमें घने जंगल से निकलना पड़ता है। कहीं-कहीं जंगल इतना घना होता है कि दिन में भी रात जैसा लगता है। उस सन्नाटे में कई पक्षियों और जानवरों की आवाज़ें सुनाई देतीं हैं।

- क्या तुम कभी घने जंगल या ऐसी किसी जगह से गुज़रे हो? कहाँ?

- अपने अनुभवों के बारे में कॉपी में लिखो।
- क्या तुम कुछ पक्षियों को उनकी आवाज़ों से पहचान सकते हो? कितनों की आवाज़ खुद निकाल सकते हो? आवाज़ निकालो।

not to be republished

बर्फ़ पर चलते बच्चे

देखो हम कैसे
स्कूल पहुँचते
हैं—मीलों फैली
बर्फ़ पर चलकर।
हम हाथ
पकड़-पकड़ कर,
बर्फ़ पर पैर जमाते
हुए ध्यान से चलते
हैं। ताज़ी बर्फ़ में
पैर धँस जाते हैं।
अगर बर्फ़ जमी हुई
हो, तो फिसल भी
सकते हैं।

उत्तर की पहाड़ियाँ

- क्या तुमने इतनी ज़्यादा बर्फ़ देखी है? कहाँ? फ़िल्मों में या कहीं और?

- क्या ऐसी जगहों पर हमेशा ही बर्फ़ रहती है? क्यों?

© NCERT not to be republished

ऊबड़-खाबड़ पथरीले रास्ते

हम पहाड़ी इलाकों में रहते हैं। यहाँ दूर-दूर तक ऊबड़-खाबड़ पथरीले रास्ते हैं। मैदानों या शहर में रहने वाले बच्चों को भले ही मुश्किल लगे, हम तो भागते हुए पहाड़ी रास्ते पार कर जाते हैं।

चाहे घने जंगल हों, खेत हों, पहाड़ हों या फिर दूर-दूर तक फैली बर्फ़। हम बच्चे स्कूल पहुँच ही जाते हैं।

- क्या स्कूल पहुँचने में तुम्हें भी कोई परेशानी होती है?

- तुम्हें किस महीने में स्कूल जाना सबसे अच्छा लगता है? क्यों?

तो फिर मेरी चाल देखना!

- मैदान में या स्कूल में किसी खुली जगह पर सब बच्चे इकट्ठे हो जाओ। अब नीचे दी गई स्थितियों में तुम कैसे चलोगे, करके दिखाओ।
  - अगर ज़मीन एकदम गुलाब की पंखुड़ियों जैसी हो।
  - अगर ज़मीन काँटों-भरे मैदान में बदल गई हो और आस-पास ऊँची-ऊँची घास हो।
  - अगर ज़मीन ठंडी-ठंडी बर्फ़ से ढँक गई हो।

क्या हर बार तुम्हारी चाल बदली? चर्चा करो।

अध्यापक के लिए–स्कूल पहुँचने के लिए बच्चों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले विभिन्न साधनों पर चर्चा करें। सम्भावित खतरों को पहचानने व सुरक्षा पक्षों पर चर्चा करें। पर्यावरण को नुकसान न पहुँचाने वाले यातायात के साधनों पर चर्चा कर सकते हैं।

© NCERT not to be republished

बताओ

- क्या तुम्हारे स्कूल में भी सज़ा मिलती है? किस तरह की सज़ा मिलती है??
- तुम क्या सोचते हो स्कूल में सज़ा होनी चाहिए?
  यदि तुम्हारा ऐसी किसी घटना से सामना हो तो तुम किसे बताओगे?
- कैसे शिकायत दर्ज करोगे?
- क्या सज़ा देना ही गलत काम के सुधार का तरीका है? स्कूल के लिए ऐसे नियम बनाओ, जिनसे बिना सज़ा के स्कूल में सुधार हो।

- अपने 'सपनों के स्कूल' का चित्र कॉपी में बनाओ और कक्षा में उस पर अपने साथियों से बात-चीत करो।

अध्यापक के लिए–पाठ में इस तरह का संदर्भ देने का उद्देश्य स्कूलों में सज़ा देने की प्रवृत्ति को रोकना है। कक्षा में इस मुद्दे पर संवेदनशीलता से बातचीत करें। बच्चों को आत्म-अनुशासन के लिए प्रोत्साहित करें।

© NCERT not to be republished

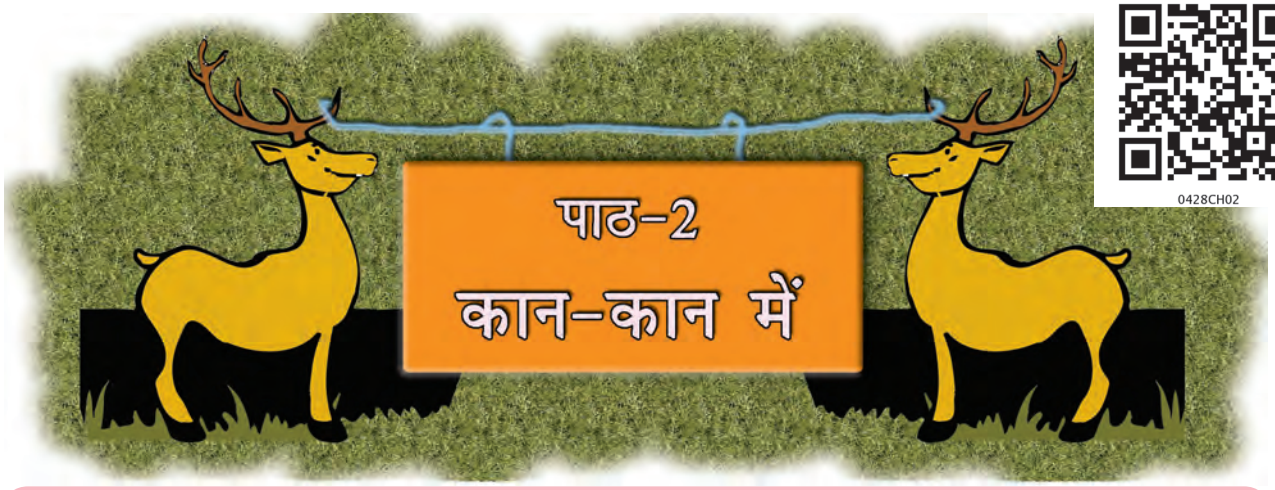

0428CH02

मेरे कान किसके पास हैं?

क्या ये चित्र अज़ीब लग रहे हैं? चित्र बनाने वाले ने जानवरों के कान उलट-पुलट कर दिए हैं। कान को सही जानवर के साथ जोड़ो। नीचे लिखो, किस जानवर के सिर पर किसके कान हैं।

जानवर	कान	जानवर	कान
हाथी	चूहा	कुत्ता	
खरगोश		भैंस	
चूहा		हिरन	
जिराफ़			

© NCERT not to be republished

अलग-अलग जानवरों के कान अलग-अलग तरह के होते हैं। सूची में दिए गए जानवरों में से किन के कान तुम बाहर देख पाते हो और किनके नहीं? उनके नाम तालिका में लिखो।

हिरन	मेंढक	मछली	चींटी	कौआ
चीता	चिड़िया	भैंस	साँप	छिपकली
सूअर	बत्तख	जिराफ़	हाथी	बिल्ली

जानवर जिनके कान बाहर दिखाई देते हैं	जानवर जिनके कान बाहर दिखाई नहीं देते हैं

तुम्हें क्या लगता है—जिन जानवरों के कान बाहर दिखाई नहीं देते, उनके कान होते भी हैं या नहीं?

आओ पता करें

पहले उपर दिए चित्र को देखो। पहचान कर लिखो, ये जानवर कौन-कौन से हैं। क्या तुम्हें इन जानवरों के कान दिखाई दे रहे हैं?

वास्तव में इन सभी के कान होते हैं, लेकिन हमें बाहर से दिखाई नहीं देते।

© NCERT not to be republished

- ऐसे कुछ और जानवरों के बारे में पता करो, जिनके कान बाहर दिखाई नहीं देते। उनके नाम लिखो।

पढ़ो और लिखो

ऐसे जानवरों के नाम लिखो जिनके कान हों–

- पंखे जैसे
- पत्ते की तरह
- सिर के ऊपर
- सिर के दोनों तरफ़

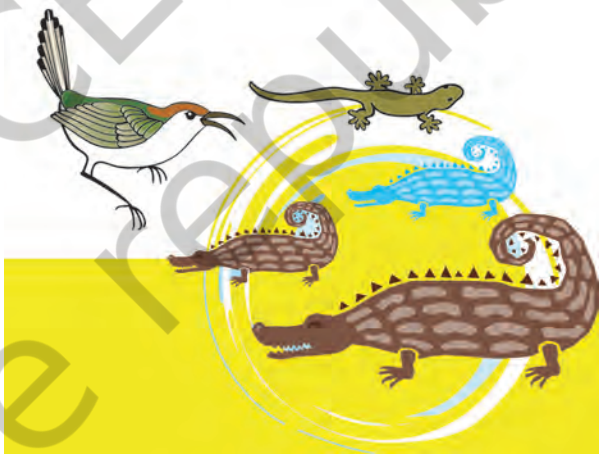

तुम्हें पता है न कि कान सुनने में मदद करते हैं? कुछ जानवरों के कान बाहर दिखते हैं और कुछ के नहीं। पक्षियों के कान दिखते नहीं हैं, लेकिन उनके सिर के दोनों तरफ़ छोटे-छोटे छेद होते हैं। ये पंखों से ढँके रहते हैं। इन्हीं छेदों की मदद से पक्षी सुनते हैं।

अगर तुम ध्यान से देखोगे, तो छिपकली के भी छोटे छेद जैसे कान दिखाई देंगे।

मगरमच्छ के भी छोटे छेद जैसे कान होते हैं, लेकिन आसानी से दिखाई नहीं देते।

किसकी त्वचा

अभी तुमने कुछ जानवरों की पहचान की, उनके कानों से। अब कुछ जानवरों को उनकी खाल से पहचानने की कोशिश करो।

© NCERT not to be republished

चित्र में कुछ जानवर एवं उनकी खाल बनीं हैं। हर जानवर का उसकी अपनी खाल से मिलान करो। जानवरों के चित्रों में उनके शरीर पर खाल के डिज़ाइन भी बनाओ।

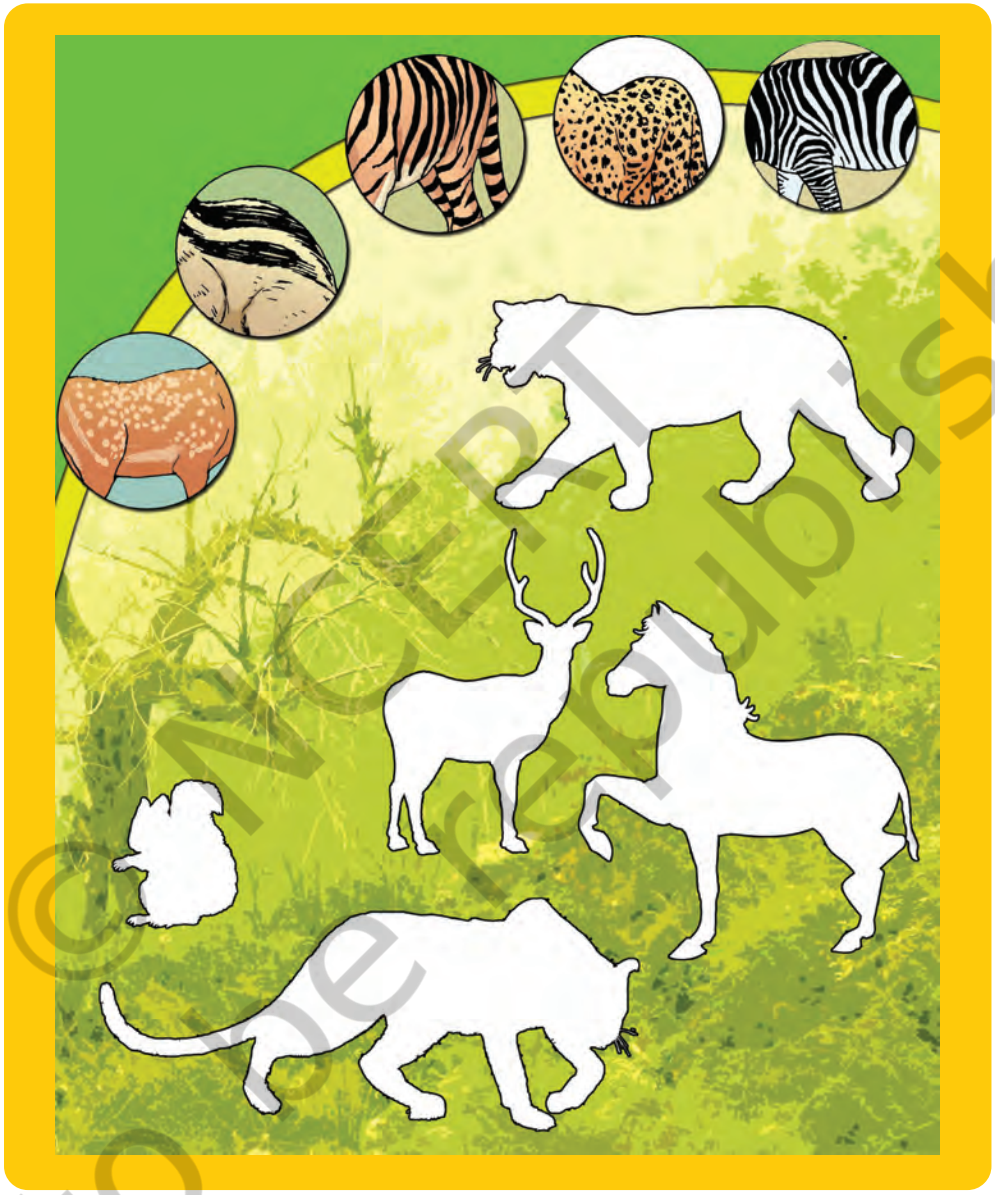

जानवरों की खाल पर डिज़ाइन उनके शरीर पर बाल होने के कारण होते हैं।

क्या तुमने कभी ऐसे जानवर देखें हैं, जिनके बाल हट गए या हटा दिए गए हों? सोचो, अगर उनकी खाल से बाल हटा दिए जाएँ, तो जानवर कैसे दिखाई देंगे। न रहेगा रंग और न ही डिज़ाइन!

© NCERT not to be republished

नीचे कुछ जानवरों के नाम लिखे हैं। इनमें से कुछ को तुमने शायद देखा भी हो।

लोमड़ी	हाथी	चिड़िया	कबूतर
मेंढक	कौआ	मोर	सूअर
चूहा	बिल्ली	भैंस	बत्तख
मुर्गी	ऊँट	छिपकली	गाय

इस सूची में, सही जानवर के नाम छाँटकर लिखो, जिनके–

कान बाहर दिखाई देते हैं	खाल पर बाल हैं	कान बाहर दिखाई नहीं देते	खाल पर पंख हैं

तुमने भैंस और गाय को कौन-कौन सी सूची में डाला है? दूर से देखने पर क्या इनकी खाल पर बाल दिखते हैं? अगर हो सके तो पास से देखो। क्या खाल पर बाल दिखाई दिए?

अगर हाथी मिल जाए तो क्या तुम्हें उसकी खाल पर हाथ फेरने की हिम्मत होगी? क्या तुम जानते हो कि हाथी की खाल पर भी बाल होते हैं।

जिन जानवरों के नाम तुमने ऊपर तालिका में लिखे हैं, अब उनके बारे में और बातें जानें।

अध्यापक के लिए– पाठ में आए जानवरों के बारे में और जानकारी पर बातचीत करें, जैसे उनका भोजन, रहने की जगह आदि। जानवरों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने के मौके दें।

© NCERT not to be republished

पता लगाओ, इनमें से कौन-से जानवर अंडे देते हैं। अंडे देने वाले जानवरों के नाम हरे बॉक्स में लिखो।

बच्चे देने वाले जानवरों के नाम लाल बॉक्स में लिखो।

अब हरे बॉक्स में लिखे गए जानवरों के नामों को पिछली तालिका में ढूँढ़ो और उनके नीचे रेखा खींचो। उसी तालिका में लाल बॉक्स के जानवरों के नामों पर गोला लगाओ। तो क्या देखा तुमने? "जिन जानवरों के कान बाहर दिखाई देते हैं, उनके शरीर पर बाल होते हैं और वे बच्चे देते हैं"। जिन जानवरों के कान बाहर दिखाई नहीं देते, उनके शरीर पर बाल नहीं होते हैं और वे अंडे देते हैं।

© NCERT not to be republished

- क्या तुमने अपने घर में या आस-पास ऐसे जानवर को देखा है, जिसने बच्चे दिए हैं? उनके नाम अपनी कॉपी में लिखो।
- क्या तुम्हारे घर में या आस-पास किसी ने जानवर पाला है?
- किसी एक पालतू जानवर के बारे में कुछ बातें पता करो–
  - वह कौन-सा जानवर है?
  - क्या उसका कोई नाम है? उसका नाम लिखो।
  - उस जानवर का नाम किसने रखा?
  - उसे क्या-क्या खाना पसंद है?
  - उसे दिन में कितनी बार खाना देते हैं?
  - उसके सोने का समय क्या है? वह कितनी देर सोता है?
  - क्या उसका खास तरह से ध्यान रखा जाता है? कैसे?
  - क्या उसे गुस्सा आता है? कब? तुम्हें कैसे पता चलता है कि वह गुस्सा है?

© NCERT not to be republished

- उसके शरीर पर बाल हैं या पंख?
- उसके कान दिखाई देते हैं या नहीं?
- क्या वह बच्चा है या बड़ा?
- वह जानवर बच्चे देता है या अंडे?
- क्या उसके बच्चे हैं?
- उस जानवर का चित्र बनाओ और उसमें रंग भरो। उसका अपनी पसंद से प्यारा-सा नाम रखो।

© NCERT not to be republished

इस चित्र के जिन भागों में सम संख्याएँ (2, 4, 6, 8...) लिखी हैं, उनमें रंग भरो। रंग भरने के बाद क्या उभरकर आया? पहचानो और उस जानवर का नाम लिखो।

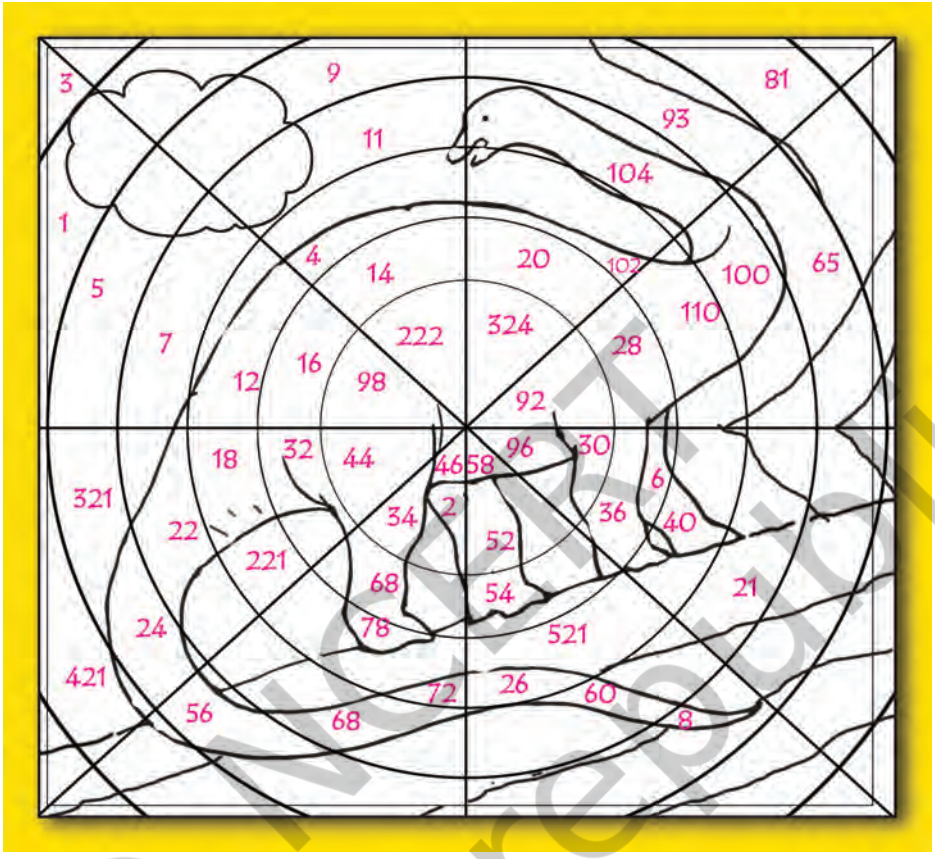

बहुत, बहुत साल पहले धरती पर डायनासोर थे, लेकिन अब नहीं। अब ये सिर्फ़ फ़िल्मों, फ़ोटो और पुस्तकों में ही मिलते हैं। डायनासोर के बारे में और बातें पता करो। अपने दोस्तों को बताओ।

क्या तुमने इससे मिलता-जुलता कोई जानवर कहीं देखा है? उसका नाम पता करो और लिखो।

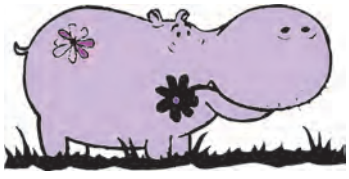

इसके बारे में कुछ और बातें अपने बड़ों से पता करो।

अध्यापक के लिए–डायनासोर से मिलते-जुलते जानवरों के नाम बच्चों की समझ के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं। उन्हें सोचने का मौका दें, हर तरह के ऐसे उत्तरों को सही मानें। इस तरह के और चित्र बनाकर कार्य-कलाप करवाएँ जा सकते हैं।

© NCERT not to be republished

- इस जानवर को देखो। इसका नाम लिखो। क्या तुम जानते हो, यह हमारा राष्ट्रीय पशु है?
- यह कहाँ रहता है?

दुनिया में इस जानवर की संख्या कम होती जा रही है। चर्चा करो, क्यों?

अपना पक्षी बनाओ

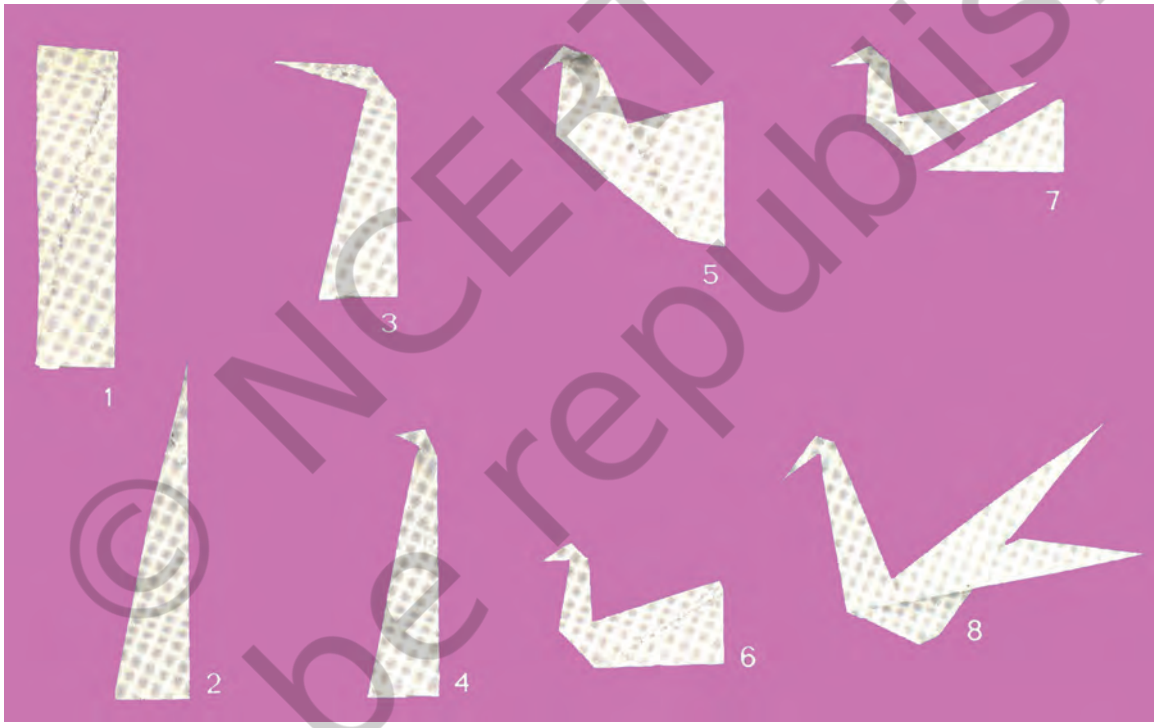

अध्यापक के लिए—कागज़ का पक्षी बनाने के लिए, कागज़ दोनों तरफ़ से अलग-अलग रंग का हो, तो पक्षी सुंदर बनेगा।

© NCERT not to be republished

0428CH03

पाठ-3
नन्दू हाथी

यह है नन्दू!

नन्दू नींद से जागा और उसने अपनी आँखें खोलीं। कुछ देर के लिए उसे पता ही नहीं चला कि वह कहाँ है। उसे लगा कि वह स्लेटी-भूरे पेड़ों के एक बड़े से जंगल में है। उसने अपनी आँखें घुमाईं, फिर उसे कुछ जाना-पहचाना सा लगा। ओह! ये तो अम्मा हैं।

जिसे वह भूरा-स्लेटी जंगल समझ रहा था, वह उसके परिवार के साथियों के पैर और सूँड थीं।

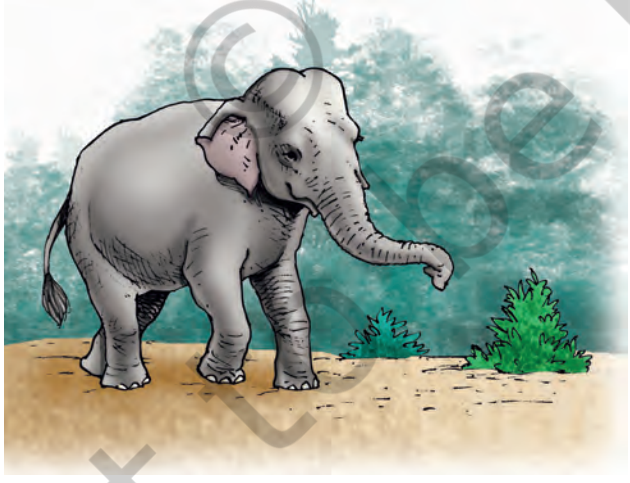

सूरज आसमान में चमक रहा है। उसकी गरमी अब तेज़ होने लगी है। नानी-माँ ज़ोर से चिंघाड़ी। वे इस झुंड में सबसे बड़ी हैं। वे जंगल की तरफ़ चल दीं। बाकी सभी हथिनियों ने नानी-माँ को जंगल की तरफ़ जाते देखा, तो वे सब भी उनके पीछे चल दीं, और नन्दू भी।

अध्यापक के लिए–नानी-माँ, माँ की माँ। बच्चों से पूछें कि वे अपनी माँ की माँ को क्या कहते हैं।

© NCERT not to be republished

जंगल पहुँचते ही यह झुंड बिखर गया। वे सभी अपने मनपसंद पत्तों और झाड़ियों को खाने के लिए अलग-अलग हो गए। कुछ देर खाने के बाद सभी नदी की तरफ़ चलने लगे। सब बच्चे पानी में खेलने लगे, कुछ बड़ी हथिनियाँ नदी किनारे मिट्टी में लेट गईं।

क्या तुम जानते हो– एक बड़ा हाथी एक दिन में 100 किलोग्राम से ज़्यादा पत्ते और झाड़ियाँ खा लेता है? हाथी बहुत कम आराम करता है। यह एक दिन में केवल दो-से-चार घंटे ही सोता है। हाथी को पानी और कीचड़ से खेलना बहुत भाता है। इससे उसके शरीर को ठंडक मिलती है। वैसे उसके कान भी पंखे की तरह होते हैं। गरमी लगने पर हाथी अपने कान हिलाकर हवा करता है।

पता करो

- नन्दू तो सिर्फ़ तीन महीने का है, लेकिन उसका वज़न 200 किलोग्राम है। तुम्हारा वज़न कितना है?

- तुम्हारी उम्र के कितने बच्चों का वज़न मिलाकर नन्दू के वज़न के बराबर होगा?

© NCERT not to be republished

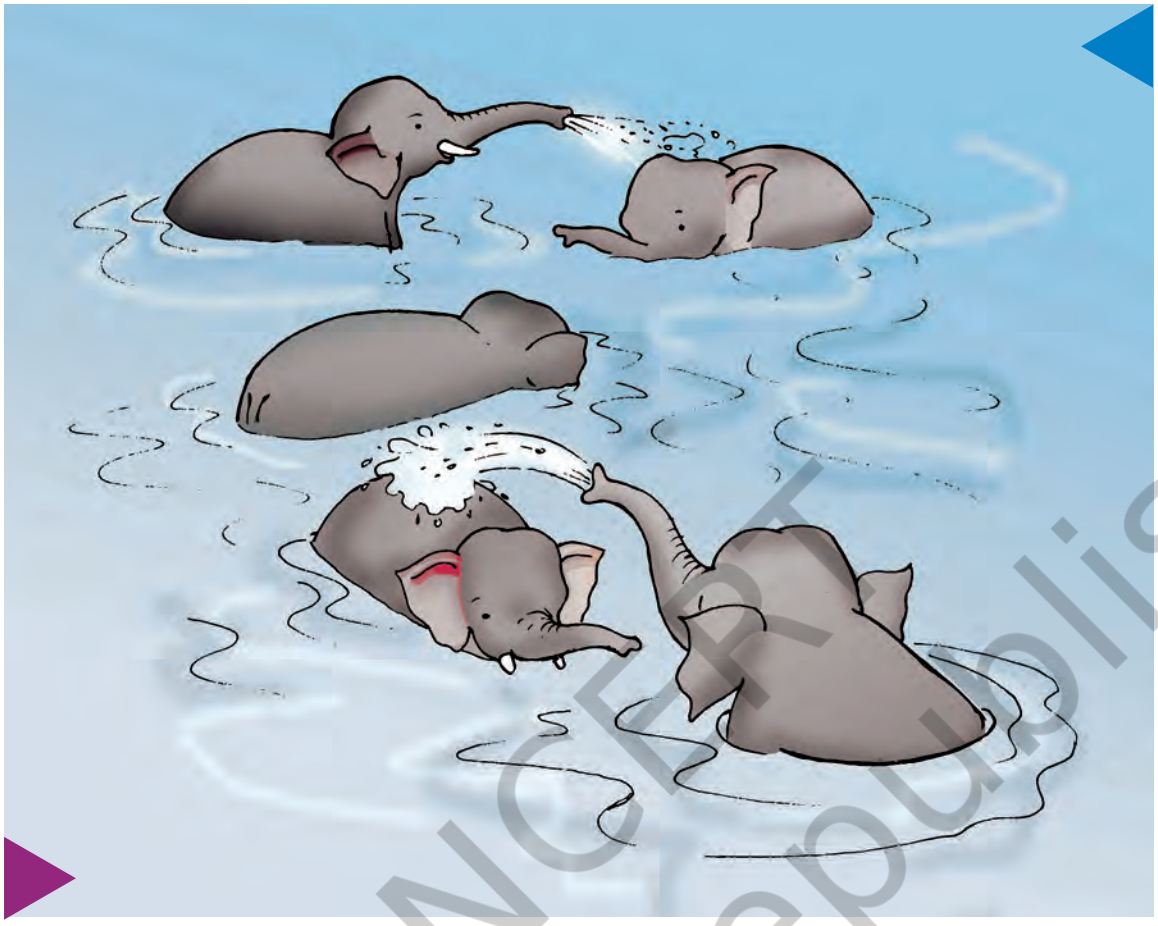

खेल-खेल में

नन्दू ने अपने साथियों को एक-दूसरे की पूँछ खींचते हुए देखा। उसने सोचा, "मैं बहुत छोटा हूँ। कहीं ये सब मेरे ऊपर न गिर जाएँ।" वह उनके पास नहीं गया और धीरे से अपनी अम्मा के पास जाकर खड़ा हो गया।

अम्मा ने नन्दू को पानी की तरफ़ धकेला, मानो उसे पानी में खेलने के लिए कह रही हो। नन्दू धीरे से पानी की तरफ़ चल दिया। उसे तो पानी के साथ खेलना बहुत पसंद था। उसके दोस्त भी पानी में ही थे। पानी के पास पहुँचते ही, पानी का एक फ़व्वारा नन्दू के सिर पर गिरा। नन्दू पूरा भीग गया। उसने देखा, यह उसके दोस्तों की शरारत थी। वह मुस्कराकर पानी से खेलने लगा।

© NCERT not to be republished

सूरज डूबने से पहले ही झुंड फिर से जंगल की तरफ़ चल दिया। जंगल में पहुँचते-पहुँचते नन्दू बहुत थक गया। वह दूध पीते-पीते अपनी अम्मा के पैरों के बीच में सो गया।

तुमने पढ़ा कि नन्दू हाथी अपने झुंड के साथ रहता है। हाथियों के झुंड में केवल हथिनियाँ और बच्चे ही रहते हैं। झुंड की सबसे बुज़ुर्ग हथिनी ही पूरे झुंड की नेता होती है। एक झुंड में 10 से 12 हथिनियाँ और बच्चे होते हैं। हाथी 14-15 साल तक ही इस झुंड में रहते हैं। फिर वे झुंड छोड़ देते हैं और अकेले रहते हैं। नन्दू भी जब 14-15 साल का हो जाएगा, तो वह अपना झुंड छोड़ देगा।

हाथी की तरह ही और भी कुछ जानवर समूह में एक साथ रहते हैं। जानवरों के ऐसे समूह को झुंड कहते हैं। झुंड में रहने वाले जानवर मिल-जुलकर सभी काम करते हैं, जैसे खाने की तलाश में घूमना, खेलना और नहाना।

- अगर तुम नन्दू होते और झुंड में रहते तो क्या-क्या करते?

- हाथियों के झुंड में सभी फ़ैसले सबसे बुज़ुर्ग हथिनी लेती है। तुम्हारे परिवार में घर के फ़ैसले कौन लेता है?

- हाथियों के झुंड का एक कोलाज बनाओ। इसके लिए तुम हाथियों के जितने चित्र इकट्ठा कर सकते हो, करो। अब उन्हें काटकर अपनी कॉपी में चिपकाओ।

© NCERT not to be republished

- नन्दू वह सब करता था, जो उसे पसंद था। यदि तुम्हें अपने दोस्तों के साथ घूमने के लिए पूरा एक दिन मिले, तो तुम उस दिन क्या-क्या करोगे?
  -
  -
  -
  -
  -

- पता करो और लिखो, कौन-कौन से जानवर झुंड में रहते हैं।

- क्या तुम भी समूह में रहते हो? तुम्हें समूह में रहना कैसा लगता है? तुम्हारे हिसाब से समूह में रहने के फ़ायदे और नुकसान क्या-क्या हो सकते हैं?

फ़ायदे	नुकसान

- हाथी को चैन से बंधे होने पर कैसा महसूस होता होगा? अपनी भावना बताएं तथा चर्चा करें।

© NCERT not to be republished

- क्या तुमने कभी हाथी पर सवारी की है? कैसा लगा?

- तुम कौन-कौन से जानवरों पर बैठे हो? उनके नाम लिखो।

- तुमने अपने आस-पास, फ़िल्मों या किताबों में कई जानवरों को देखा होगा। अकेले और झुंड में देखे गए जानवरों में से, किसी एक के बारे में पता करके कुछ बातें लिखो।

© NCERT not to be republished

सोचो और लिखो

बगुला भैंस पर क्यों बैठा होगा?

- क्या तुमने किसी जानवर को दूसरे जानवर पर सवारी करते देखा है? उसका नाम लिखो।
  - सवार जानवर
  - सवारी देता जानवर
- ऐसे और जानवरों के नाम लिखो, जिन्हें हम सवारी के काम में लाते हैं।
- ऐसे जानवरों के नाम लिखो, जिन्हें हम सामान ढोने के काम में लाते हैं।

तुम्हारा अपना हाथी बनाओ

- अगले पृष्ठ पर दिए गए हाथी के चित्र को बड़ा करके एक मोटे कागज़ पर बनाओ। उसे अब बाहरी रेखा पर से काटो।
  - अब चित्र में जहाँ 'काटो' लिखा है, वहाँ पर थोड़ा-सा काटो। ध्यान रहे– काट कर अलग मत करना।
  - जहाँ 'मोड़ो' लिखा है, वहाँ से बिंदु वाली रेखा (.....) पर से मोड़ लो।
  - धारी वाले हिस्से को (//////)अंदर की ओर मोड़ दो।

© NCERT not to be republished

- अब पूँछ बनाकर चिपका दो।

बन गया न हाथी!

- इसे अपनी पसंद के रंगों से और अलग-अलग तरह से सजाओ।
- इस हाथी को अपनी कक्षा में लटकाओ। अपने साथियों के बनाए हुए हाथी भी देखो।

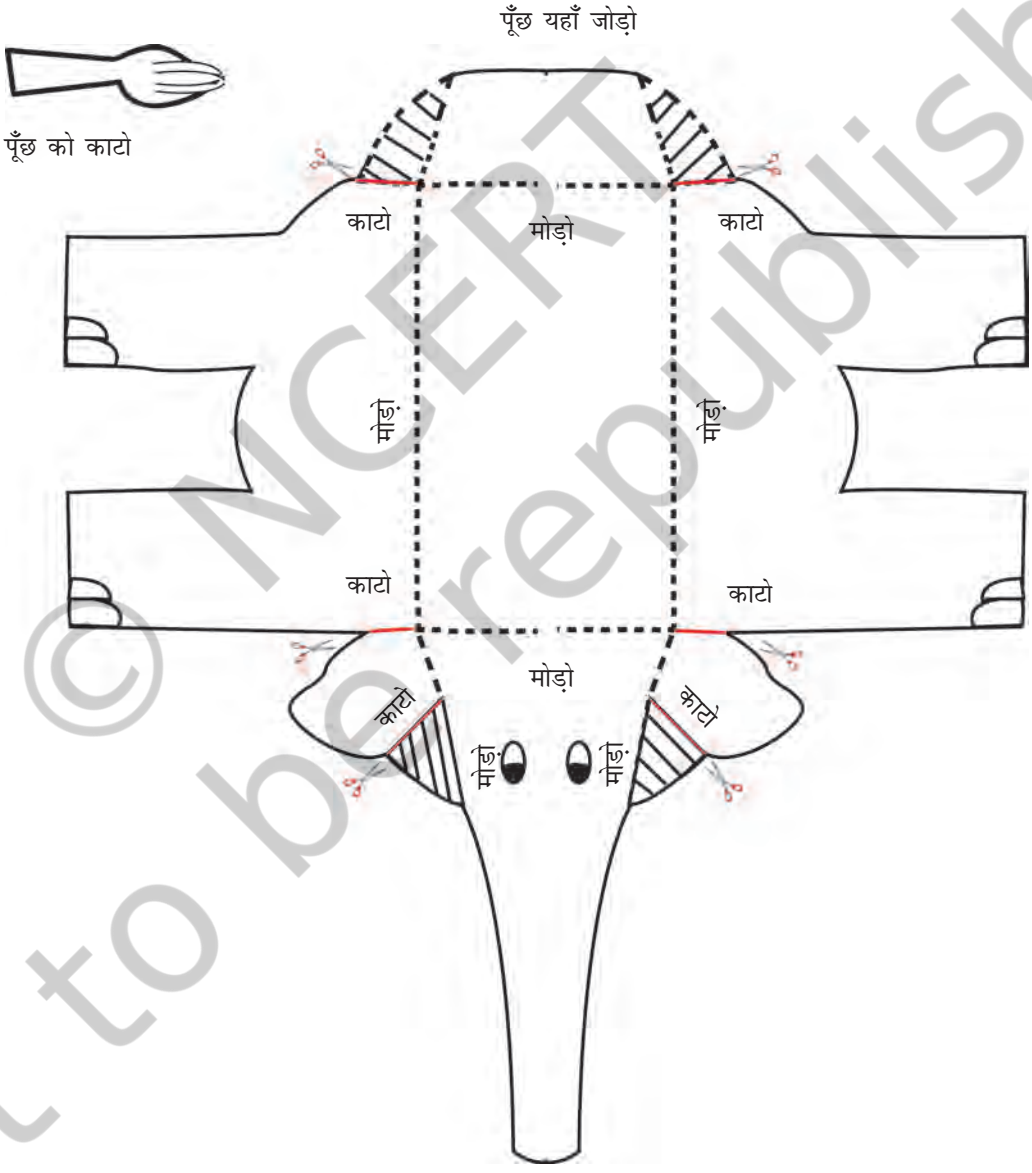

© NCERT not to be republished

जानवरों की सभा

इन चित्रों को देखो और पढ़ो–ये जानवर आपस में क्या-क्या कह रहे हैं। इन पर संवेदनशीलता से चर्चा करें।

© NCERT not to be republished

चर्चा करो

- तुमने इन जानवरों की बातें पढ़ीं। तुम्हें क्या लगता है, इनमें से कुछ उदास क्यों हैं?
- पेड़ों पर झूमते और लटकते बंदरों और मदारी के बंदर में तुम्हें क्या अंतर लगता है?

इस हाथी के कितने पैर?

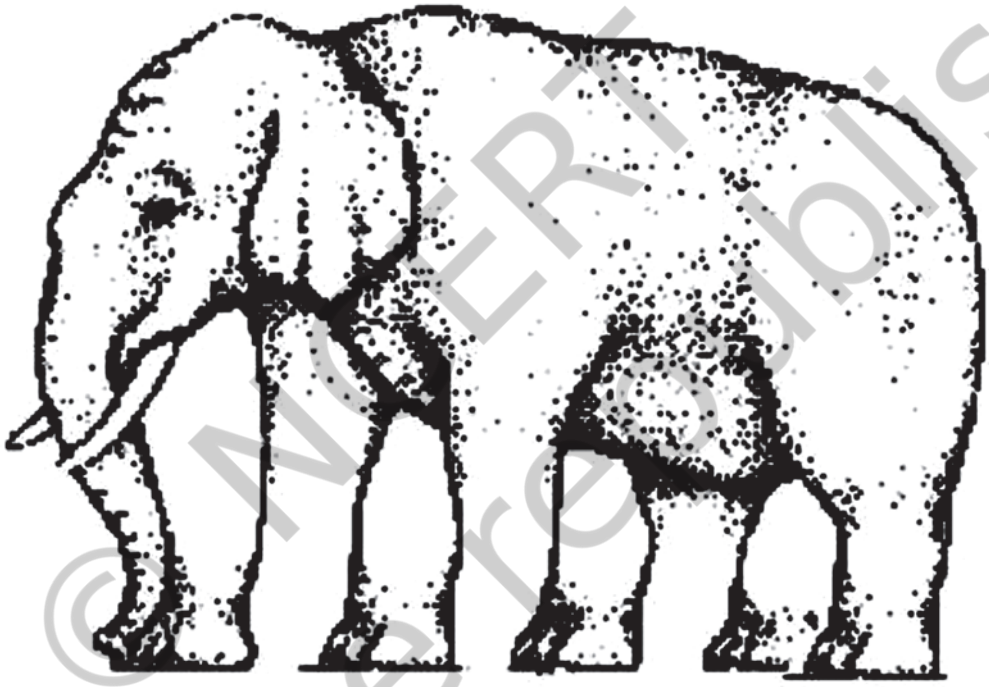

क्या आप जानते हो- हाथी परेशानी आने पर एक-दूसरे की (अपने साथियों की) मदद करते हैं। अपने बच्चों की देखभाल और सुरक्षा के लिए एक-दूसरे का साथ देते हैं।

© NCERT not to be republished

पाठ–4

अमृता की कहानी

0428CH04

यह बात बहुत पुरानी है, करीब तीन सौ साल पुरानी! और हाँ, यह किस्सा सच्चा है! अमृता राजस्थान में जोधपुर के पास खेजड़ली गाँव की रहने वाली थी। जानते हो – उस गाँव का नाम खेजड़ली क्यों था? उसके गाँव में खेजड़ी के बहुत से पेड़ थे।

गाँव के सभी लोग पेड़-पौधों और जानवरों का बहुत ध्यान रखते थे। गाँव में बकरियाँ, हिरन, खरगोश, मोर और न जाने कितने जानवर बिना किसी डर के घूमते थे। गाँव वालों को बुज़ुर्गों की कही बातें आज भी याद थीं। उन का कहना था कि "अगर पेड़ हैं, तो हम हैं। पेड़ और जानवर हमारे बिना रह सकते हैं, पर हम उनके बिना नहीं।"

अध्यापक के लिए–बच्चों को भारत के नक्शे में राजस्थान ढूँढ़ने के लिए प्रेरित करें।

© NCERT not to be republished

अमृता के दोस्त

अमृता सुबह-सुबह उठकर अपने सारे दोस्त-पेड़ों से खुशी से मिलती थी। अमृता के लिए रोज़ उनमें से एक पेड़ उस दिन के लिए खास होता था। वह उस पेड़ से लिपटकर उसके कान में धीरे-से कहती, "दोस्त! तुम सुंदर और ताकतवर हो। तुम ही हो, जो हम सब का ध्यान रखते हो। इसके लिए धन्यवाद। मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ। तुम अपनी शक्ति मुझे भी दो।"

अमृता की तरह गाँव के दूसरे बच्चों की भी पेड़ों से दोस्ती थी। वे घंटों पेड़ों की छाया में खेलते थे।

- क्या तुम्हारे घर के आस-पास किसी मैदान या स्कूल के रास्ते में, कोई ऐसी जगह है जहाँ पेड़ लगाए गए हैं?
  - उन्हें वहाँ क्यों लगाया गया है?

© NCERT not to be republished

- क्या तुमने किसी को उनकी देखभाल करते देखा है? किसको?

- क्या उनमें से किसी पेड़ पर फल लगते हैं? उन्हें कौन खाता है?

- ललिता को लगता है कि उसके स्कूल की दीवार के साथ उगे हुए छोटे-छोटे पौधे और घास किसी ने लगाए नहीं हैं। क्या तुम भी किसी ऐसी जगह के बारे में जानते हो जहाँ घास, छोटे-छोटे पौधे और पेड़ अपने-आप ही उग गए हों?

- तुम्हें यह क्यों लगता है कि ये पौधे अपने-आप उग रहे हैं?

पेड़ खतरे में

समय बीतता गया। अमृता बड़ी हो गई। एक दिन वह अपने पेड़ों से मिल रही थी। तभी उसने देखा कि गाँव में कुछ अनजान लोग कुल्हाड़ी लेकर खड़े हैं। पूछने पर पता चला कि वे राजा के आदमी थे। राजा के कहने पर वे लकड़ी के लिए पेड़ काटने आए थे। लकड़ी राजा के महल के लिए चाहिए थी।

© NCERT not to be republished

यह सुनते ही अमृता के होश उड़ गए। उन आदमियों ने जिस पेड़ को काटने के लिए चुना, अमृता उस पेड़ से लिपट गई। उन लोगों के डराने-धमकाने पर भी वह नहीं हटी। राजा के आदमियों को राजा की बात तो माननी थी, वरना उनकी अपनी जान चली जाती। उनकी कुल्हाड़ी के एक ही वार से अमृता के पैरों से खून बहने लगा और वह गिर गई, लेकिन उसने पेड़ को नहीं छोड़ा। अमृता को देखकर उसकी बेटियों और गाँव के तीन सौ से भी ज़्यादा लोगों ने पेड़ों से लिपटकर अपनी जान दे दी।

जब राजा को इस बात का पता चला, तो उन्हें यह बात समझ नहीं आई कि लोग पेड़ों के लिए अपनी जान भी दे सकते हैं। वे खुद वहाँ आए और स्वयं लोगों का पेड़ों के प्रति प्यार देखा।

- तुम्हें याद है न, उस गाँव के बुज़ुर्गों की बातें?
- अगर पेड़ और जानवर नहीं होंगे, तो क्या हम रहेंगे? इस बारे में कक्षा में चर्चा करो।

सुरक्षित गाँव

राजा पर गाँव वालों की बातों का बहुत गहरा असर पड़ा। उसने आदेश दिया कि इस इलाके में कभी कोई पेड़ नहीं काटेगा और न ही कोई शिकार करेगा। आज, तीन सौ साल बाद भी, यहाँ के लोग जो 'बिश्नोई' कहलाते हैं, पेड़ों और जानवरों की रक्षा करते हैं। रेगिस्तान

© NCERT not to be republished

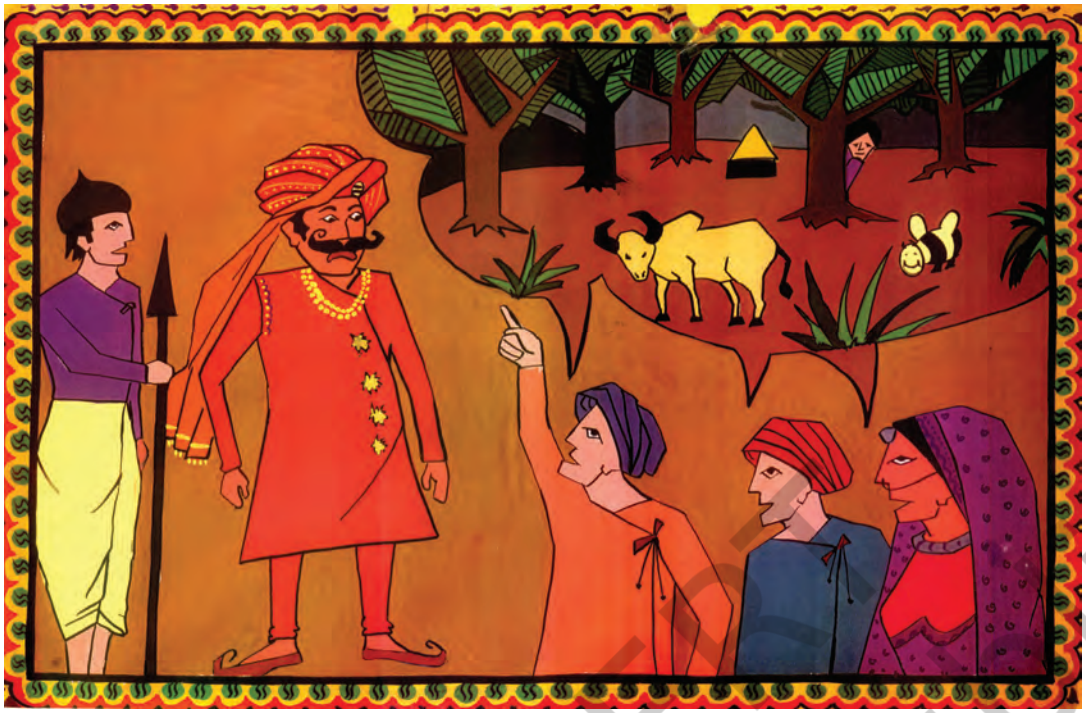

में होते हुए भी यह इलाका आज भी हरा-भरा है। जानवर बिना किसी डर के इधर-उधर घूमते हैं।

- तुमने तीसरी कक्षा में जिस पेड़ से दोस्ती की थी, वह अब कैसा है?
- इस साल एक और नए पेड़ से दोस्ती करो। अपने दोस्त पेड़ों को क्या तुमने साल भर में मौसम के साथ, बदलते देखा है?

किसी एक पेड़ के बारे में लिखो–

- क्या उस पर फूल आते हैं?

- फूल क्या साल भर रहते हैं?

- पत्तियाँ किस महीने में झड़ती हैं?

© NCERT not to be republished

- क्या उस पर फल लगते हैं?

- फल किन-किन महीनों में लगते हैं?

- क्या तुमने कभी ये फल खाए हैं?

कुछ दिनों पहले तुमने टी.वी. या अखबार में देखा या पढ़ा होगा कि फ़िल्म एक्टरों के खिलाफ़ कानूनी कार्यवाही हुई थी।

चर्चा करो

- लोग शिकार क्यों करते हैं?
- क्या तुम्हें पता है कि शिकार करने पर सज़ा होती है? शिकार करने पर सज़ा क्यों रखी गई है?

अपने दादी-दादा से पता करके लिखो कि–

- उनके बचपन में जितनी तरह के पक्षी दिखाई देते थे, क्या उतनी ही तरह के आज भी दिखाई देते हैं?

- कौन-से पक्षी कम हुए हैं?

- ऐसे कौन-से जंतु एवं पक्षी हैं जो अब उनके आस-पास दिखाई नहीं देते?

© NCERT not to be republished

- शांति के दादा जी ने बताया कि जब वे छोटे थे तब बहुत-सी चिड़िया, मैना आदि दिखाई देती थीं। क्या तुम अंदाज़ा लगा सकते हो कि इन पक्षियों की संख्या कम क्यों हो गई है? कोई दो कारण लिखो।

अमृता के गाँव में बहुत सारे खेजड़ी के पेड़ थे। तुम्हारे इलाके में कौन-से पेड़ ज़्यादा पाए जाते हैं? दो के नाम बताओ।

- अपने बड़ों से पता करो कि क्या इन पेड़ों की कोई खास बात है?

खेजड़ी–यह पेड़ रेगिस्तानी इलाके में खूब पाया जाता है। इसे ज़्यादा पानी की ज़रूरत नहीं होती। इस पेड़ की छाल दवा के काम आती है और इसकी लकड़ी को कीड़ा भी नहीं लगता। इस पेड़ की फलियों की सब्ज़ी भी बनाई जाती है। इसकी पत्तियाँ वहाँ पर रहने वाले जानवर खाते हैं। और इसकी छाया में तुम जैसे बहुत से बच्चे खेलते भी हैं।

अध्यापक के लिए–बच्चों को बड़ों से जानवरों और कीड़े-मकौड़ों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें। पर्यावरण में हो रहे बदलावों के कारण पक्षियों की संख्या कम हो रही है। इस पर चर्चा करवाएँ।

© NCERT not to be republished

पाठ–5

अनीता की मधुमक्खियाँ

0428CH05

मेरा नाम अनीता खुशवाहा है। मैं मुज़फ्फरपुर ज़िले के बोचाहा गाँव में रहती हूँ, जो बिहार में है। मेरे घर में माँ, पिताजी और दो छोटे भाई हैं। मैं कॉलेज में पढ़ती हूँ और स्कूल के बच्चों को पढ़ाती हूँ। मैं मधुमक्खी पालने का काम भी करती हूँ।

इतना सब कर पाना मेरे लिए आसान नहीं था। जब मैं छोटी थी, तब मैं दिन भर बकरियाँ चराती थी। मेरा भी स्कूल जाने का मन करता था, पर माँ–पिताजी को लड़कियों का स्कूल जाना पसंद नहीं था।

---

* यह एक सच्ची कहानी है। अनीता खुशवाहा एक 'चमकता सितारा' (गर्ल स्टार) है। 'चमकते सितारे' उन साधारण लड़कियों की असाधारण कहानियाँ हैं, जिन्होंने स्कूल जाकर अपनी ज़िंदगी बदल दी। बच्चों से किताब के अंतिम पृष्ठ पर दिए गए भारत के नक्शे में बिहार ढूँढ़ने को कहें।

© NCERT not to be republished

स्कूल जाना-एक सपना

एक दिन मैंने स्कूल के अंदर झाँककर देख ही लिया। बच्चों को देखकर मैं अपने आपको रोक नहीं पाई और बच्चों की कतार में पीछे जाकर चुपचाप बैठ गई। मुझे बहुत अच्छा लगा। घर जाते ही मैंने हिम्मत करके माँ-पिताजी को स्कूल के बारे में बताया। उन्होंने मुझे स्कूल जाने के लिए बिलकुल मना कर दिया। उस दिन मैं बहुत रोई।

मेरे गाँव की एक टीचर ने माँ-पिताजी को समझाया कि पढ़ाई करना कितना ज़रूरी है। उन्होंने बताया कि आठवीं कक्षा तक की पढ़ाई पर कोई खर्च भी नहीं होता है। पढ़ना तो सब बच्चों का अधिकार है। मुझे पता नहीं कैसे, पर माँ-पिताजी मान गए। मैंने स्कूल जाना शुरू कर दिया। स्कूल में मैं बहुत ज़्यादा नंबर तो नहीं लाती थी, पर टीचर से सवाल बहुत पूछती थी।

- हिसाब लगाओ कि स्कूल की सभी चीज़ों पर एक साल में तुम्हारा कितना खर्चा होता है।

चीज़ें	खर्चा
1. स्कूल आने-जाने में	
2. कॉपियाँ	
3. पेंसिल-पैन	
4. यूनिफ़ॉर्म	
5. बस्ता	
6. खाने का डिब्बा	
7. जूते	
8. इनके अलावा (1)	
(2)	
कुल खर्चा	

© NCERT not to be republished

- तुमने इस साल कितने रुपयों की स्कूल की कापियाँ खरीदी हैं?

- तुम अपने स्कूल की यूनिफ़ॉर्म कैसी चाहते हो? उसका चित्र कॉपी में बनाकर रंग भरो।
- बच्चों के दो समूह बनाओ। 'स्कूल में यूनिफ़ॉर्म होनी चाहिए'–इस बात पर वाद-विवाद करो।

स्कूल में

देखते-ही-देखते पाँच साल बीत गए। मैंने पाँचवी कक्षा पास कर ली। मुझे पता चला कि छठी कक्षा से खर्चा बढ़ जाएगा। माँ-पिताजी ने कहा कि स्कूल छोड़ दो, पर मैं आगे पढ़ना चाहती थी। मैंने हल ढूँढ़ ही लिया। मैं अपने से छोटे बच्चों को पढ़ाने लगी। उससे मुझे जो पैसे मिलते थे, उनसे मैं अपनी आगे की पढ़ाई कर पाई।

एक याद

मुझे याद है कि गाँव में कुछ बड़े लड़के भी बच्चों को पढ़ाते थे। उन्हें मेरा बच्चों को पढ़ाना पसंद नहीं आया। उन्होंने मेरे पास आने वाले बच्चों को डराना, धमकाना शुरू कर दिया। दो बच्चों को छोड़कर, सबने आना बंद कर दिया। कुछ दिनों बाद बाकी बच्चे भी लौट आए क्योंकि मैं उन्हें प्यार से पढ़ाती थी।

बताओ

- क्या तुम कुछ ऐसे लोगों को जानते हो, जो पढ़ना चाहते थे, लेकिन अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए? उनके बारे में कक्षा में बताओ।

अध्यापक के लिए–बच्चों को वाद-विवाद का मतलब समझाएँ। वाद-विवाद से बच्चों को किसी बात के विभिन्न पहलुओं के बारे में सोचने और समझने का मौका मिलेगा। कक्षा में बच्चों को अपनी राय रखने के लिए प्रोत्साहित करें।

© NCERT not to be republished

- हर बच्चे का हक है कि वह आठवीं कक्षा तक की पढ़ाई मुफ़्त कर सके। क्या सभी बच्चों को यह अधिकार मिलता है? चर्चा करो।

क्या है RTE-अधिनियम 2009?

यह छः से चौदह साल के सभी बच्चों को मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार देता है।

धीरे-धीरे मैंने गाँववालों को समझाना शुरू किया कि सभी लड़कियों को स्कूल भेजें। घर में माँ-पिताजी ने भी मेरी मदद करनी शुरू कर दी। घर का सारा काम मेरी माँ ही कर लेती थी। मुझे पढ़ने के लिए काफ़ी समय मिल जाता था।

एक राज़

मैंने किसी को बताए बिना मोटर-बाइक चलाना भी सीखा। बहुत बार चोट लगी, पर मज़ा आया।

स्कूल से मधुमक्खी पालन तक

हमारे इलाके में बहुत सारे लीची के पेड़ हैं। लीची के फूल मधुमक्खियों को लुभाते हैं। इसलिए यहाँ लोग मधुमक्खियों को पालकर शहद बनाने का काम करते हैं। मैंने सोचा कि क्यों न मैं भी यह काम कर लूँ। तब मैंने गाँव में मधुमक्खी पालने के एक सरकारी कोर्स में भाग लिया। कोर्स में भाग लेने वालों में मैं अकेली लड़की थी। ट्रेनिंग में मुझे पता चला कि अक्तूबर से दिसम्बर तक का समय मधुमक्खियों के अंडे देने का होता है। मधुमक्खी पालन शुरू करने का सबसे अच्छा समय यही होता है।

- क्या तुमने कीड़ों को फूलों पर आते देखा है? उनके नाम पता करो और लिखो।

- कॉपी में उनके चित्र बनाकर रंग भरो।
- वे फूलों पर क्यों आते हैं? पता करो।

- जब मधुमक्खी उड़ती है, तो कैसी आवाज़ होती है? वैसी आवाज़ निकालो।

अध्यापक के लिए–बेटियों की शिक्षा के लिए उपलब्ध विभिन्न योजनाओं का पता करें। साथ ही कौशल विकास के अवसरों को पहचानने में बच्चों की सहायता करें।

© NCERT not to be republished

अनीता-मधुमक्खी पालक

मैंने मधुमक्खी पालने का कोर्स कर लिया। लेकिन अपना काम शुरू करने के लिए मेरे पास रुपये नहीं थे। मैंने कुछ समय तक इंतज़ार किया और बच्चों को पढ़ाकर ₹5000 बचाए। इन रुपयों से मैंने मधुमक्खी पालने के दो बक्से खरीदे। एक बक्से की कीमत ₹2000 थी। बाकी बचे रुपयों से मीठा घोल बनाने के लिए चीनी और छत्ते को साफ़ करने के लिए दवाइयाँ खरीदीं।

not to be republished

सितम्बर का महीना था। दिसम्बर तक मेरे पास इतनी मधुमक्खियाँ हो गईं कि दो बक्से कम पड़ने लगे। मैंने दो बक्से और खरीदे। मुझे मधुमक्खियों के बारे में ज़्यादा अनुभव नहीं था। कई बार मधुमक्खियों ने मुझे काटा भी। इससे मेरा चेहरा और हाथ सूज जाते थे। दर्द भी बहुत होता था, पर कहती किससे? यह काम तो मैंने अपनी ही इच्छा से शुरू किया था।

पता करो

- तुम्हारे आस-पास के इलाके में मधुमक्खी के काटने पर क्या लगाते हैं?
- मधुमक्खी का चित्र कॉपी में बनाओ। उसमें रंग भी भरो तथा अपना मनपसंद कोई नाम रखो।

लीची के फूल फरवरी में खिलते हैं। मैंने अपने चारों बक्सों को लीची के बगीचे में रखा। मुझे हर बक्से से 12 किलो शहद मिला, जो मैंने बाज़ार में बेचा। मुझे अपनी पहली कमाई मिली। अब मेरे पास 20 बक्से हैं।

- अनीता के 20 बक्सों की कुल कीमत क्या है?

मैं रोज़ साइकिल से कॉलेज जाती हूँ। कॉलेज गाँव से 5 किलोमीटर दूर शहर में है। जब मैं कॉलेज जाती हूँ, तो माँ मधुमक्खियों के लिए चीनी का घोल तैयार करतीं हैं। पिताजी मधुमक्खियों की देखभाल करते हैं और बक्सों से शहद निकालते हैं।

अब तक तो तुम भी अनीता को अच्छी तरह जान गए होगे। आस-पास के

© NCERT not to be republished

सभी गाँवों के लोग उसे पहचानते हैं। वह गाँव की सभी बैठकों में जाती है और लोगों को समझाती है कि पढ़ना सबके लिए बहुत ज़रूरी है। कुछ लोग तो उस पर हँसते भी हैं, लेकिन अनीता को अपना काम करना है और वह करती है।

अनीता होलसेलर बनना चाहती है, जिससे वह मधुमक्खी पालने वालों को शहद की सही कीमत दिलाने में मदद कर सके।

पता करो

- अनीता और गाँव वालों को एक किलो शहद के बदले 35 रुपये मिलते हैं। तुम्हारे यहाँ एक किलो शहद कितने रुपयों का मिलता है?

- तुमने किस-किस रंग का शहद देखा है?

- क्या तुम्हारे घर में शहद इस्तेमाल होता है? किस-किस काम के लिए?

हर छत्ते में एक रानी मक्खी होती है, जो अंडे देती है। छत्ते में कुछ नर-मक्खी भी होते हैं। छत्ते में बहुत सारी काम करने वाली मक्खियाँ भी होती हैं। ये दिन भर काम करती हैं। शहद के लिए फूलों का रस ढूँढ़ती हैं। जब किसी मक्खी को रस मिल जाता है, तो वह एक तरह का नाच करती है, उससे दूसरी मक्खियों को पता

अध्यापक के लिए–बच्चों को होलसेलर का काम समझाएँ।

© NCERT not to be republished

चल जाता है कि रस कहाँ है। वे रस से शहद बनाती हैं। छत्ता बनाने का काम भी इन्हीं का होता है और बच्चों को पालना भी। ये न हों, तो न छत्ता बने और न ही शहद इकट्ठा हो। शहद के बिना छत्ते की सारी मधुमक्खियाँ भूखी ही रह जाती हैं। नर-मक्खी छत्ते के लिए कुछ खास काम नहीं करते।

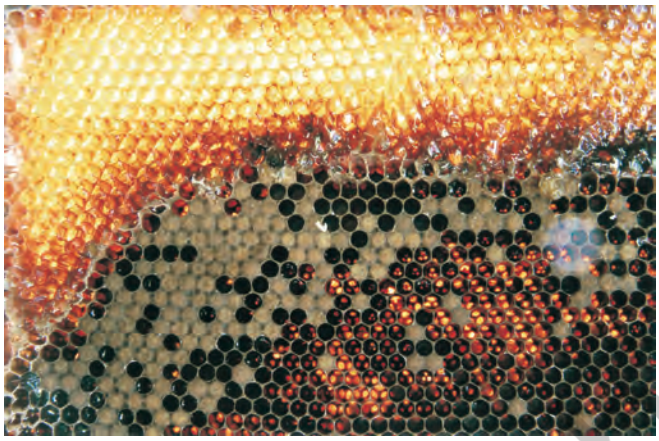

- मधुमक्खी के अलावा और कौन-से कीड़े हैं, जो समूह में रहते हैं?

मधुमक्खियों की तरह ही चींटियाँ भी मिल-जुलकर रहती हैं। सभी चींटियों का काम बँटा होता है। रानी चींटियाँ अंडे देती हैं, सिपाही चींटी बिल का ध्यान रखतीं हैं और काम करने वाली चींटियाँ भोजन ढूँढ़ कर बिल तक लातीं हैं। दीमक और ततैये भी इसी तरह समूह में रहते हैं।

- तुमने चींटियों का बिल कहाँ-कहाँ देखा है?

- तुम्हें क्या लगता है—किस तरह की चीज़ों पर चींटियाँ ज़्यादा आती हैं? उनकी सूची बनाओ।

- चींटियों की कतार को देखो और बताओ कि उनका रंग कैसा है?

© NCERT not to be republished

- क्या तुम्हें कभी चींटी ने काटा है? कैसी थी वह–काली या भूरी, छोटी या मोटी या किसी और तरह की?

- क्या चींटी तुम्हारे पास आती है? कब?

- कुछ छोटी और बड़ी चींटियों को ध्यान से देखो। चींटियों के कितने पैर होते हैं?
- बड़ी चींटी के पैर
- छोटी चींटी के पैर
- एक चींटी का चित्र कॉपी में बनाओ और रंग भरो।
- तुम अकसर मूँगफली खाकर उसके छिलके फेंक देते होगे। चलो, उन्हीं छिलकों से रंग-बिरंगे कीड़े-मकौड़े बनाने की कोशिश करो। उन पर रंग भरना न भूलना!

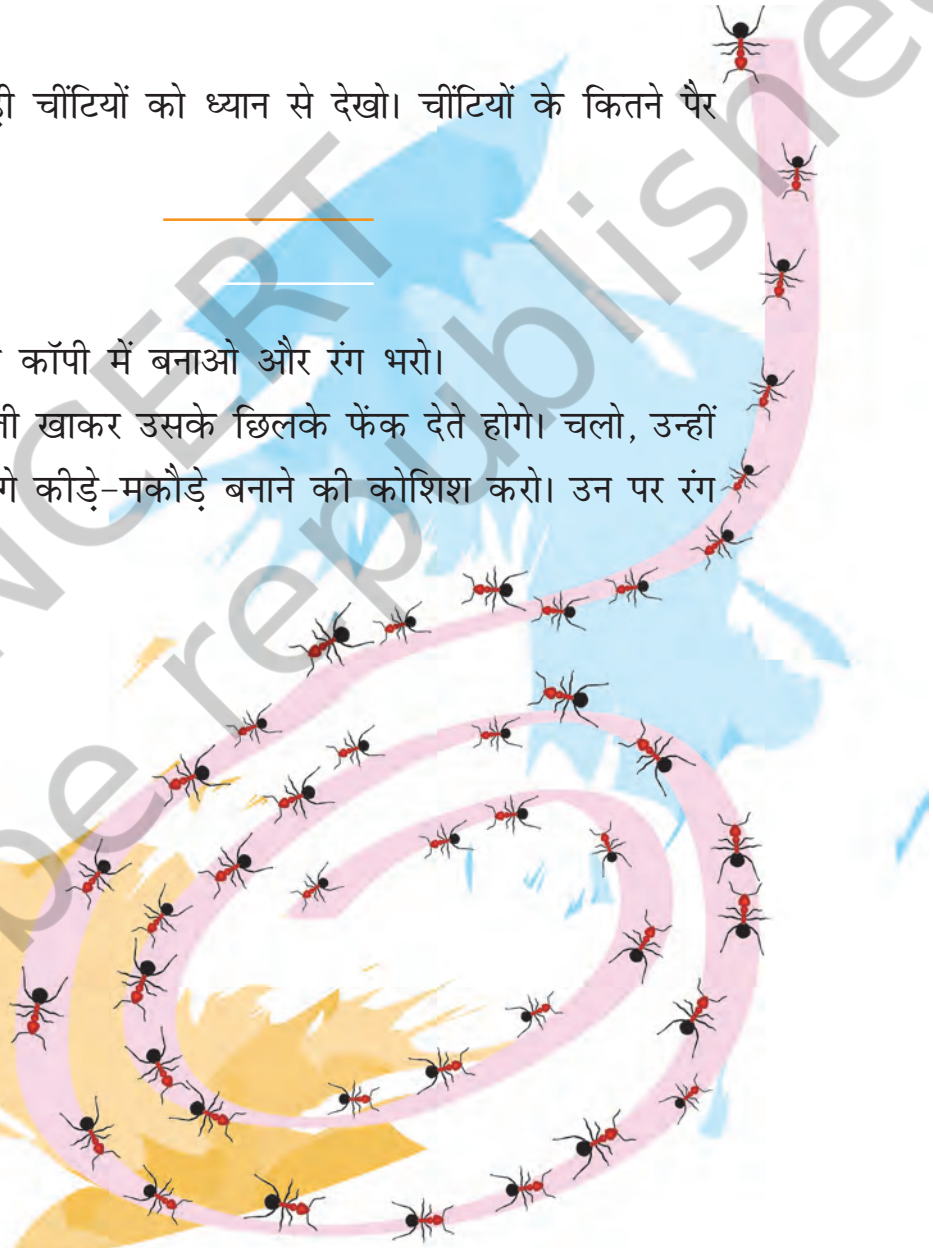

अनीता की कहानी–http://www.youtube.com/watch?vzrtUiVVDQYwA

© NCERT not to be republished

पाठ 6

ओमना का सफ़र

0428CH06

ओमना और उसकी पक्की सहेली राधा बहुत खुश थीं। वे साथ-साथ ट्रेन से केरल जो जा रही थीं। ओमना जा रही थी अपनी नानी के घर और राधा अपने परिवार के साथ छुट्टियाँ मनाने। ओमना के अप्पा ही गए थे, दोनों परिवारों के लिए टिकट बुक कराने।

सफ़र से दो दिन पहले ही राधा साइकिल से गिर गई और उसके दाएँ पैर की हड्डी टूट गई। डॉक्टर ने छह हफ़्तों के लिए उसकी दाईं टाँग पर पलस्तर चढ़ा दिया और चलने-फिरने के लिए भी मना कर दिया। राधा के परिवार को अपनी टिकटें रद्द करानी पड़ीं। राधा और ओमना बहुत उदास हो गईं। कितनी तैयारी की थी, दोनों ने मिलकर। राधा की माँ ने एक उपाय सुझाया। उन्होंने ओमना से कहा, "तुम अपने पूरे सफ़र की बातें डायरी में लिखती रहना। जब तुम वापिस आओगी, तब राधा तुम्हारी डायरी पढ़ लेगी। इससे तुम कोई बात भूलोगी नहीं और सफ़र में तुम्हारा समय भी अच्छा बीतेगा।"

दोनों सहेलियों को यह बात अच्छी लगी। ओमना ने सफ़र में अपने साथ एक कॉपी रख ली और रास्ते की सभी बातें लिखती रही। ओमना की डायरी के कुछ पन्ने तुम भी पढ़ो।

© NCERT not to be republished

ओमना की डायरी

16 मई

दोपहर का समय था। स्टेशन पर पहुँचते ही हमने सबसे पहले अपने नाम 'रिज़र्वेशन चार्ट' में देखे। जल्दी ही ट्रेन प्लेटफ़ॉर्म पर आ पहुँची। हमने देखा कि ट्रेन तो पहले से ही भरी हुई थी। आज सुबह-सुबह ही यह ट्रेन गाँधीधाम, कच्छ से चली थी। ट्रेन के पहुँचते ही हलचल-सी मच गई। एक ही दरवाज़े से कुछ लोग उतर रहे थे, तो कुछ चढ़ने के लिए धक्का-मुक्की कर रहे थे।

हम भी जैसे-तैसे चढ़ ही गए और अपनी सीट ढूँढ़कर अपना सामान सीट के नीचे रख दिया। ट्रेन के चलने से पहले सभी अपनी-अपनी सीटों पर बैठ चुके थे। कुछ देर बाद टिकट-चेकर आया और उसने सभी की टिकटें देखीं। वह यह देख रहे थे कि सभी ठीक सीटों पर बैठे हैं या नहीं। अम्मा और अप्पा को नीचे वाली बर्थ मिली, उन्नी और मुझे बीच वाली। सबसे ऊपर वाली बर्थ पर कॉलेज के

© NCERT not to be republished

दो लड़के हैं। पास ही बैठे परिवार के दोनों बच्चे हमारे जितने ही लग रहे हैं। मैं उनसे बात ज़रूर करूँगी, पर थोड़ी देर बाद।

मैं अब खिड़की के पास बैठी यह सब लिख रही हूँ। अम्मा ने खाने का डिब्बा खोल लिया है। ढोकला, चटनी, नींबू वाले चावल और मिठाई—कितनी सारी चीज़ें लाई हैं अम्मा! मेरे मुँह में तो पानी आ रहा है। बाकी बातें अब बाद में ही लिखूँगी।

- ट्रेन के डिब्बे के दरवाज़े पर धक्का-मुक्की क्यों हो रही थी?

- क्या तुमने कभी ट्रेन में सफ़र किया है? कब?

- अगर तुम सफ़र पर जाओ, तो खाने-पीने का क्या-क्या सामान ले जाना पसंद करोगे? क्यों?

- टिकट-चेकर के क्या-क्या काम होते हैं?

- तुम टिकट-चेकर को कैसे पहचानोगे?

© NCERT not to be republished

16 मई

दोपहर का खाना खाकर कुछ लोग सो गए, पर मुझे नींद नहीं आई। मैं खिड़की से बाहर देखती रही। यहाँ बाहर सूखे, भूरे मैदान दिखाई पड़े। कहीं-कहीं छोटे-छोटे गाँव भी दिखे। लग रहा था, जैसे सभी भाग रहे हैं। पता है, जब ट्रेन इतनी तेज़ी से चलती है, तो बाहर की सभी चीजें उलटी दिशा में भागती दिखाई देती हैं!

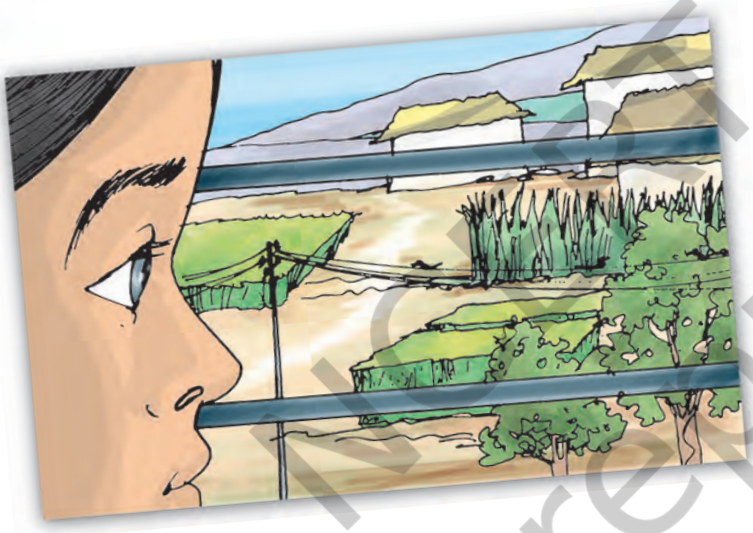

कुछ समय पहले बहुत गर्मी थी। अब शाम हो गई है और हलकी-हलकी हवा चल रही है।

बाहर आसमान संतरी रंग का दिखाई दे रहा है, सूरज जो डूब रहा है। मैंने अहमदाबाद में कभी डूबते सूरज पर ध्यान ही नहीं दिया!

हम अभी-अभी वलसाड़ स्टेशन से निकले हैं। वहाँ ट्रेन दो ही मिनट के लिए रुकी थी। स्टेशन पर खाने-पीने की चीज़ें बेचने वालों का बहुत शोर था– "चाय! गरम, चाय!",

© NCERT not to be republished

एक तरफ़ से आवाज़ आ रही थी, "बटाटा-वड़ा! बटाटा-वड़ा!, पूरी-साग!", "दूध! ठंडा, दूध!" लोग प्लेटफ़ॉर्म पर खाने की चीज़ें खरीद और बेच रहे थे। हमने तो खिड़की से ही केले और चीकू खरीद लिए थे।

- ओमना ने खिड़की से बाहर क्या देखा?

- रेलवे स्टेशन पर क्या-क्या चीज़ें बिकती हैं?

16 मई

मैंने साथ बैठे बच्चों से दोस्ती कर ली है। वे हैं–सुनील और एन। वे अपनी दादी के घर कोज़ीकोड जा रहे हैं। सुनील ने मुझे कहानी की कुछ किताबें पढ़ने को दीं।

मैं थोड़ी देर पहले बाथरूम में हाथ-मुँह धोने गई थी, पर वहाँ पानी खत्म हो गया था। किसी ने कहा कि अब पानी अगले स्टेशन पर ही भरा जाएगा।

अध्यापक के लिए–गाँधीधाम, अहमदाबाद और वलसाड़ गुजरात में हैं। कोज़ीकोड केरल में है। बच्चों को नक्शे पर गुजरात और केरल दिखाने से उन्हें यह बात समझने में आसानी होगी कि यह सफ़र बहुत लंबा है।

© NCERT not to be republished

- ट्रेन के बाथरूम में पानी खत्म क्यों हो गया? चर्चा करो।
- कल्पना करो कि अब तुम्हें ट्रेन में एक लंबे सफ़र पर जाना है। तुम अपने साथ मनोरंजन के लिए क्या-क्या सामान ले जाना चाहोगे?
- चित्रों को पहचान कर लिखो, रेलवे स्टेशन पर ये लोग क्या काम करते हैं? चर्चा करो।

अध्यापक के लिए–रेलवे स्टेशन पर टिकट काउंटर व ऑनलाइन रेलवे टिकट बुक करने के तरीकों पर चर्चा करें। वेबलिंक http://www.com.indianrailways.gov.in/crism/home.seam का प्रयोग करें।

© NCERT not to be republished

पाठ–7
खिड़की से

0428CH07

17 मई

अब सुबह हो गई है। मैं कल रात बहुत जल्दी सो गई थी। बाहर इतना अँधेरा था कि कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। आज सुबह जब ट्रेन रुकी तो मेरी आँख खुली। बाहर प्लेटफ़ॉर्म पर लगे बोर्ड पर लिखा था–मडगाँव। अप्पा ने बताया कि अब हम गोआ राज्य में हैं।

हमने स्टेशन पर उतरकर चाय पी और अपनी पानी की बोतलें भी भर लीं।

ट्रेन फिर चल पड़ी। बाहर का नज़ारा देखने लायक है। चारों तरफ़ हरियाली है। मैदानों की लाल मिट्टी में उगे छोटे-छोटे पौधे और पेड़ों से ढँकी पहाड़ियाँ बहुत ही सुंदर लग रही हैं। कभी-कभी छोटे

© NCERT not to be republished

तालाब दिखाई पड़ते हैं। बहुत दूर पहाड़ियों के बीच पानी दिखाई दे रहा है। मुझे पता नहीं कि वहाँ नदी है या समुद्र। हवा ठंडी है, अहमदाबाद की तरह गर्म नहीं।

ट्रेन अभी-अभी एक रेलवे फाटक से गुज़री। दोनों तरफ़ फाटक के पार बसों, कारों, ट्रकों, साइकिल, स्कूटर, रिक्शा, बैलगाड़ी, ताँगे में बैठे लोग ट्रेन के गुज़रने का इंतज़ार करते दिखाई दिए। कुछ लोग तो अपनी गाड़ियों के इंजन बंद भी नहीं करते। रेलवे फाटक पर कितना धुआँ और कितना ज़्यादा शोर था! मैंने देखा कि कुछ लोग बंद रेलवे फाटक को नीचे से झुक कर भी पार कर रहे थे। कितना खतरनाक है यह!

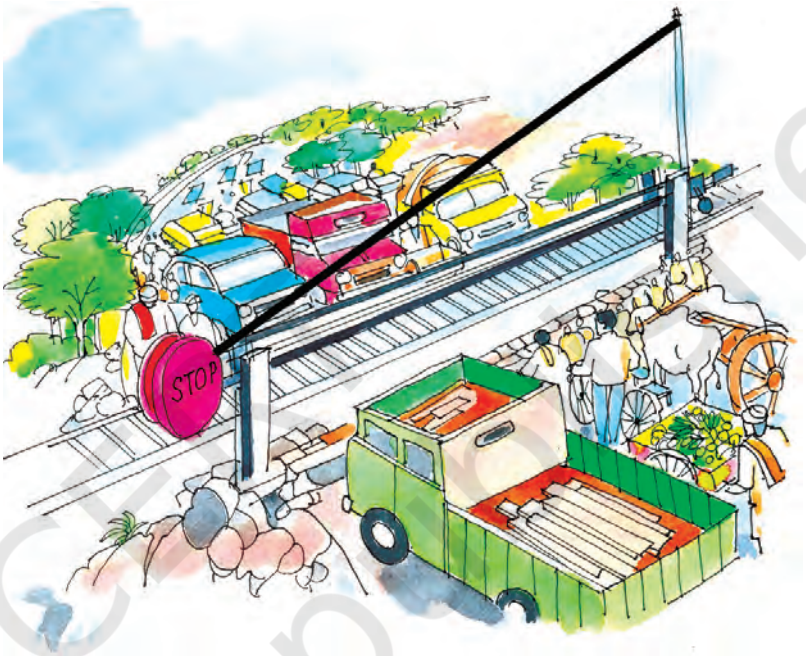

कभी-कभी हमारी ट्रेन दूसरी ट्रेन के बिलकुल पास से गुज़रती है। मैंने और उन्नी ने डिब्बे गिनने की कई बार कोशिश की, पर दोनों ही ट्रेन इतनी तेज़ चल रही थीं कि हमारी गिनती कभी भी मेल नहीं खाई। गड़बड़ ही हुई।

- ओमना ने पहले और दूसरे दिन खिड़की से बाहर जो नज़ारा देखा, उसमें क्या अंतर है?

© NCERT not to be republished

खिड़की से

- ओमना ने रेलवे फाटक के दोनों तरफ़ कौन-कौन से वाहन देखे, जो पेट्रोल या डीज़ल से चलते होंगे?

- इन वाहनों से शोर और धुआँ क्यों हो रहा था?

- वाहनों के शोर तथा पेट्रोल-डीज़ल की बचत के लिए हम क्या कर सकते हैं? चर्चा करो।

चर्चा करो

कुछ लोग रेलवे फाटक तब भी पार करते हैं, जब वह बंद होता है। तुम इसके बारे में क्या सोचते हो?

17 मई

मैं खिड़की के पास आँखें बंद किए बैठी थी कि अचानक ट्रेन के चलने की आवाज़ बदल गई—खड़-खड़-खड़...। मैंने आँखें खोलीं। अंदाजा लगाओ, मैंने क्या देखा? हमारी ट्रेन नदी के ऊपर बने पुल पर से जा रही थी। कितना बड़ा था वह पुल! पुल पर से जाते हुए ट्रेन के पहियों की आवाज़ भी कितनी अलग होती है। मैंने खिड़की से नीचे झाँका, तो मुझे बहुत डर लगा। पटरी के नीचे ज़मीन तो थी ही नहीं, केवल पानी

© NCERT not to be republished

ही पानी था! नदी में कुछ नावें दिखाई दे रही थीं और किनारे पर कुछ मछुआरे। मैंने उन्हें हाथ हिलाकर इशारा किया। पता नहीं वे मुझे देख भी पाए या नहीं।

ट्रेन के पुल के साथ-साथ दूसरे वाहनों के लिए एक और पुल भी बना हुआ था। वह इस पुल से अलग तरह से बना था। मुझे लगा कि हमारे जैसे पुल के ऊपर से जाने में ज़्यादा मज़ा है।

- क्या तुमने पुल देखे हैं? कहाँ?
- क्या तुम कभी किसी पुल पर से गुज़रे हो? कहाँ?
- पुल किस पर बना था?
- तुम्हें पुल के नीचे क्या दिखाई दिया था?
- पता करो पुल क्यों बनाए जाते हैं?

© NCERT not to be republished

खिड़की से

17 मई

पिछले कुछ घंटे बहुत ही मज़ेदार रहे। नाश्ता करने के बाद मैं ऊपर अपने बर्थ पर लेट कर कॉमिक पढ़ने लगी। बाहर बहुत तेज़ धूप खिली थी। अचानक बिलकुल अँधेरा हो गया। थोड़ी ठंड भी लगने लगी। मैं बहुत डर गई। कुछ ही देर बाद ट्रेन के अंदर की बत्तियाँ जल उठीं, पर बाहर बिलकुल घुप्प अँधेरा था। किसी ने बताया, हम सुरंग में से गुज़र रहे थे। पहाड़ को काटकर बनी सुरंग! ऐसा लग रहा था, जैसे सुरंग खत्म ही नहीं होगी। जैसे अचानक अँधेरा हुआ था, वैसे ही पहले की तरह भरपूर रोशनी हो गई। खिड़की से बाहर चमकती धूप, रोशनी और हरियाली थी। ट्रेन सुरंग से बाहर निकल चुकी थी। अप्पा ने बताया कि हम पहाड़ के दूसरी तरफ़ पहुँच गए हैं। तब से अब तक हम चार और छोटी सुरंगों में से गुज़र चुके हैं। अब, जब मैं सुरंग के बारे में जान चुकी हूँ, मुझे डर नहीं लगता, बल्कि मज़ा आता है।

- क्या तुम कभी किसी सुरंग से गुज़रे हो? तुम्हें कैसा लगा?

- गोआ से केरल तक के रेल के रास्ते में 92 सुरंगें और 2000 पुल हैं। तुम क्या सोचते हो—इतनी सुरंगों और पुलों के होने के क्या कारण हो सकते हैं?

© NCERT not to be republished

- ओमना ने पुल के नीचे जो नज़ारा देखा, उसे पढ़कर उसका चित्र कॉपी में बनाओ।

- कल्पना करो अगर सुरंगें और पुल न होते, तो ओमना की ट्रेन पहाड़ और नदियाँ कैसे पार करती।

17 मई

अब दोपहर हो गई है। हमने उदिपी स्टेशन से जो गरमागरम इडली-वड़ा खरीदा था, उसे खाया। वहाँ से हमने केले भी खरीद लिए थे। वे थे तो बहुत छोटे-छोटे, पर थे बहुत स्वादिष्ट! बाहर का नज़ारा फिर बदल गया है। अब हम हरे-हरे खेत और बहुत सारे नारियल के पेड़ देख पा रहे हैं। अम्मा ने बताया कि यहाँ चावल की खेती होती है। बाहर सब कुछ अलग दिखाई दे रहा है—यहाँ के गाँव और यहाँ बने घर। जानती हो, यहाँ के लोगों का पहनावा भी अहमदाबाद के लोगों से अलग है। ज़्यादातर लोग सफ़ेद या क्रीम रंग की सूती धोती और साड़ियाँ पहने हैं। अहमदाबाद से हमारे साथ चले बहुत-से लोग बीच के स्टेशनों पर उतर गए। कुछ और लोग चढ़े भी हैं।

शाम छह बजे तक कोज़ीकोड पहुँचेंगे। सुनील का परिवार वहाँ उतर जाएगा। हमने एक-दूसरे का पता ले लिया है और अहमदाबाद में मिलने की योजना भी बनाई है। तुम्हें भी सुनील और एन से मिलकर अच्छा लगेगा।

- तुम घर में कौन-सी भाषा बोलते हो?

- गुजरात से केरल पहुँचने तक ट्रेन हमारे देश के किन-किन राज्यों से गुज़री? पता करो और सूची कॉपी में बनाओ।

- क्या तुमनें नारियल पानी पीया है? कैसा लगा? चर्चा करो।

- नारियल के पेड़ का चित्र बनाओ और उस पर चर्चा करो।

© NCERT not to be republished

- पता करो कि ये भाषाएँ किन जगहों पर बोली जाती हैं।

भाषा	**जहाँ बोली जाती है (राज्य)**
मलयालम	
कोंकणी	
मराठी	
गुजराती	
कन्नड़	

17 मई

अब रात हो चुकी है। हमने अपना सामान सँभालना शुरू कर लिया है। लगभग तीन घंटे में हमारा स्टेशन कोट्टायम भी आ जाएगा। वहाँ हमें उतरना है।

आज रात को हम वलियम्मा के घर जाएँगे। वहाँ से सुबह बस में बैठकर अम्मूमा के गाँव के लिए रवाना होंगे। सभी बहुत थक गए हैं। आज ट्रेन में हमारा दूसरा दिन खत्म होने को है। बाप रे! कितना लंबा सफ़र तय किया है हमने। पर मज़ा भी बहुत आया। अब मैं लिखना बंद कर रही हूँ। अम्मूमा के घर पहुँचकर ही फिर डायरी लिखूँगी।

- तुम इन्हें क्या कहकर बुलाते हो?

माँ की बहन को _____

माँ की माँ को _____

पिताजी की बहन को _____

पिताजी की माँ को _____

अध्यापक के लिए—विभिन्न राज्यों की भाषा, पहनावे, भोजन और भू-भागों के बारे में जानकारी इकट्ठी करने में बच्चों की मदद की जा सकती है। मलयालम में वलियम्मा, माँ की बड़ी बहन को कहते हैं और अम्मूमा अपनी माँ की माँ को।

© NCERT not to be republished

पाठ-8
नानी के घर तक

18 मई

ट्रेन के लंबे सफ़र के बाद हम देर रात कोट्टायम पहुँचे। वलियम्मा का घर स्टेशन से बहुत दूर नहीं है। स्टेशन से हमने दो ऑटो-रिक्शॉ किए और वलियम्मा के घर पहुँचे। मुझे इतनी नींद आ रही थी। मैं नहा कर, कुछ खाए-पिए बिना ही सो गई। अभी मैं सोई ही थी कि अम्मा ने जगा दिया। फिर हम तैयार हुए, अपना सामान उठाया और बस अड्डे के लिए निकल पड़े। अब वलियम्मा का पूरा परिवार भी हमारे साथ था। हम दस लोग थे और बहुत सारा सामान भी था।

© NCERT not to be republished

अप्पा ने कंडक्टर से सभी के लिए टिकट खरीदे और हम बस में चढ़ गए। हमें बैठने की सीट मिल गई, पर बाद में बस में इतने लोग चढ़ गए कि बस ठसाठस भर गई। दो लोगों की सीट पर चार-चार लोगों को बैठना पड़ा! कुछ लोगों को हमने भी अपनी सीटों पर बिठा लिया।

काफ़ी लंबा सफ़र था। बस जब आखिरी स्टॉप पर रुकी, तब तक मेरे पैर अकड़ गए थे। मुझसे खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा था।

मैं खुश थी कि आखिरकार हम अम्मूमा के गाँव पहुँच ही गए। पर नहीं, सफ़र अभी भी बाकी था। बस ने हमें जहाँ उतारा, वहाँ एक तरफ़ पानी ही पानी था। अम्मा ने दूर पानी के पार इशारा किया, जहाँ अम्मूमा का घर था और कहा, "वो देखो! हमें वहाँ पहुँचना है।" "पर हम वहाँ कैसे पहुँचेंगे?" मैंने सोचा।

अभी मैं यह सोच ही रही थी कि पानी के पार कैसे जाएँगे कि तभी एक बड़ी-सी नाव किनारे पर रुकी। अम्मा बोलीं, "लो, फ़ैरी आ गई।" फ़ैरी में से बहुत सारे लोग उतरे। स्कूल के बच्चे, औरतें, आदमी, सभी अपना-अपना सामान लिए थे। अम्मा ने बताया कि वहाँ पर पानी के दूसरी तरफ़ जाने के लिए केवल फ़ैरी का ही इस्तेमाल होता है।

जैसे ही फ़ैरी खाली हुई, चढ़ने वालों की भीड़ लग गई। सभी को चढ़ने से पहले किराया भरना था। देखते-ही-देखते फ़ैरी भर गई और पानी पर चल पड़ी।

मैं तो रेलिंग के पास ही खड़ी आस-पास देखती रही। फ़ैरी तेज़ी से पानी पर फिसल रही थी, जिससे आस-पास का पानी उछल रहा था। किनारे पर नारियल के पेड़ कतार में लगे थे। वहीं किनारे पर, कहीं लोग नहा रहे थे और कहीं मछली पकड़ रहे थे। कुछ लोग कपड़े भी धो रहे थे।

© NCERT not to be republished

सूरज ढलने से पहले ही फ़ैरी अपने ठिकाने (टापू) पर पहुँच गई और हम भी पहुँच गए अम्मूमा के घर, इतने लंबे पर मज़ेदार सफ़र के बाद!

- ओमना ट्रेन से उतरने के बाद कई वाहनों में बैठी। क्या तुम्हें उनके नाम याद हैं?

- तुम किन-किन वाहनों में बैठे हो?

- तुम्हें सबसे ज़्यादा मज़ा किस वाहन में सफ़र करने पर आया? क्यों?

- ओमना अहमदाबाद से 16 मई को चली थी। अम्मूमा के घर पहुँचने में उसे कितने घंटे लगे?

- क्या तुम कभी लंबे सफ़र पर गए हो? कहाँ गए थे?

- उस सफ़र पर तुम किन-किन वाहनों पर बैठे थे? उनके नाम लिखो।

अध्यापक के लिए–केरल के कई भागों में, एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए फ़ैरी और अन्य तरह की नावों का इस्तेमाल होता है। चर्चा करो, ये क्यों प्रयोग होती हैं? तुम बच्चों से उनकी नाव की सवारी के बारे में भी पूछ सकते हो, जिसकी उन्होंने सवारी की थी।

© NCERT not to be republished

- तुम्हारे सफ़र में कितना समय लगा था?

- ओमना के अप्पा ने ट्रेन, बस और फ़ैरी के सफ़र के लिए टिकट खरीदा। बताओ और किन-किन वाहनों में जाने के लिए टिकट खरीदना पड़ता है?

- कुछ जगहों पर अंदर जाने के लिए टिकट खरीदना पड़ता है। क्या तुम ऐसी किसी जगह के बारे में जानते हो? उनके नाम लिखो।

- रेल-टिकट देखो। नीचे दी गई बातों को टिकट में ढूँढ़कर, उन पर अलग-अलग रंगों से गोला लगाओ और चर्चा करो।
  - ट्रेन का नंबर
  - सफ़र शुरू होने की तारीख
  - बर्थ एवं डिब्बे के नंबर
  - किराया
  - दूरी (कि.मी. में)

पी.एन.आर.नं. PNR NO. 6825091 8
गाड़ी नं. TRAIN NO. 9037
तिथि DATE 24-12-2006
कि.मी. K.M. 643
वयस्क ADULT 2
बच्चे CHILD 1
820-6449755 /68250918
श्रेणी/CLASS 2A
JOURNEY CUM RESERVATION TICKET
तक / से आरक्षित RESV. UPTO PRS-NDLS
वाता बांदरा टर्मिनस BANDRA TERMINUS
रतलाम जं. RATLAM JN

कोच COACH	सीट/बर्थ SEAT/BERTH	लिंग SEX	आयु AGE	यात्रा अधिकार पत्र T.AUTHORITY	रियायत CONC.	आ.शु. R. FEE	स.शु. S.CH.	सु.अ. SF.CH.	वाऊचर रु. VOUCH.Rs.	कु. नकद रु. T.CASH Rs.
A1	21 LB	M	39			75				2578
A1	23 SL	F	37							
A1	22 UB	M	7							

Rs.TWO FIVE SEVEN EIGHT ONLY
I-TICKET/ NO CASH REFUNDS
(NEW TIME TABLE FROM 01-12-2006) AVADH EXPRESS BOARDING BDTS 24-12-2006
713 27-10-2006 14:36 RCT1 210 VIA BRC
DELHI PRS

© NCERT not to be republished

तुम टिकट देखकर और क्या-क्या बातें पता लगा सकते हो? लिखो।

रेलवे टाइम-टेबल से हमें बहुत-सी जानकारी मिलती है, जैसे ट्रेन किस स्टेशन पर किस समय पहुँचेगी, किस समय स्टेशन छोड़ेगी, कितनी दूरी तय करेगी, आदि। हम किसी भी रेलवे स्टेशन से रेलवे टाइम-टेबल खरीद सकते हैं।

ओमना ने जिस ट्रेन में सफ़र किया, उसके टाइम-टेबल का कुछ अंश देखो, समझो और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दो।

16335 गाँधीधाम नगरकोल एक्सप्रैस

क्रम. स.	स्टेशन का नाम	पहुँचने का समय	स्टेशन छोड़ने का समय	दूरी (कि.मी.)	दिन
1.	गाँधीधाम	–	5:15	0	1
2.	अहमदाबाद	11:30	11:50	301	1
3.	वड़ोदरा	14:03	14:10	401	1
4.	सूरत	16:15	16:20	530	1
5.	वलसाड़	17:23	17:25	598	1
6.	भिवंडी रोड	21:10	21:12	772	1
7.	मडगाँव	07:35	07:45	1509	2
8.	उदिपी	12:06	12:18	1858	2
9.	कोज़ीकोड	17:45	17:50	2165	2
10.	त्रिचूर	21:05	21:10	2280	2
11.	एरनाकुलम टाउन	22:35	22:40	2356	2
12.	कोट्टायम	23:50	23:55	2418	2
13.	त्रिवेंद्रम सेंट्रल	03:05	03:10	2578	3
14.	नगरकोइल	04:45	00:00	2649	3

© NCERT not to be republished

- तालिका में उन सभी स्टेशनों के नाम पर गोला लगाओ, जिनका नाम ओमना की डायरी में आया है।
- ट्रेन किस स्टेशन से चली थी?

- ट्रेन अहमदाबाद स्टेशन पर कितनी देर रुकी?

- ट्रेन सफ़र के कौन-से दिन मडगाँव पहुँची?

- सुनील और एन कोज़ीकोड स्टेशन पर उतरे और ओमना कोट्टायम स्टेशन पर। कोज़ीकोड स्टेशन के कितने घंटे बाद कोट्टायम स्टेशन आता है?

- ट्रेन ने शुरू के स्टेशन से अंत तक कितने किलोमीटर का सफ़र पूरा किया?

- ओमना ने ट्रेन से कितने किलोमीटर का सफ़र पूरा किया?

- क्या तुम एक डायरी रखना पसंद करोगे? एक डायरी या कॉपी लो। डायरी में रोज़ किसी एक सप्ताह तक की खास बातें और उनके बारे में अपने विचार लिखो। अपनी और अपने दोस्तों की डायरी मिलकर पढ़ो।

अध्यापक के लिए–हो सके तो रेलवे टाइम-टेबल बच्चों को दिखाएँ। उसे पढ़ने में उनकी मदद करें। रेलवे टाइम-टेबल से गणित और भूगोल की बहुत सारी मज़ेदार क्रियाएँ की जा सकती हैं। बच्चों को सुरक्षित पानी, स्वच्छता, रैंप आदि की उपलब्धता के लिए अपने नज़दीकी रेलवे स्टेशन का निरीक्षण करने में मदद करें।

© NCERT not to be republished

0428CH09

पाठ–9
बदलते परिवार

यहाँ निम्मी, सेरिंग और नाज़ली के परिवारों के कुछ चित्र दिए गए हैं। चित्रों को देखो और चर्चा करो।

नन्हा मेहमान

निम्मी का परिवार बहुत खुश है। उसके यहाँ नन्ही–सी छोटी बहन आई है।

© NCERT not to be republished

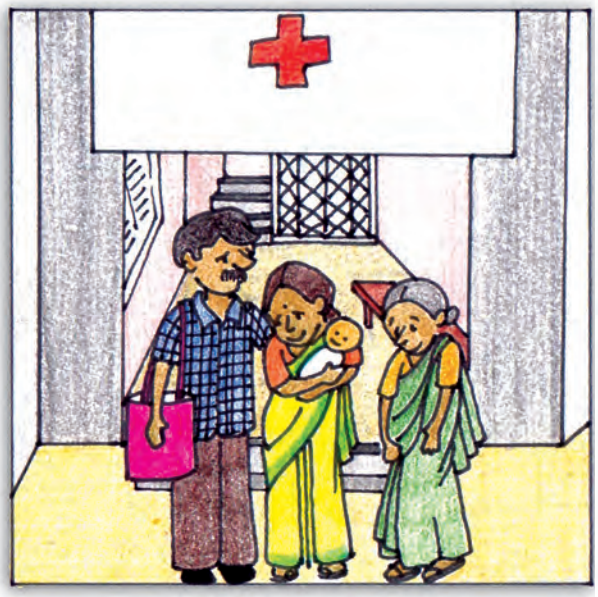

चित्रों को देखकर लिखो

- निम्मी के परिवार में छोटी बहन के जन्म से पहले कौन-कौन थे?

- अब इस परिवार में कुल मिलाकर कितने लोग हैं?

बताओ

- छोटी बहन के आने से निम्मी के सभी घरवालों के जीवन में क्या-क्या बदलाव आएँगे? जैसे-
  - अब निम्मी अपना दिन कैसे बिताएगी?
  - माँ अब क्या-क्या नए काम करेगी?
  - पिताजी, दादी और चाचा के दिनभर के कामों में निम्मी की नई बहन के आने से बदलाव हो जाएँगे। क्या तुम बता सकते हो कैसे?

अध्यापक के लिए–कक्षा में प्रत्येक बच्चे को अपने अनुभव बताने का अवसर दें।

© NCERT not to be republished

- क्या तुम्हारे घर में या आस-पड़ोस के किसी घर में बच्चे का जन्म हुआ है?
  - घर में नन्हा बच्चा आने से कैसा लगता है?
  - इससे घर में क्या-क्या बदलाव आते हैं?
- तुम्हारे या किसी रिश्तेदार के घर में, जो सबसे छोटा बच्चा है उसके बारे में कुछ बातें पता करो और लिखो।
  - उसका जन्म कब हुआ?
  - वह लड़की है या लड़का?
  - तुम्हारा उससे क्या रिश्ता है?
  - उसका जन्म कहाँ हुआ?
  - वह शक्ल में किससे मिलता/मिलती है?
  - उसके बालों का रंग कैसा है?
  - उसकी आँखों का रंग कैसा है?
  - क्या उसके दाँत हैं? उसे खाने में क्या देते हैं?
  - अभी उसकी लंबाई कितनी है?

अध्यापक के लिए–बच्चों को उनके जन्म प्रणाम-पत्र व स्वास्थ्य कार्ड पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

© NCERT not to be republished

- बच्चा दिन में कितनी देर सोता है?

- वह क्या-क्या आवाज़ें निकालता है?

- वह किसके पास ज़्यादा रहता है?

- अपनी कॉपी में बच्चे का एक फ़ोटो चिपकाओ या चित्र बनाओ।

बदली हो गई!

सेरिंग के बाबा को उनके ऑफ़िस से चिट्ठी मिली है। उसमें लिखा है कि उनको ऊँचा पद मिला है और अब उन्हें दूसरे शहर जाना है।

सोचो, जब सेरिंग के बाबा ने अपने घरवालों को चिट्ठी दिखाई, तो घर के अलग-अलग लोगों को कैसा लगा होगा?

© NCERT not to be republished

- बाबा की बदली होने के कारण सेरिंग के परिवार में क्या बदलेगा? जैसे-
  - सेरिंग के परिवार में से कौन-कौन उसके पापा के नए घर में रहेंगे?
  - सेरिंग अब किस स्कूल में जाएगा?
  - क्या सेरिंग के दोस्त बदलेंगे?
  - क्या तुम्हारे परिवार में भी किसी को काम के कारण नई जगह जाना पड़ा था?
  - तुम्हें यह बदलाव कैसा लगा? चर्चा करो।
- क्या तुम्हारी कक्षा या स्कूल में भी दूसरी जगह से बच्चे आए हैं? यदि हाँ, तो उनसे बातचीत करो।
  - वे कहाँ से आए हैं?
  - पहली जगह का स्कूल कैसा था?
  - उन्हें यहाँ क्या-क्या नया लगा?
  - क्या उन्हें यह बदलाव अच्छा लगा?

© NCERT not to be republished

शादी है!

आज नाज़ली के यहाँ सब बहुत खुश हैं। उसके बड़े चचेरे भाई की शादी है।

बताओ

क्या इस शादी के कारण नाज़ली के परिवार में कुछ बदलाव होंगे? क्या-क्या बदलाव होंगे?

- जिस घर से नाज़ली की नई भाभी आई हैं, क्या उस परिवार में भी कुछ बदलाव हुए होंगे? क्या-क्या?
- तुम भी अपनी माँ, चाची या मामी से पता करो कि वे उनकी शादी से पहले कहाँ रहती थीं।

not to be republished

- तब उनके परिवार में कौन-कौन थे?
- क्या तुम्हारे परिवार में भी किसी की नई-नई शादी हुई है? किसकी?

- कक्षा के दोस्तों से बात करो और पता लगाओ कि उनके घर में शादी कैसे होती है।
  - क्या कुछ खास खाना पकाया जाता है? क्या-क्या?
  - दूल्हा-दुलहन कैसे कपड़े पहनते हैं?
  - शादी के नाच-गाने किस तरह के होते हैं?

तुम जब किसी शादी में गए थे, उसमें तुमने क्या-क्या देखा।? अपनी कॉपी में चित्र बनाकर बताओ। कक्षा के और बच्चों के चित्र भी देखो।

हमने देखा कि निम्मी, सेरिंग और नाज़ली के परिवारों में अलग-अलग कारणों से बदलाव हुए हैं।

बदलाव के कारण लिखो

- निम्मी के परिवार में–
- सेरिंग के परिवार में–
- नाज़ली के परिवार में–

© NCERT not to be republished

- क्या परिवारों में बदलाव कुछ और कारणों से भी हो सकते हैं? पता करो, किन-किन कारणों से?

- तीन बड़े लोगों से बात करो—एक तुम्हारे परिवार से, एक तुम्हारे दोस्त के परिवार से और एक अपने पड़ोसी के परिवार से। उनसे नीचे दिए प्रश्न पूछो और तालिका में भरो।

प्रश्न	तुम्हारा परिवार	दोस्त का परिवार	आस-पड़ोस का परिवार
आपका परिवार कितने सालों से यहाँ रह रहा है?			
यहाँ आने से पहले आपका परिवार कहाँ रहता था?			
आज आपके परिवार में कितने लोग हैं?			
आपके परिवार में दस साल पहले कितने लोग थे?			

अध्यापक के लिए—बदलाव ज़िंदगी का हिस्सा है। इन बदलावों का बच्चों पर गहरा असर हो सकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि इस चर्चा को संवेदनशीलता से करें।

© NCERT not to be republished

• आपके परिवार में दस सालों में जो बदलाव हुए हैं, उनके क्या कारण हैं? • इन बदलावों से आपको कैसा लगता है? • तकनीकी बदलावों के कारण आपको किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है?			

मेरा परिवार – कल, आज, कल...

सभी के परिवार किसी न किसी कारण से बदलते रहते हैं। देखें, तुम्हारा परिवार भी बदला है कि नहीं?

जब तुम्हारे दादी-दादा या नानी-नाना तुम्हारे जैसे छोटे थे, तब भी क्या तुम्हारा परिवार वैसा ही था, जैसा आज है?

याद है, कक्षा तीन में तुमने सीतम्मा के परिवार के पेड़ का चित्र देखा था।

- तुमने अपने परिवार के पेड़ का चित्र भी बनाया था। चलो, फिर से परिवार का पेड़ बनाएँ।
- अपने दादा-दादी या नानी-नाना से पता करो कि जब वे तुम्हारी उम्र के थे, तब उनके परिवार में कौन-कौन थे? अपनी कॉपी में उनमें से किसी एक के बचपन के परिवार का पेड़ बनाओ।
- क्या इस परिवार के पेड़ में तुम या तुम्हारे भाई-बहन, माँ-पिताजी कहीं दिखाई दे रहे हैं?
- अब तुम अपने आज के परिवार का पेड़ अपनी कॉपी में बनाओ।
- इस पेड़ में अब तुम कहाँ हो? आज तुम्हारे परिवार में कौन-कौन हैं? तुम्हारे दादी-दादा या नानी-नाना कहाँ हैं?

not to be republished © NCERT

बताओ

तुम्हारे आज के परिवार का पेड़ तुम्हारे दादा, दादी, नाना या नानी के बचपन के पेड़ से किस तरह अलग है?

स्कूल में वापसी

- तुम कहाँ तक पढ़ाई करना चाहते हो?

- तुम्हारे मम्मी-पापा ने कहाँ तक पढ़ाई की है?

- तुम्हारी दादी या नानी को कहाँ तक पढ़ाई करने का मौका मिला था?

- तुम्हारी दादी और नानी की शादी किस उम्र में हुई थी?

- क्या तुमने किसी ऐसे कानून के बारे में सुना है, जो लड़कियों और लड़कों की कम-से-कम किस उम्र में शादी हो, के बारे में बात करता है।

बहुत-सी ऐसी लड़कियाँ हैं, जिनकी शादी 18 साल की आयु से पहले ही कर दी जाती है। इनमें से बहुत-सी लड़कियों को तो स्कूल भी छोड़ना पड़ता है। रंगारेड्डी जिले की सुशीला के समान ऐसी बहुत-सी लड़कियों की सच्ची कहानियाँ हैं, जिन्होंने फिर-से स्कूल जाना शुरू कर दिया। सुशीला को आगे पढ़ने के लिए पंचायत की तरफ़ से भी मदद मिली। पंचायत का कहना था कि बच्चों के लिए खेलना और पढ़ना बहुत ज़रूरी है। उनकी बचपन में ही शादी नहीं करनी चाहिए। आंध्र प्रदेश में लोगों

© NCERT not to be republished

का एक समूह विशेष कैंप लगाता है। इस कैंप द्वारा कम उम्र की शादीशुदा लड़कियों को फिर से स्कूल भेजने में मदद की जाती है। जंगम्मा और चिट्टी कहती हैं, "हम पढ़ना चाहती हैं और अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हैं।"

पता करो और लिखो

- क्या तुम्हारे आस-पास कुछ ऐसे बच्चे हैं, जिनका स्कूल छूट गया है। बात करके पता करो कि क्या वे फिर से पढ़ना चाहते हैं?

  ____

  ____

- वे आजकल क्या कर रहे हैं?

  ____

- क्या पिछले दिनों तुम्हारे घर में किसी की शादी हुई है? किसकी?

  ____

- पता करो दूल्हा-दुलहन की उम्र क्या थी?

  ____

- उन्होंने किस तरह के कपड़े पहने हुए थे?

  दुल्हन ____

  दुल्हा ____

- भोजन में क्या-क्या बनाया गया था?

  ____________ ____________ ____________

  ____________ ____________ ____________

अध्यापक के लिए—बच्चों की पढ़ाई बीच में छूटने पर और बाल विवाह कानून जो यह बताता है कि लड़की की शादी की आयु कम-से-कम 18 और लड़के के लिए 21 वर्ष है। इस पर यदि आवश्यक हो तो चर्चा करवाई जा सकती है।

© NCERT not to be republished

पाठ–10

हु तू तू, हु तू तू

0428CH10

हु–तू–तू, हु–तू–तू, हु–तू–तू, हु–तू–तू ...!
आउट, आउट, (पाले के एक तरफ़ खड़ी सभी लड़कियाँ जोर से चिल्लाईं)।
हु–तू–तू, हु–तू–तू, हु–तू–तू ... (इधर से पकड़ो)।
हु–तू–तू, हु–तू–तू ... (पैर से पकड़ो, पैर से, पैर से, इसका पैर पकड़ लो)।
हु–तू–तू, हु–तू–तू ... (वसुधा! इधर आ जा, इधर से पकड़ न)।
अरे, श्यामला का हाथ लाइन को न छुए। हाथ पकड़ लो उसका।
हु–तू–तू, हु–तू–तू। छू ली, छू ली। ओह!
आउट, आऽऽऽऽ, उउउउउउ टटटटट। सब आउट। हो हो हो तुम्हारी तो पूरी टीम आउट हो गई है।

© NCERT not to be republished

क्या कर रही हैं ये लड़कियाँ? 'आउट-आउट' की आवाज़ें आ रही हैं, तो मतलब साफ़ है, कि कोई खेल खेला जा रहा है।

तुम इस खेल को किस नाम से जानती हो? चेडुगुडु, हु-तू-तू, हा-डू-डू, छू किट-किट, कबड्डी या कुछ और?

श्यामला को जब छह लड़कियों ने घेर कर पकड़ लिया, तो सबको लगा, वह तो आउट हो गई। किसी ने उसके पैर दबोचे, किसी ने हाथ, तो किसी ने कमर। पर श्यामला कहाँ छोड़ने वाली थी? घिसट-घिसट कर उसने बीच की लाइन छू ही ली।

श्यामला ने जब बीच की लाइन छुई, तो दूसरे पाले की सारी लड़कियों ने उसको पकड़ा हुआ था। इसलिए वे सारी आउट हो गईं, परंतु रोज़ी बहस करने लगी। उसका कहना था कि श्यामला की तो साँस टूट गई थी, इसलिए उनकी टीम आउट नहीं थी। श्यामला तो अड़ गई कि उसकी साँस नहीं टूटी थी। उसने यह भी पूछा कि अगर

अध्यापक के लिए–इस खेल से बच्चों का ध्यान इस ओर खींचें कि खेल की तरह ही जीवन में भी हम नियम बनाते हैं, ताकि सभी काम सही ढंग से हों। हमारे आपस में मतभेद और झगड़े भी होते हैं और हम इन्हें सुलझाते भी हैं।

© NCERT not to be republished

हु तू तू, हु तू तू

साँस टूट ही गई थी, तो सब उसको इतनी देर तक दबोचे क्यों रहीं। काफ़ी बहस हुई, पर अंत में श्यामला की ही जीत हुई।

- तुम्हारे यहाँ कबड्डी की एक टीम में कितने खिलाड़ी होते हैं?

- श्यामला ने जब बीच की लाइन छुई, तो कितनी लड़कियाँ आउट हुई थीं?

- क्या तुम्हारे पास खेलों के झगड़े निपटाने के तरीके हैं?

कबड्डी का खेल

तो ऐसा ही है, कबड्डी का खेल! है न? खींचा-तानी, ज़ोर-झपट्टा, दम लगाना, चीखना-चिल्लाना, मिट्टी में घिसट जाना। है तो, हो-हल्ले वाला खेल, पर इसमें बहुत सारे नियम भी हैं।

मज़ा भी खूब आता है। कसरत भी पूरी हो जाती है। साँस रोक कर कबड्डी-कबड्डी बोलो और भागो-दौड़ो। साथ में दूसरे पाले के लोगों को छूने की कोशिश भी करो। जितनी देर साँस रोक लोगे, उतनी देर दूसरे पाले में अपना कमाल दिखा पाओगे।

कबड्डी के खेल में शरीर और दिमाग दोनों को ही चलाना पड़ता है। खींचने या रोकने में ताकत लगाओ और साथ ही सोचो कि दूसरी टीम के पाले में किधर से घुसें। कौन है, जिसको जल्दी से छूकर अपने पाले में लौट आएँ। अगर पकड़े गए, तो बीच की लाइन तक कैसे पहुँचें?

अध्यापक के लिए–कई बार बच्चों को खेलों में लिंग, जाति और वर्ग के आधार पर भेदभाव दिखाई देते हैं। इस पर चर्चा करवा सकते हैं।

© NCERT not to be republished

- अपनी साँस रोक कर 'कबड्डी-कबड्डी' बोल कर देखो। कितनी बार बोल पाए?
- क्या कबड्डी खेलते हुए भी इतनी बार ही बोल पाते हो? क्या कोई अंतर है?

अगली बार जब भी कबड्डी खेलो, तब ध्यान देना कि आँख, हाथ और पैर का कितना ज़बरदस्त तालमेल रखना होता है।

- श्यामला ने पूरी टीम को एक बार में ही आउट कर दिया। इसका चित्र कॉपी में बनाकर दिखाओ।
- 'आउट' होना क्या होता है? कबड्डी में कब-कब 'आउट' होते हैं?

- कई खेलों में खिलाड़ी को छूना बहुत ज़रूरी होता है, जैसे–खो-खो के खेल में। छूने से आउट होते हैं, और छूने से ही बारी भी आती है। ऐसे और खेलों के नाम बताओ, जिनमें खिलाड़ी को छूना बहुत ज़रूरी होता है।

- कबड्डी में श्यामला के बीच की लाइन छूने से सब आउट हो गए थे। ऐसे कौन-कौन से खेल हैं, जिनमें बीच की लाइन का महत्त्व होता है?

- ऐसे कौन-से खेल हैं, जिनमें खिलाड़ी के अलावा रंगों या चीज़ों को छूते हैं?

अध्यापक के लिए–बॉक्स में दिया गया यह क्रियाकलाप किसी बड़े या शिक्षक की निगरानी में ही करें।

© NCERT not to be republished

क्या तुम कबड्डी खेलते हो? क्या तुम्हारे स्कूल में लड़कियों की कबड्डी की टीम है?

अच्छा, एक बात बताओ। क्या तुम्हारी दादी और नानी कबड्डी खेलतीं थीं? आज घर जाकर पता करना।

क्या तुम्हारे यहाँ लड़कियाँ कबड्डी या कोई और बाहर खेले जाने वाले खेल खेलती हैं? क्या कुछ लड़कियाँ नहीं खेलती? वे क्यों नहीं खेलतीं – चर्चा करो।

कर्णनम मल्लेश्वरी

क्या तुमने अखबार में इनके बारे में पढ़ा है? कर्णनम मल्लेश्वरी एक वेट लिफ़्टर हैं। ये आंध्र प्रदेश की रहने वाली हैं। इनके पापा पुलिस में हवलदार हैं। जब ये 12 साल की थीं, तभी से वज़न उठाने का अभ्यास करने लगीं थीं। अब वे एक बार में 130 किलोग्राम तक वज़न उठा लेती हैं।

कर्णनम ने भारत के बाहर 29 मेडल जीते हैं। उनकी चार बहनें भी रोज़ वज़न उठाने का अभ्यास करती हैं।

तीन बहनों की कहानी

यह फ़ोटो देखो। लगती हैं न दादी-नानी! पर हैं ये आम दादियों-नानियों से अलग।

यह फ़ोटो है तीन बहनों की—ज्वाला, लीला और हीरा। ये मुंबई में रहती हैं। ये तीनों कबड्डी खेलती थीं और दूसरों को सिखाती भी थीं। ज्वाला बताती हैं, "हम जब छोटे थे तब लोग लड़कियों को यह खेल खेलने नहीं देते थे। लोगों को लगता था कि अगर लड़कियाँ छीना-झपटी वाला खेल खेलेंगी, तो उनसे कोई शादी नहीं करेगा। कबड्डी में लड़कों वाले कपड़े पहनने पड़ते हैं। इसलिए भी लोग खेलने से मना करते थे।"

अध्यापक के लिए—ओलंपिक खेलों मे पदक जीतने वाले खिलाड़ियों के बारे में पता करने के लिए बच्चों को मदद करें।

© NCERT not to be republished

तीनों ही बहनें काफ़ी छोटी थीं, जब उनके पिता की मृत्यु हो गई। उनकी माँ और मामाओं ने तीनों को पाला। दोनों मामा खो-खो और कबड्डी खेला करते थे। उन्हीं से ही यह शौक इन बहनों में भी आया।

ज्वाला और लीला बताती हैं, "आज से करीब पचास साल पहले, जब हमने कबड्डी खेलना शुरू किया था, तो लड़कियों के पास कबड्डी खेलने के मौके नहीं थे। माता-पिता भी मदद नहीं करते थे, लेकिन हम सोचते थे कि लड़कियों को कबड्डी ज़रूर खेलना चाहिए। माँ और मामाओं ने हमें कभी नहीं रोका। हम तीनों ने कबड्डी खेलना सीखा और अपने मोहल्ले की कुछ लड़कियों को भी खेल में शामिल किया। हमने कबड्डी का एक क्लब बनाया, जो आज, इतने सालों बाद भी चल रहा है।"

याद आए वे दिन!

लीला और हीरा अपने मैचों के बारे में बड़े जोश से बताती हैं। कई मैच तो वे बिलकुल हारते-हारते जीतीं, क्योंकि उन्होंने तो मन में ठान ही लिया था कि कभी हार नहीं माननी है। उन मैचों के दौरान कई बड़ी मज़ेदार घटनाएँ भी हुईं। एक बार वे दूसरे शहर में एक बड़ा मैच खेलने गईं थीं। "मैच शाम को 6.30 बजे शुरू होना था। हम 3 से 6 की पिक्चर देखने चले गए। हमने सोचा कि मैच के समय तक तो वापिस पहुँच ही जाएँगे। पिक्चर शुरू हुई ही थी कि हॉल में हल्ला मचने लगा। पता चला कि हमारे मामा हमें ढूँढ़ रहे थे। उनके हाथ में एक टॉर्च थी। वे एक-एक करके सब के चेहरों पर रोशनी डालकर पहचानने की कोशिश कर रहे थे। मामा ने वहीं हॉल में ही हमें खूब ज़ोर से डाँट लगाई।"

उनके जीवन में कबड्डी को लेकर कई कठिनाइयाँ आईं, परंतु कबड्डी का मज़ा कभी कम नहीं हुआ। सबसे छोटी बहन हीरा तो कबड्डी की कोच भी बनी। ये बहनें

अध्यापक के लिए–इन उदाहरणों के द्वारा कक्षा में बच्चों का ध्यान इस ओर दिलाएँ कि कई बार लड़कियों को खेलने के मौके लड़कों के बराबर नहीं मिलते। इस पर चर्चा करवाई जा सकती है। माँ के भाई को मामा कहते हैं। बच्चों से पता करें कि वे अपनी माँ के भाई को क्या कहते हैं।

© NCERT not to be republished

चाहती हैं कि तुम जैसे स्कूल के बच्चे अपनी पसंद के खेल खेलें, और कबड्डी तो खेलें ही।

- क्या तुमने किसी कोच से कोई खेल सीखा है? कौन-सा?

- क्या तुम किसी को जानते हो, जिसने किसी कोच से कोई खेल सीखा हो?

चर्चा करो

- कोच कैसे सिखाते हैं? कोच किस प्रकार अभ्यास करवाते हैं? खिलाड़ियों को कितनी मेहनत करनी पड़ती है?
- क्या तुमने कभी अपनी पसंद के खेल के लिए क्लब बनाने के बारे में सोचा है?
- मान लो, 15 बच्चों को दो टीमों में बँट कर खो-खो खेलना है। दोनों टीमों में सात-सात खिलाड़ी होंगे। एक खिलाड़ी बच जाएगा, नहीं तो टीमें बराबर नहीं हो पाएँगी। ऐसा होने पर तुम क्या करते हो? क्या तुम कभी बीच का बिच्छू बने हो? उसके बारे में बताओ।
- हर खेल में कुछ नियम होते हैं। वह खेल उन नियमों के अनुसार ही खेला जाता है। अगर उन नियमों में कुछ बदलाव कर दिया जाए, तो देखें खेल में क्या बदलाव आता है। जैसे–क्रिकेट में विकेट पर से गुल्लियों के गिरने पर बल्लेबाज़ आउट हो जाता है। सोचो, अगर नियम हो कि एक ही बार में तीनों विकेट गिर जाएँ, तो पूरी टीम ही आउट हो जाएगी। क्या खेल में मज़ा आएगा?
- इस नियम के अनुसार खेलकर देखो। कुछ अलग-अलग खेलों के नियम तुम भी बनाओ और खेल कर देखो।

© NCERT not to be republished

पाठ-11
फुलवारी

0428CH11

उत्तराखंड में पहाड़ों के बीच में एक ऐसी ही जगह है, जहाँ फूल-ही-फूल होते हैं। यह 'फूलों की घाटी' कहलाती है। कहीं झाड़ियों में लगे लाल फूल नज़र आते हैं, तो कहीं पत्थरों के बीच, सफ़ेद फूल झाँकते हुए मिलते हैं। पीले-पीले फूलों के लंबे-चौड़े कालीन जैसे मैदान भी हैं। और कहीं-कहीं अचानक घास के बीच छोटे-छोटे तारों जैसे नीले फूल दिखाई देते हैं। यह सब सपने जैसा लगता है न? हाँ, इस घाटी में भी इतने सारे फूल साल में कुछ ही हफ़्तों के लिए खिलते हैं।

आँखें बंद करके कल्पना करो कि तुम भी ऐसी ही किसी जगह पर पहुँच गए हो। कैसा लगा? कौन-कौन सा गाना गाने का दिल चाह रहा है? तुम उनमें से कुछ गाकर सुनाओ।

- क्या तुमने कहीं बहुत सारे फूल लगे देखे हैं? कहाँ?

- तुमने कितने रंगों के फूल देखे हैं? उनके रंगों के नाम लिखो।

- किस-किस रंग के फूल देखे हैं? गिनती ही करते रह गए न?

© NCERT not to be republished

क्या तुम्हारे घर में कुछ ऐसी चीज़ें हैं, जिनपर फूलों के डिज़ाइन बने हों, जैसे– कपड़े, चादर, फूलदान आदि?

- नीचे एक खाने में एक सुंदर-सा डिज़ाइन बना है।

यहाँ दिखाए गए डिज़ाइन को 'मधुबनी' कहते हैं। यह चित्रकला बहुत पुरानी है। पता है इस चित्रकला का नाम मधुबनी क्यों पड़ा? बिहार में मधुबनी नाम का एक ज़िला है। त्योहारों और खुशी के मौकों पर वहाँ घर की दीवारों पर और आँगन में इस तरह के चित्र बनाए जाते हैं। यह चित्र पीसे हुए चावल के घोल में रंग मिलाकर बनाए जाते हैं। ये रंग भी खास तरह के होते हैं। इन्हें बनाने के लिए नील, हल्दी, फूल-पेड़ों के रंग आदि को इस्तेमाल में लाया जाता है। चित्रों में इंसान, जानवर, पेड़, फूल, पंछी, मछलियाँ और अन्य कई जीव-जंतु साथ में बनाए जाते हैं।

अपने-आप कोई डिज़ाइन बनाकर रंग भरो।

- अपने दोस्तों के बनाए डिज़ाइन भी देखो।

अध्यापक के लिए–बच्चों को नक्शे में उत्तराखंड ढूँढ़ने के लिए प्रेरित करें।

© NCERT not to be republished

फूलों की दुनिया

तुम नीचे दिए गए फूलों में से जिनको पहचानते हो, उन पर (✓)निशान लगाओ। अगर पता हो, तो उनके नाम चित्र के नीचे लिखो।

- ऊपर दिए गए फूलों में से और जिन फूलों को तुम जानते हो, उनमें से दो फूलों के नाम बताओ जो–
  - पेड़ों पर लगते हैं ________ ________
  - झाड़ियों पर लगते हैं ________ ________

© NCERT not to be republished

- बेल पर लगते हैं _____ _____
- पानी के पौधों पर उगते हैं _____ _____
- सिर्फ़ रात में खिलते हैं _____ _____
- दिन में खिलते हैं, रात में बंद हो जाते हैं _____ _____
- जिनको तुम आँखें बंद करके भी खुशबू से पहचान सकते हो _____ _____
- जो किसी खास महीने में ही लगते हैं _____ _____
- जो साल भर खिलते हैं _____ _____

क्या ऐसे पेड़-पौधे भी हैं, जिन पर फूल कभी नहीं आते। पता करके लिखो।

यह क्यों?

- क्या तुमने इस तरह की तख्ती कहीं लगी देखी है?
- क्या तख्ती लगी होने के बाद भी लोग फूल तोड़ लेते हैं?
- तुम्हें क्या लगता है, वे ऐसा क्यों करते हैं?
- क्या उन्हें ऐसा करना चाहिए?
- अगर सब लोग ऐसा करने लगें, तो क्या होगा?

© NCERT not to be republished

चलो पास से देखें

जो बच्चे फूल ला सकते हैं, वे कक्षा में एक-दो फूल लाएँ। ध्यान रहे कि पेड़-पौधों से गिरे हुए फूल ही इकट्ठे करने हैं। तोड़ने नहीं हैं। तीन-चार बच्चों के समूह बनाओ और किसी एक फूल को ध्यान से देखो और लिखो–

- फूल किस रंग का है?

- इसकी खुशबू कैसी है?

- आकार कैसा है? घंटी जैसा, कटोरी जैसा, ब्रुश जैसा या कुछ और?

- क्या ये फूल गुच्छे में हैं?

- इसकी पँखुड़ियाँ कितनी हैं?

- पँखुड़ियाँ आपस में जुड़ी हैं या अलग-अलग हैं?

- पँखुड़ियों के बाहर क्या तुम्हें हरी पत्ती जैसा कुछ नज़र आ रहा है? ये कितने हैं?

- पँखुड़ियों के अंदर, बीच में क्या कुछ पतली सी चीज़ें दिखाई दे रही हैं? ये किस रंग की हैं?

© NCERT not to be republished

- उनको छूने से क्या कुछ पाउडर जैसा हाथ में लग रहा है?

खिलती कलियाँ!

तुमने कलियाँ भी देखी होंगी। अगर स्कूल में या घर के आस-पास कहीं फूल के पौधे हों, तो उनकी कलियाँ भी देखो।

- कली और फूल में क्या-क्या अंतर है?

- किसी पौधे की कली एवं उसके फूल का चित्र अपनी कॉपी में बनाओ।
- क्या तुम बता सकते हो कि एक कली कितने दिनों में खिलकर फूल बनती होगी? चलो जानने की कोशिश करें।
  - किसी एक पौधे पर लगी कली चुनो और उसे रोज़ देखो। उस पौधे का नाम भी लिखो।
  - जब तुमने कली देखी, तो तारीख _____ थी और वह कली जब फूल बनी तो तारीख थी _____। कली को फूल बनने में कितने दिन लगे?
  - अपने दोस्तों से पूछो, उन्होंने कौन-कौन से फूल देखे? उनकी कलियों को फूल बनने में कितना समय लगा?
  - तुम यह भी देख सकते हो कि वह फूल कितने दिनों में मुरझाया?

© NCERT not to be republished

इतने सारे इस्तेमाल!

खाए भी जाते हैं फूल!

तुमने फूलों का कहाँ-कहाँ इस्तेमाल देखा है? क्या तुम जानते हो फूल खाए भी जाते हैं? बहुत से फूलों की सब्ज़ी बनती है।

उत्तर प्रदेश में रहने वाली फिरोज़ा और नीलिमा को कचनार के फूलों की सब्ज़ी बहुत पसंद है।

केरल की यामिनी अपनी अम्मा से केले के फूलों की सब्ज़ी बनाने की फ़रमाइश करती है।

महाराष्ट्र की ममता और ओमर को सहजन के फूलों के पकौड़े बहुत पसंद हैं।

- क्या तुम्हारे घर में भी किसी फूल की सूखी सब्ज़ी, सालन (तरीदार सब्ज़ी) या चटनी बनाई जाती है? पता करो, कौन-से फूलों की?

दवाई में भी!

बहुत-सी दवाइयों में भी फूलों का इस्तेमाल होता है।

- किन्हीं दो फूलों के नाम पता करो, जो दवाइयों में इस्तेमाल होते हैं?

_____ _____

- तुम्हारे यहाँ गुलाब जल कहाँ-कहाँ इस्तेमाल होता है? दवाई में, मिठाइयों में, लस्सी में या कहीं और? पता करो और कक्षा में एक-दूसरे को बताओ।

खुशबू और रंग

बहुत-से फूलों, जैसे–गुलदावरी, ज़ीनिया से रंग भी बनाए जाते हैं। उन रंगों से कपड़े भी रंगे जाते हैं।

© NCERT not to be republished

- तुम ऐसे और फूलों के नाम पता करो, जिनसे रंग बनता है।

- क्या तुम ऐसा कोई रंग सोच सकते हो, जिस रंग का कोई फूल ही न होता हो?

- ऐसे कुछ फूलों के नाम लिखो, जिनसे तुम्हें लगता है इत्र बनाया जाता होगा।

तुमने दादी-माँ के कुछ नुस्खों के बारे में तो सुना होगा, जिनमें फूलों का इस्तेमाल होता है। यहाँ पर एक नुस्खा दिया है, जिसमें गुलाब जल का इस्तेमाल किया गया है।

दादी माँ का नुस्खा

गुलाब जल और ग्लिसरीन बराबर मात्रा में मिलाकर शीशी में भर लो। इसमें कुछ बूँदें नींबू की डालो। इसके इस्तेमाल से सर्दी में त्वचा नहीं फटती।

क्या तुमने कभी इत्र की शीशी खुलने पर उसकी खुशबू का मज़ा लिया है। क्या तुम जानते हो – इत्र की एक छोटी-सी शीशी भी बहुत सारे फूलों से बनती है।

उत्तर प्रदेश का कन्नौज ज़िला इत्र के लिए मशहूर है। यहाँ पर पास के इलाकों से ट्रकों में भर कर फूल लाए जाते हैं। फिर उनसे इत्र, गुलाब जल और केवड़ा तैयार किया जाता है। कन्नौज में इस काम में हज़ारों लोग लगे हुए हैं।

अध्यापक के लिए–बच्चों को नक्शे में उत्तर प्रदेश, केरल और महाराष्ट्र ढूँढ़ने को कहें। बच्चों को बताएँ कि इत्र फूलों का शुद्ध अर्क होता है।

© NCERT not to be republished

और कहाँ-कहाँ इस्तेमाल

- क्या तुमने कभी फूलों पर कोई गीत पढ़ा या सुना है? इस गीत को गाओ।

"अच्छी मालन, मेरे बन्ने का बना ला सेहरा,
बागे जन्नत गई मालन मेरी फूलों के लिए,
फूल न मिलें तो कलियों का बना ला सेहरा।"

बताओ

- क्या तुम बता सकते हो कि ऊपर दिया गया गीत कब गाया जाता होगा?
- क्या तुम्हें या घर में किसी और को ऐसे गीत आते हैं?
- फूलों के बारे में गीत, कविता आदि इकट्ठी करो। उनको कागज़ पर लिखकर कक्षा में लगाओ।
- कुछ त्योहारों अथवा अवसरों पर क्या तुम्हारे घर के बड़े कोई खास तरह के फूल इस्तेमाल करते हैं? पता करो और तालिका में लिखो।

त्योहार/अवसर	खास फूल का नाम

अध्यापक के लिए–बन्ना-दूल्हा। बच्चों से पूछें कि उनके इलाके में 'बन्ने' को क्या कहते हैं?

© NCERT not to be republished

हाँ भई! अगर इतने सारे इस्तेमाल होंगे, तो बहुत सारे फूल भी तो चाहिए। बहुत जगह फूलों की खेती होती है। मीलों तक फैले हुए फूलों के खेत। सोचो, कितने सुंदर लगते होंगे!

कुछ और जानें

क्या तुमने कहीं पर किसी को फूल बेचते देखा है? यदि तुम्हारे आस-पास कहीं कुछ लोग फूल बेचते हैं, तो उनसे ये सवाल पूछो और लिखो–

- वे कौन-कौन से फूल बेचते हैं? उनमें से तीन फूलों के नाम पूछकर लिखो।

- वे ये फूल कहाँ से लाते हैं?

- लोग किस-किस काम के लिए फूल खरीदते हैं?

- वे फूल किस-किस तरह से बेचते हैं? नीचे उन पर निशान लगाओ।

© NCERT not to be republished

और किस तरह से

- क्या तुमने धार्मिक स्थलों पर फूलों की भेंट करते हुए देखा है?
- सूखने पर हम उनका क्या करते हैं?
- तुम इन्हें कैसे इस्तेमाल करोगे?
- कुछ फूलों का अलग-अलग तरह से इस्तेमाल होता है, जैसे-गेंदा और गुलाब के फूल, खुले और माला दोनों ही तरह से इस्तेमाल होते हैं।
  - अलग-अलग रूपों में फूलों के दाम पता करो और लिखो।
  - एक माला _____
  - एक गुलदस्ता _____
  - एक फूल _____
  - क्या इन फूल बेचने वालों ने गुलदस्ता या फूलों की चादर बनाना किसी से सीखा है? किससे?

    _____

    _____
  - क्या वे चाहेंगे कि उनके परिवार के और लोग भी यह काम करें? क्यों?

    _____

© NCERT not to be republished

चलो यह करें

तुम पाँच या छह के समूह में बँटकर यह कर सकते हो।

- पेड़-पौधों से गिरे हुए फूलों को इकट्ठा करो और क्लास में लाओ।
- इन फूलों को पुराने अखबार के पन्नों के बीच में ठीक से फैला कर रखो।
- हर परत में फूल इस तरह रखना कि एक-दूसरे से चिपके नहीं।
- अब इस अखबार को किसी भारी चीज़ से दबा कर दस-पंद्रह दिन के लिए एक ही जगह रखा रहने दो।
- इसके बाद फूलों को ध्यान से निकालो और किसी पुरानी कॉपी या पुराने अखबार में चिपकाओ। इन फूलों को पन्नों पर अलग-अलग तरीके से चिपकाया जा सकता है।
- तुम इन सूखे हुए फूलों से सुंदर कार्ड भी बना सकते हो।

अपने मनपंसद फूल का चित्र बनाओ और नीचे फूल का नाम लिखो :

अध्यापक के लिए–बच्चों को नज़दीक से फूलों को देखने के लिए प्रेरित करें। फूलों को अलग-अलग गुणों, जैसे-रंग, पत्तियाँ, गुच्छेदार या खुले, इत्यादि के आधार पर समूहीकरण करने में मदद करें।

© NCERT not to be republished

0428CH12

पाठ-12
कैसे-कैसे बदले घर

मैं हूँ चेतनदास। सालों पहले मैं तुम्हारे जैसे छोटे-छोटे बच्चों को पढ़ाता था। आजकल अपने बीते हुए दिनों के बारे में लिखता हूँ। आज मैं तुम्हें अपने बारे में बताता हूँ।

एक बड़ा बदलाव

बात तब की है, जब मैं नौ वर्ष का था। समझो लगभग साठ साल पहले। उस समय हम डेरा गाज़ीखान में रहते थे। अब वह जगह पाकिस्तान में है। आस-पास बहुत गड़बड़ हो रही थी, पर उस समय मुझे कुछ भी समझ में नहीं आया था। बस, बाबा ने बताया कि हमें अपना गाँव छोड़कर दूसरी

अध्यापक के लिए–इस पाठ को शुरू करने से पहले बच्चों को अँग्रेज़ों से भारत की आज़ादी और देश के बँटवारे के इतिहास के बारे में बताया जा सकता है। नक्शे में भारत और पाकिस्तान दिखाएँ।

© NCERT not to be republished

जगह जाना है। मुझे अपना घर, अपना गाँव छोड़ना बिलकुल भी अच्छा नहीं लगा था। वहीं तो थे मेरे सारे दोस्त! मैं, बाबा, अम्मा, मेरे तीन छोटे भाई-बहन और आस-पास के बहुत सारे लोग रेलगाड़ी में बैठकर दिल्ली आ गए। लोग बातें करते थे कि हमारा देश दो हिस्सों में बँट गया है—भारत और पाकिस्तान। भारत में रहने वाले बहुत सारे लोग भी पाकिस्तान चले गए थे। हम कुछ दिन कैंप में रहे। कैंप एक बड़े से मैदान में बड़े-बड़े तंबू लगाकर बना था।

एक नई शुरुआत

एक दिन बाबा ने बताया कि हमें सोहना गाँव में ज़मीन मिली है। अब हम वहीं अपना घर बनाएँगे। मैं बहुत खुश था। बाबा और अम्मा ने मिलकर घर बनाया। हम बच्चे भी कहाँ पीछे रहने वाले थे! बाबा ने पास से ही मिट्टी खोदी। हमने परात भर-भर कर माँ को पकड़ाई। गुड़िया ने अम्मा के साथ मिलकर उसमें भूसा मिलाया। बाबा ने दीवारें बनाईं।

हम आस-पास के घरों से गोबर ले आए। अम्मा ने उसे मिट्टी में मिलाया और ज़मीन पर लिपाई की। बिलकुल वैसे ही, जैसे वे पुराने घर में करती थीं। अम्मा कहतीं थीं कि इससे मिट्टी में कीड़ा नहीं लगता।

© NCERT not to be republished

बस अब छत बनानी रहती थी। बाबा ने लकड़ी के फट्टे जोड़-जोड़ कर एक फ्रेम बनाया और उसे चारों दीवारों पर टिका दिया। लकड़ी को दीमक न लग जाए, इसके लिए नीम और कीकर की लकड़ियाँ इस फ्रेम पर बिछा दीं। अम्मा ने पुरानी बोरियाँ इस पर बिछा कर मिट्टी से लेप कर दिया।

आस-पास के ज़्यादातर सभी घर ऐसे ही बने थे। पर मुझे अपना घर सबसे अच्छा लगता था—वह बिलकुल हमारे पुराने घर जैसा जो था।

पता करो और लिखो

- अपने घर में दादा-दादी या उनकी उम्र के किसी बड़े व्यक्ति से पता करो कि जब वे 8-9 वर्ष के थे, तब —
  - वे किस जगह/शहर में रहते थे?
  - उनका घर किन-किन चीज़ों से बना था?
  - क्या उनके घर के अंदर टॉयलेट था? अगर नहीं, तो कहाँ बना था?
  - उनके घर में खाना कहाँ बनता था?
  - चेतनदास का घर बनाने में मिट्टी का भरपूर इस्तेमाल हुआ। क्यों?

अध्यापक के लिए—सोहना गाँव हरियाणा में है। बच्चों को नक्शे में हरियाणा ढूँढ़ने को कहें। उनका ध्यान इस ओर दिलाया जा सकता है कि सोहना गाँव के अधिकतर घर बनाने में, आस-पास आसानी से मिलने वाली चीज़ें इस्तेमाल हुई थीं। आस-पास मिलने वाली इन चीज़ों और उनके इस्तेमाल पर कक्षा में चर्चा करें।

© NCERT not to be republished

मकान में बदलाव

समय बहुत जल्दी बीत गया। मेरी पढ़ाई पूरी हो गई और नौकरी भी लग गई। अम्मा-बाबा चाहते थे कि मैं शादी कर लूँ। सोचा, शादी से पहले घर की थोड़ी मरम्मत करवा लें। एक कमरा और डलवा लें। शहर में सीमेंट का बहुत चलन था। कहते थे, इससे मकान में बहुत मज़बूती रहती है। मैंने, बाबा और अम्मा की सलाह से नए कमरे की छत लोहे और सीमेंट से पक्की बनवाई।

बाज़ार में तब कच्ची ईंटें भी मिलती थीं। कमरे की दीवारें हमने इन ईंटों से बनवा लीं। इससे यह फ़ायदा हुआ कि इन्हें हर हफ़्ते लीपना नहीं पड़ता था। साल में एक बार इन दीवारों की चूने से पुताई कर लेते थे। हमने आँगन में छोटी-सी पक्की रसोई भी बनवाई। उसमें एक तरफ़ मिट्टी का चूल्हा बना था और दूसरी तरफ़ बरतन रखने की जगह।

फिर मेरी शादी हो गई। मेरी पत्नी सुमन इसी घर में दुलहन बनकर आई थी। वह रसोई में नीचे बैठकर रोटियाँ पकाती और पूरा परिवार चटाई पर बैठकर एक साथ खाना खाता। सच, वे दिन भी क्या दिन थे!

गाँव के लोग तब टॉयलेट के लिए खेतों में जाते थे। कुछ लोगों ने इसके लिए घर में ही इंतज़ाम किया हुआ था। हमने भी वैसा ही किया। पिछवाड़े में कच्ची ईंटें लगाकर एक छोटा-सा टॉयलेट बनवा लिया।

अध्यापक के लिए–बच्चों को बड़ों से उनके समय के शौचालयों के बारे में जानने के लिए प्रेरित करें।

© NCERT not to be republished

- चेतनदास बताते हैं कि टॉयलेट की सफ़ाई और मल-मूत्र उठाने के लिए बस्ती से लोग आते थे।
  - जो लोग टॉयलेट का उपयोग करते थे, वे ही उसे साफ़ क्यों नहीं करते थे? चर्चा करो।
  - क्या तुम्हारे घर में टॉयलेट है? उसे कौन साफ़ करता है?

और भी बदलाव

मेरे दो बेटे और एक बेटी उसी घर में पैदा हुए। समय कैसे बीतता गया, पता ही नहीं चला। बच्चों की पढ़ाई पूरी हो गई। पंद्रह साल पहले हमने बेटी सिम्मी की शादी पलवल में कर दी। जब राजू की शादी की बात चली, तो सभी को लगा कि नई दुलहन के आने से पहले पूरे घर को पक्का करा लें।

तब तक हमारे गाँव में पक्की ईंटों का चलन शुरू हो चुका था। इसलिए दीवारें पक्की ईंटों से बनवाईं और छत पर लेंटर डलवा लिया। फ़र्श भी मार्बल के दाने और सीमेंट से पक्का बनवा लिया। टॉयलेट में भी ऐसा इंतज़ाम करा दिया कि मल-मूत्र पाइपों से बाहर निकल जाए। रसोईघर पहले से बड़ा करवाया। राजू की बहू अब बैठकर मिट्टी के चूल्हे पर नहीं बल्कि खड़े होकर गैस-स्टोव पर खाना बनाती है।

अध्यापक के लिए—बच्चों से पूछा जा सकता है कि वे दूसरों से टॉयलेट साफ़ करवाने के बारे में क्या सोचते हैं। क्या वे ऐसी किसी जगह के बारे में जानते हैं, जहाँ आज भी ऐसा होता है।

© NCERT not to be republished

नई-नई चीज़ें

मेरे छोटे बेटे मोन्टू की जब नौकरी लगी, तो वह दिल्ली जाकर बस गया। अब उसका पूरा परिवार दिल्ली में ही रहता है। मैं और सुमन कभी मोन्टू के पास दिल्ली में रहते हैं, तो कभी राजू के पास सोहना में। मैं सोहना से जब दिल्ली जाता हूँ, तो रास्ते में गुरुग्राम शहर पड़ता है। मेरे देखते-ही-देखते, इतने सालों में यहाँ कितनी सारी बड़ी-बड़ी इमारतें बन गई हैं और वे भी कितनी ऊँची-ऊँची!

कुछ साल पहले राजू ने दोबारा टॉयलेट बनवाया। उसने बाथरूम में रंगीन टाइलें भी लगवा लीं। नहाने की जगह पर फ़िज़ूल इतना पैसा खर्च किया।

मैं अब 70 वर्ष का हूँ। इतने सालों में मैंने अपने घर में ही कितने बदलाव देखे हैं। पता नहीं, मेरे पोता-पोती बड़े होकर कहाँ रहना चाहेंगे और कैसा होगा उनका घर! पता नहीं, डेरा गाज़ीखान में अब कैसे मकान होंगे! मेरे सभी दोस्त भी कहाँ होंगे?

- तुम्हारा अपना मकान किन-किन चीज़ों से बना है?

- पता करो तुम्हारे दोस्त का मकान किन-किन चीज़ों से बना है? दोनों में क्या कोई अंतर है? लिखो।

- तुम्हारे अनुसार चेतनदास जी के पोता-पोती बड़े होकर कैसे मकान में रहेंगे?

© NCERT not to be republished

- तुम बड़े होकर कहाँ और कैसे मकान में रहना पसंद करोगे?

- तुमने अपने दादा-दादी या उनकी उम्र के किसी बड़े व्यक्ति के बचपन के समय मकान बनाने में इस्तेमाल हुई चीज़ें लिखी थीं। क्या उनमें से कुछ चीज़ें तुम्हारा घर बनाने में भी इस्तेमाल हुई हैं? कौन-कौन सी?

चित्र को देखो। इनमें से कुछ लोगों को इनके काम के अनुसार खास नाम से बुलाया जाता है, जैसे–लकड़ी का काम करने वाले को बढ़ई कहते हैं।

- तुम्हारे यहाँ लकड़ी का काम करने वालों को क्या कहते हैं?

चित्र को देखकर तालिका में लिखो, लोग क्या-क्या काम कर रहे हैं? वे किन-किन औज़ारों का इस्तेमाल कर रहे हैं?

© NCERT not to be republished

काम	औज़ार	किस नाम से बुलाया जाता है?
1. 2. 3. 4.		

क्या तुम अपने आस-पास ऐसे लोगों को जानते हो, जो ऐसे कामों से जुड़े हैं? उनसे बात करके उनके काम के बारे में जानो। इसके बारे में अपने दोस्तों से चर्चा करो।

- अपनी अध्यापिका या घर वालों के साथ, किसी ऐसी जगह जाओ, जहाँ कोई बिल्डिंग बन रही हो। वहाँ काम कर रहे लोगों से बात करो और इन प्रश्नों के उत्तर पता करके लिखो–
  - वहाँ क्या बन रहा है?
  - वहाँ कितने लोग काम कर रहे हैं?
  - वे क्या-क्या काम कर रहे हैं?
  - वहाँ कितनी औरतें और कितने आदमी हैं?

अध्यापक के लिए–तुम्हारे स्कूल के आस-पास यदि कोई इमारत या मकान बन रहा हो, तो वहाँ बच्चों को ले जाया जा सकता है। वहाँ पर काम करने वाले लोगों से बातचीत भी करवाइए।

© NCERT not to be republished

- क्या वहाँ बच्चे भी थे? क्या वे भी काम कर रहे हैं?

- काम कर रहे लोगों को रोज़ के कितने रुपये मिलते हैं? किन्हीं तीन लोगों से पूछो।

- काम कर रहे लोग कहाँ रहते हैं?

- जो बिल्डिंग बन रही है, उसे बनाने में क्या-क्या चीज़ें इस्तेमाल हो रही हैं?

- पूरी बिल्डिंग बनने में अंदाज़ से कितने ट्रक ईंटें और कितनी सीमेंट की बोरियाँ लगेंगी?

- बिल्डिंग बनाने का सामान किन-किन वाहनों में भरकर आता है—ट्रक, रेहड़ी या किसी और तरह? सूची बनाओ।

- इनकी कीमत पता करो—

  एक बोरी सीमेंट

  एक पक्की ईंट

  एक बड़ा ट्रक रेत

अध्यापक के लिए—अगर हो सके, तो जहाँ इमारत बन रही है, वहाँ बच्चों को ले जाएँ या वहाँ काम कर रहे कुछ लोगों को अपने स्कूल में बुलाएँ। उनके काम और औज़ारों के बारे में उनसे बातचीत करें।

© NCERT not to be republished

- अपनी मर्ज़ी से कुछ और प्रश्न पूछकर उनके उत्तर लिखो।
  - _____
  - _____

- साठ सालों में चेतनदास का मकान बनाने में जिन-जिन चीज़ों का इस्तेमाल हुआ, उन्हें सही क्रम से लिखो–

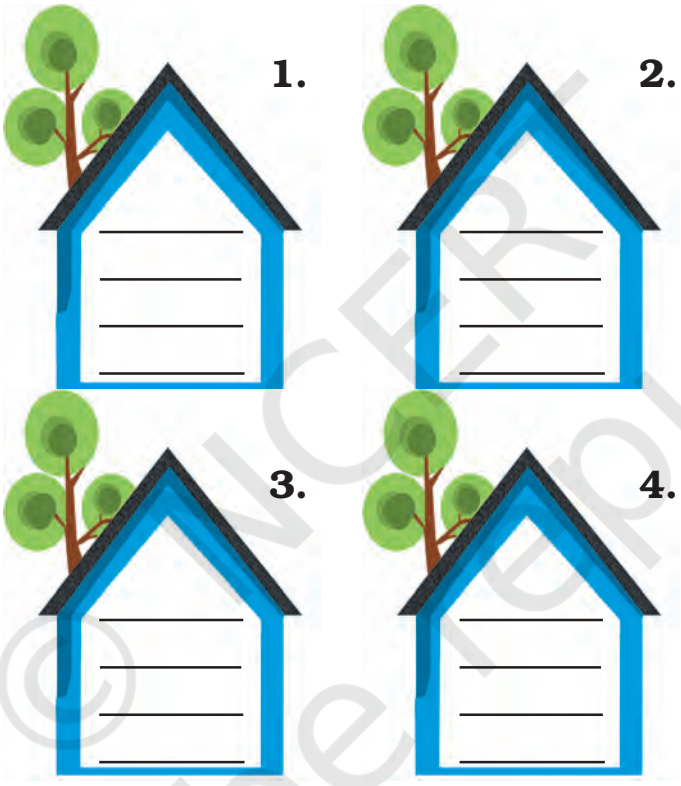

आओ घर बनाएँ

- कक्षा के बच्चे 3-4 समूह में बँट जाएँ। हर समूह अलग-अलग तरह के मकान का मॉडल बनाएं। तुम इन चीज़ों का इस्तेमाल कर सकते हो–मिट्टी, लकड़ी, कपड़ों के टुकड़े, जूते के डिब्बे, रंगीन कागज़, माचिस की डिब्बी और रंग।
- सभी घरों को एक साथ रख कर एक बस्ती बनाओ।

© NCERT not to be republished

0428CH13

पाठ–13
पहाड़ों से समुंदर तक

नदी के चित्र को ध्यान से देखो और नीचे दिए गए शब्दों को पढ़ो।

नाव, बहता पानी, नीला, मछलियाँ, पानी के पौधे, नदी, बड़ा जहाज़, तेल, नदी के किनारे, बदबू, फ़ैक्ट्रियाँ, जानवर, कपड़े धोना, दूसरे काम, बदलाव, शहर।

चित्र और शब्दों की मदद से एक कहानी लिखो। अपनी कहानी के लिए कोई नाम भी सोचो।

not to be republished

फिर से चित्र को देखो और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखो–

- जहाँ से नदी निकलना शुरू हो रही है, वहाँ पानी का रंग कैसा है?

- नदी में मछलियाँ कहीं ज़्यादा हैं, कहीं कम। कहीं-कहीं तो मछलियाँ मरी हुई हैं। ऐसा क्यों हुआ होगा? चर्चा करो।

- गाँव में पहुँचने से पहले, नदी में क्या-क्या दिखाई दे रहा है?

- नदी के पानी का रंग कहाँ-कहाँ बदला? यह क्यों बदला? चर्चा करो।
- चित्र में दिखाई गई जगहों में से तुम किस जगह रहना पसंद करोगे? क्यों?

- चित्र में जो कुछ हो रहा है, उसमें क्या तुम कुछ बदलना चाहोगे? क्या और कैसे? चर्चा करो।

- क्या तुम ने लोगों को विभिन्न चीजें नदियों या जलाशयों में डालते देखा है?
- नदियों को साफ रखने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है?

© NCERT not to be republished

- अगर तुम्हें पानी पीना हो, तो नदी के कौन-से हिस्से का पानी पीना चाहोगे? क्यों?

- चित्र के आखिर में नदी समुद्र में मिल गई। क्या तुमने कभी समुद्र देखा है? कहाँ? फ़िल्म में या और कहीं?

- क्या तुम कभी किसी नदी या समुद्र के पास गए हो? कब?

- अपने हाथों से करके दिखाओ कि समुद्र की लहरें कैसे उठती हैं।

- क्या समुद्र का पानी पीया जा सकता है? क्यों?

- क्या पूरे साल में नदी, तालाब और झरनों के पानी में कुछ बदलाव होते हैं? किस तरह के बदलाव होते हैं? चर्चा करो।

© NCERT not to be republished

- बरसात के मौसम में जितना पानी तालाब या नदी में होता है, क्या उतना ही पानी गर्मी के दिनों में भी रहता है?

- अपने गाँव या शहर के आस-पास की नदी, झील या तालाब के बारे में जानकारी इकट्ठी करो।
  - क्या उसके पानी में सर्दी, गर्मी या बरसात के महीनों में कुछ बदलाव होते हैं?
  - उसमें किस-किस तरह के पानी के जानवर दिख रहे थे?
  - उसके आस-पास किस तरह के पेड़-पौधे उगते हैं?
  - वहाँ कौन-सी तरह के पक्षी आते हैं?
  - क्या तुमने कभी बाढ़ के बारे में सुना या पढ़ा है? कहाँ?
  - जब बाढ़ आती है, तब क्या होता है?
  - क्या तुमने नदी या तालाब में गंदा पानी देखा है? किस जगह?
  - तुम कैसे जानोगे कि पानी गंदा है? अगर पानी देखने में साफ़ हो, तो क्या यह ज़रूरी है कि वह पीने के लिए भी ठीक होगा? चर्चा करो।

© NCERT not to be republished

पानी गंदा कैसे हो जाता है?

तुमने चित्र में देखा कि जहाँ-जहाँ से नदी बहती गई, वहाँ-वहाँ किनारे पर बसे हुए गाँवों और शहरों के लोगों ने नदी के पानी का अलग-अलग तरह से उपयोग किया, जैसे-कपड़े धोना, जानवरों को नहलाना और बर्तन धोना। इन सब के कारण नदी शुरू में जैसी थी, वैसी नहीं रही। नदी का पानी जैसे-जैसे शुरुआत से आगे बढ़ा, वैसे-वैसे लगातार बदलता रहा। ऐसे ही कारणों से तालाबों और झीलों का पानी भी गंदा हो सकता है।

तुम जो पानी पीते हो, वह कहाँ से आता है? किसी नदी या तालाब से? क्या उस तालाब या नदी के साथ भी वही हो सकता है, जो हमारे चित्र की नदी के साथ हुआ?

करके देखें

- इस गतिविधि के लिए हमें कुछ सामान घर से लाना होगा। तुम्हारी रसोई में ये सब चीज़ें मिल जाएँगी।

  नमक, चीनी, हल्दी, आटा, खाने का सोडा और दाल (हर चीज़ आधा चम्मच)।

  नींबू का रस, साबुन का पानी, शरबत, तेल (सभी चीज़ें लगभग एक चम्मच)।

  5 या 6 गिलास या बोतलें।

अब तुम्हें क्या करना है?

सभी गिलासों या बोतलों को पानी से आधा भर लो। ध्यान रहे, सब में बराबर पानी हो। अब हर बरतन में एक-एक चीज़ डालो, जैसे–एक बरतन में हल्दी, दूसरे में तेल, तीसरे में खाने का सोडा। हर चीज़ को पानी में अच्छी तरह से मिलाओ और देखो क्या होता है। फिर दी गई तालिका भरो।

© NCERT not to be republished

तुमने क्या देखा? सही जगह पर (✓) का निशान लगाओ।

चीज़ें	पानी में घुला	पानी में नहीं घुला	पानी का रंग बदला	पानी का रंग नहीं बदला
चीनी				
नमक				
नींबू का रस				
हल्दी				
साबुन का पानी				
आटा				
दाल				
शरबत				
खाने का सोडा				
तेल (सरसों, तिल या कोई और)				

तुमने जो देखा उसके आधार पर बताओ–

- क्या सभी चीज़ें पानी में घुल जाती हैं?
- क्या पानी का रंग हमेशा बदलता है?
- क्या तेल पानी में घुल गया?

तुम कैसे कह सकते हो कि यह घुला या नहीं? कुछ चीज़ें पानी में घुलने पर भी पानी का रंग नहीं बदलता। क्या हम कह सकते हैं कि वे पानी में नहीं हैं?

सोचो, अगर कुछ चीज़ें पानी में घुलें ही नहीं, जैसे–शक्कर, नमक, शरबत, नींबू का रस आदि, तो क्या होगा?

© NCERT not to be republished

सोचो, अगर सब चीज़ें पानी में घुल जाएँ, जैसे-पत्थर, प्लास्टिक, चॉक, कूड़ा कचरा आदि, तो क्या होगा?

बहुत सारी चीज़ें पानी में आसानी से घुल जाती हैं। इनमें से कई चीज़ें हमारे शरीर के लिए हानिकारक हो सकती हैं। इसलिए पीने से पहले पानी साफ़ करना ज़रूरी है। पानी साफ़ करने का सबसे अच्छा तरीका है, पानी को उबालना। अगर किसी कारण से यह करने में कठिनाई हो, तो क्या तुम पानी साफ़ करने का कोई और तरीका सोच सकते हो?

- तुम्हारे घर में पीने का पानी कैसे साफ़ किया जाता है?
- पानी को साफ़ करने के अलग-अलग तरीकों के बारे में पता करो।
- इन तरीकों में से किन्हीं दो के चित्र बनाओ।

© NCERT not to be republished

0428CH14

पाठ–14

बसवा का खेत

मैं हूँ बसवा। मैं कर्नाटक के बेलवनिका गाँव में रहता हूँ। मेरे अप्पा किसान हैं। जुलाई का महीना है। हर बार की तरह इस बार भी, अप्पा प्याज़ की फ़सल उगाने की तैयारी में हैं। खेती करने के लिए अप्पा को कितने सारे काम करने पड़ते हैं। जब ज़रूरत पड़ती है, तो अप्पा मुझे अपने साथ खेत में ले जाते हैं। पिछले कुछ दिनों में अप्पा ने 'खुँटी' की मदद से खेत की मिट्टी को नरम किया है।

पता करो

- बसवा के इलाके में तो 'खुँटी' से खेत की मिट्टी को नरम करते हैं। तुम्हारे इलाके में इसे क्या कहते हैं? उसका चित्र बनाओ और चर्चा करो।

अध्यापक के लिए–इस पाठ में प्याज़ की फ़सल का एक उदाहरण मात्र लिया है। अपने इलाके की या आस-पास की किसी एक फ़सल को उगाने में किए गए कार्यों पर भी चर्चा करवाई जा सकती है। बच्चों से नक्शे में कर्नाटक देखने को कहें।

© NCERT not to be republished

- किसी किसान या अपने बड़ों से पूछो कि उनके इलाके में खेतों में क्या-क्या उगाया जाता है?

खेती का हुनर

अप्पा इस बार भी खेत में प्याज़ के बीज बोएँगे। बैल 'कूरिगे' को खींचते जाएँगे और अप्पा पीछे-पीछे बीज डालते जाएँगे। अप्पा को इस तरह कूरिगे में बीज डालते देख

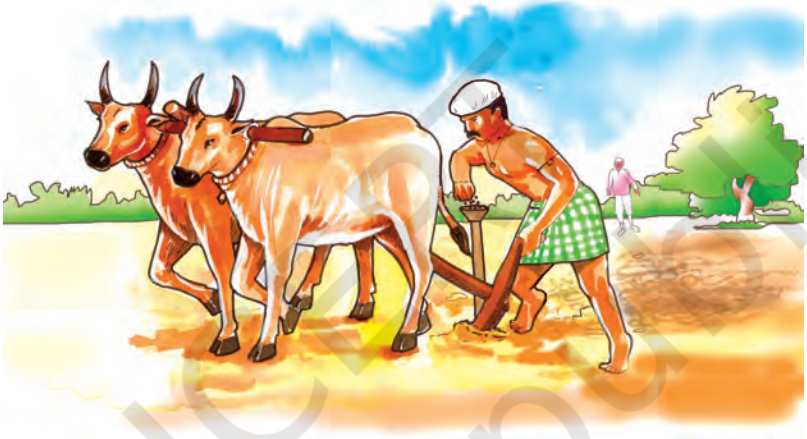

मेरा भी ऐसा करने को मन करता है, पर शायद मैं इसके लिए अभी छोटा हूँ। अप्पा मुझे बीज नहीं डालने देते, कहीं मेरे हाथों से ज़्यादा बीज न गिर जाएँ। थोड़े-थोड़े बीज गिराना बहुत मुश्किल है। पता नहीं मैं कब कर पाऊँगा।

- जानवर के अलावा और किसी तरीके से खेत को जोता जा सकता है?

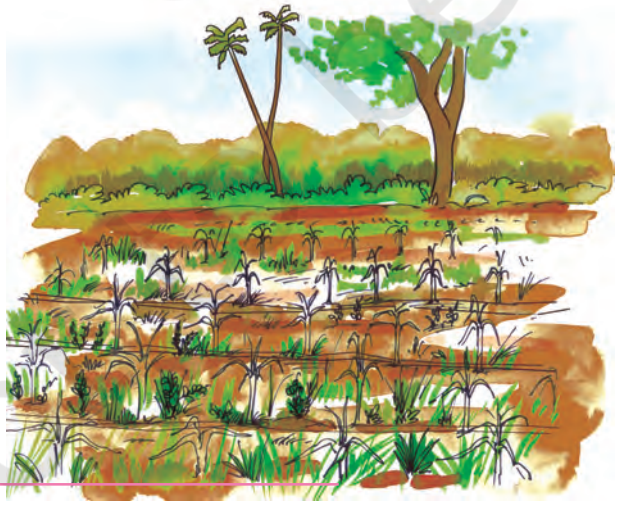

प्याज़ की फ़सल

बीज बोए लगभग बीस दिन हो गए हैं। प्याज़ के छोटे-छोटे पौधे निकल आए हैं। साथ ही निकल आई हैं—खरपतवार। तुम जानते हो न खरपतवार? तुमने किसी खेत या बगीचे में देखा ही होगा कि कुछ

© NCERT not to be republished

पौधे बिना बोए अपने आप ही उग आते हैं। वह ही होती है—खरपतवार! अप्पा कहते हैं कि इसे निकालना बहुत ज़रूरी है। नहीं तो सारा खाद-पानी खरपतवार ही ले लेगी और प्याज़ की फ़सल कम हो जाएगी। मैं भी खरपतवार निकालने में अप्पा, अम्मा और काका की मदद करूँगा।

प्याज़ के खेत में

हर रोज़ पौधों को बढ़ता देख मुझे बहुत खुशी होती है। अब तो ये पौधे खूब बड़े हो गए हैं। मेरे घुटनों तक ऊँचे-ऊँचे! पत्ते भी पीले होकर सूख गए हैं। अब प्याज़ निकालने के लिए बिलकुल तैयार हैं।

- जिस फ़सल को आपने खेत में लगे देखा है उसका चित्र बनाओ।

जानते हो क्यों?

अब प्याज़ के तैयार पौधों को निकालना है। प्याज़ की फ़सल में यह काम सबसे अधिक ज़रूरी है। अप्पा, अम्मा, काका, छोटी माँ और मैं—सभी जुटकर यह काम करेंगे। समय से प्याज़ नहीं निकाले, तो सारे प्याज़ ज़मीन के नीचे ही सड़ जाएँगे। फिर तो सारी मेहनत बेकार हो जाएगी। बसवा स्कूल के बाद और छुट्टियों में अपने माता पिता की खेत में मदद करता है।

- क्या तुम भी बसवा की तरह किसी काम में अपने घर के बड़ों की मदद करते हो? किस काम में?

© NCERT not to be republished

- वह काम करना तुम्हें कैसा लगता है?

प्याज़ की फ़सल

अरे वाह! इस बार तो बहुत मोटे-मोटे प्याज़ निकले हैं। घर में सभी बहुत खुश हैं। अम्मा और छोटी माँ ने 'इलिगे' की मदद से प्याज़ को पौधे से अलग कर लिया है। हाथों को इलिगे पर ध्यान से चलाना होता है, नहीं तो हाथ कटने का डर रहता है। अप्पा और काका ने मिलकर प्याज़ को बड़ी-बड़ी बोरियों में भर कर बाँध दिया है। अब अप्पा इन्हें मंडी में बेचने के लिए ट्रक में लेकर जाएँगे।

प्रश्नों के उत्तर कॉपी में लिखो

- बसवा को खेत में अप्पा की मदद स्कूल के बाद और छुट्टियों में ही क्यों करनी चाहिए।
- क्या तुम्हारे घर के आस-पास कोई खेत है? वहाँ क्या-क्या उगाया जाता है?

© NCERT not to be republished

- बसवा के अप्पा, मंडी में प्याज़ बेचने के लिए ट्रक में जाते हैं। सोचो, जिन जगहों पर पक्की सड़क नहीं होती, वहाँ फल-सब्ज़ियों को कैसे ले जाया जाता होगा?
- कौन-कौन सी गाड़ियों में फल और सब्ज़ियाँ ले जाई जाती हैं? किसी एक गाड़ी का चित्र कॉपी में बनाओ।

पता करो और लिखो

- यहाँ कुछ ऐसे औज़ारों के चित्र बने हैं, जिनके नाम इस पाठ में आए हैं। इनके नाम लिखो। यह भी लिखो कि तुम्हारे इलाके में इन्हें क्या कहते हैं? ये औज़ार किस काम आते हैं?

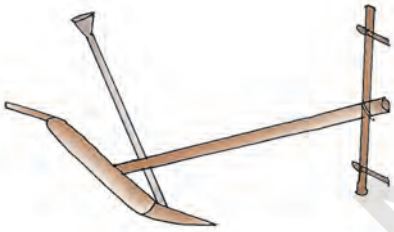

नाम (पाठ में) _____

तुम्हारे इलाके में नाम _____

काम _____

नाम (पाठ में) _____

तुम्हारे इलाके में नाम _____

काम _____

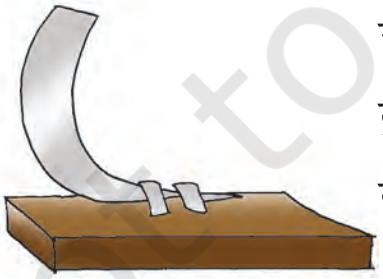

नाम (पाठ में) _____

तुम्हारे इलाके में नाम _____

काम _____

© NCERT not to be republished

- फ़सल उगाने के लिए कई तरह के काम करने होते हैं। इन चित्रों को देखो और उन पर सही क्रम लिखो।

- अपने इलाके में उगाई जाने वाली किसी फ़सल के बारे में पता करो। वह कैसे उगाई जाती है? क्रम से कॉपी में चित्र बनाओ।

© NCERT not to be republished

पाठ–15
मंडी से घर तक

0428CH15

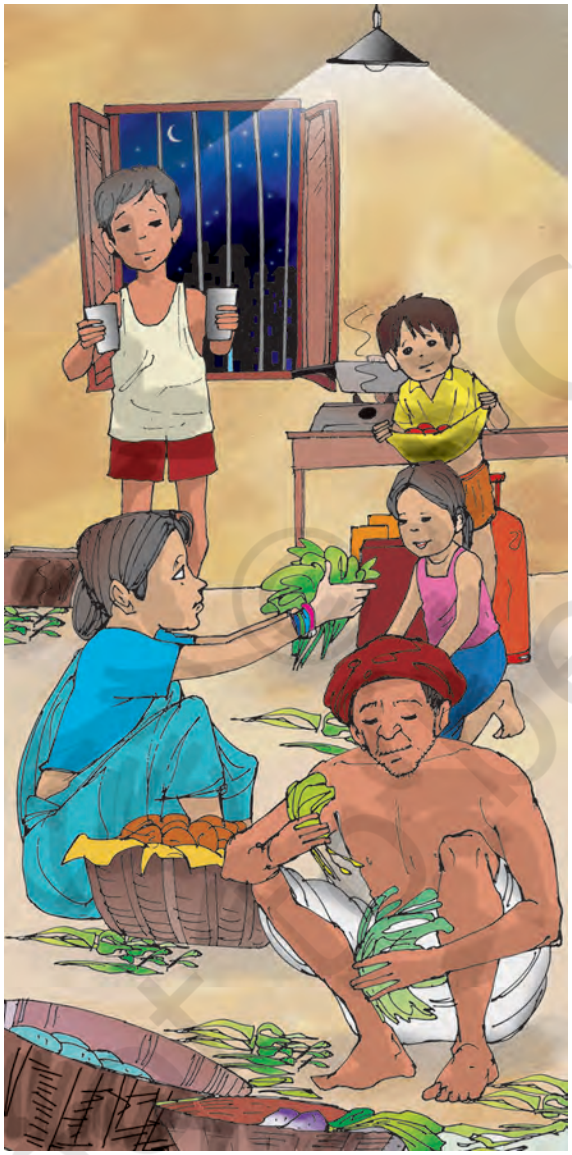

रात में दिन

मैं वैशाली हूँ। मेरे बाबूजी सब्ज़ी बेचते हैं। इस काम में अम्मा, भैया, छोटू और मैं भी मदद करते हैं। पता है, हम काम कब शुरू करते हैं? सुबह के तीन बजे। जब बहुत से लोग गहरी नींद में सोए होते हैं, तब हम अपना काम शुरू करते हैं। बाबूजी, अम्मा, भैया और मैं, पिछले दिन की बची हुई सब्ज़ियाँ बोरियों और टोकरियों में से निकालते हैं। ताज़ी सब्ज़ियाँ जो मंडी से लानी होती हैं। कभी-कभी छोटू भी इस काम में मदद करता है।

काम को निबटाकर जब सब चाय पी रहे होते हैं, तो टैम्पो के हॉर्न की पौं-पौं... सुनाई देती है। फिर बाबूजी, भैया और चाचू, मोहल्ले के और लोगों के साथ टैम्पो में सब्ज़ी लेने मंडी जाते हैं।

© NCERT not to be republished

- क्या तुम्हारे घर में भी किसी को सुबह बहुत जल्दी उठना पड़ता है? किस समय? किस काम के लिए?

दिन की तैयारी

बाबूजी के जाने के बाद छोटू, अम्मा और मैं पिछले दिन की बची सब्ज़ियों को बोरियों पर रखकर पानी छिड़कते हैं। सुबह लगभग 6.30 बजे तक बाबूजी मंडी से ताज़ी सब्ज़ियों के टोकरे और बोरे लेकर घर पहुँच जाते हैं। उस समय तो मानो घर में ही सब्ज़ीमंडी लग जाती है—बैंगन, आलू, टमाटर, भिंडी, पेठा, घीया, मिर्ची आदि सब चारों तरफ़ दिखते हैं। घर के सब लोग मिलकर इन सब्ज़ियों को छाँटते हैं। जो सब्ज़ियाँ कच्ची होती हैं और बेचने के लिए तैयार नहीं होती, उन्हें अलग रख देते हैं। ये सब काम जल्दी-जल्दी खत्म करने की कोशिश होती है, जिससे बाज़ार ज़ल्दी पहुँचा जा सके।

अध्यापक के लिए—बच्चों को मंडी में होने वाले कामों के बारे में बताया जा सकता है।

© NCERT not to be republished

सात बजे तक सब्ज़ियों को ठेले पर लगाकर बाबूजी और भैया बाज़ार चले जाते हैं। बाबूजी कहते हैं कि अगर देर हो जाए, तो ग्राहक दूसरे सब्ज़ी वालों से सब्ज़ियाँ खरीद लेते हैं। बाबूजी के जाने के बाद मैं स्कूल के लिए जल्दी-जल्दी तैयार होती हूँ। मुझे भी तो 7.30 बजे तक स्कूल पहुँचना होता है।

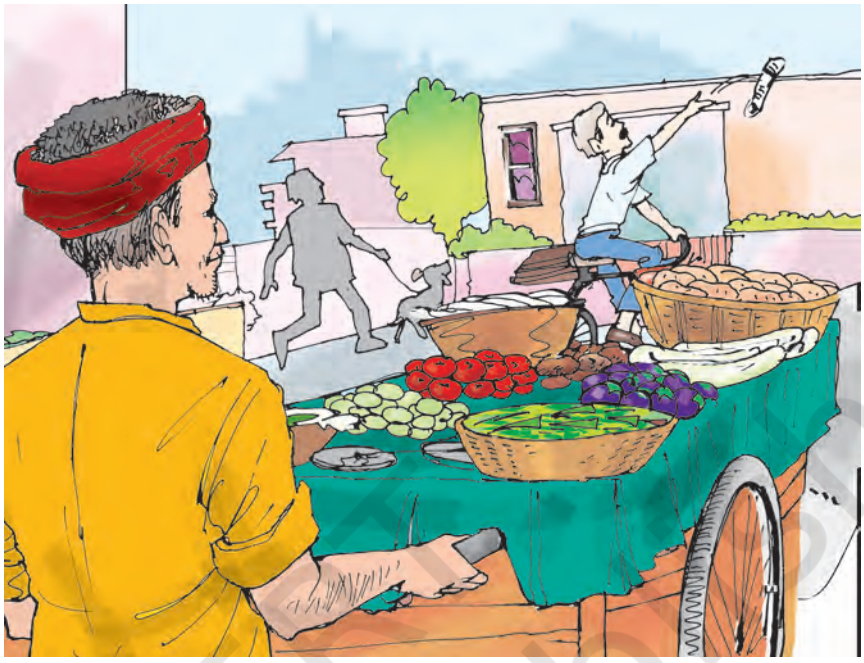

बाबूजी बाज़ार में

छोटू का स्कूल दोपहर का है। वह थोड़ा आराम करके बाबूजी और भैया के लिए नाश्ता लेकर बाज़ार पहुँच जाता है। थोड़ी देर वह ठेले के पास रहता है, फिर दोपहर में स्कूल चला जाता है। कभी-कभी शाम को, स्कूल के बाद भी, वह बाबूजी की मदद के लिए उनके पास जाता है। बाबूजी पिछले दिन की बची हुई सब्ज़ियों को पहले बेचने की कोशिश करते हैं।

2022-23

बताओ

- बाबूजी पिछले दिन की सब्जियाँ पहले बेचने की कोशिश करते हैं। वे ऐसा क्यों करते होंगे?
- क्या तुमने कभी सूखी या सड़ी-गली सब्ज़ी देखी है? कहाँ?
- तुम्हें कैसे पता चलता है कि सब्ज़ी खराब हो गई है?
- छोटू अपने परिवार की मदद करता है। आपके विचार में छोटू ने इससे क्या सीखा?
- आप अपने परिवार के बड़े लोगों की मदद कैसे करते हैं?

जैसे-जैसे पिछले दिन की सब्ज़ियाँ बिकती जाती हैं, भैया बोरियों में से ताज़ी सब्ज़ियाँ निकालकर ठेले पर लगाते जाते हैं। साथ ही सब्ज़ियों पर पानी छिड़कते रहते हैं, जिससे वे सूख न जाएँ, खासकर गर्मियों में। बाबूजी और भैया रात को दस बजे तक सब्ज़ियाँ बेचकर घर लौटते हैं। तब तक मैं और छोटू तो सो चुके होते हैं। घर के बाकी सब लोग 11 से 11.30 बजे तक ही सो पाते हैं। केवल चार घंटे बाद सुबह 3.00 बजे शुरू होता है, हमारे परिवार का नया दिन!

- नीचे घड़ियों में दिखाए गए समय पर तुम और वैशाली क्या-क्या कर रहे होते हो?

सुबह

वैशाली _____

तुम _____

सुबह

वैशाली _____

तुम _____

रात

वैशाली _____

तुम _____

- तुम्हारे घर में सब्ज़ियाँ कहाँ से आती हैं? उन्हें कौन लाता है?

_____

_____

अध्यापक के लिए–बाल मजदूरी को बढ़ावा दिए बिना बच्चों को उनके परिवार व आस-पास के लोगों की मदद करने के लिए सम्वेदनशील बनाएं।

© NCERT not to be republished

सब्ज़ियों के साथ कुछ खेल

- अब की बार जब घर में भिंडी आए, तब कुछ भिंडी लेकर देखो। क्या ये सब भिंडियाँ एक ही नाप की हैं?
- उनमें से सबसे लंबी और सबसे छोटी भिंडी छाँटो और नाप कर लिखो।
- क्या उनके रंग एक से हैं? क्या वे एक जितनी मोटी हैं? दो भिंडियों को लंबाई में काटो। क्या उनमें एक जितने बीज हैं? कॉपी में उनके चित्र बनाओ।
- सीमा की मम्मी बाज़ार से कुछ फल-सब्ज़ियाँ लाई हैं। जिन्हें चित्र में नीचे दिखाया गया है। चित्र में उन्हें ढूँढ़ो और रंग भरो तथा उनके नाम भी वहीं लिखो।

© NCERT not to be republished

पता करो

- यहाँ पर कुछ फल और सब्ज़ियों की सूची दी गई है। इनमें से कौन-कौन से फल और सब्ज़ियाँ पहले खराब हो जाएँगे और कौन-से कुछ दिन तक रखे जा सकते हैं? उनके नाम तालिका में ठीक जगह पर भरो। तुम अपनी तरफ़ से कुछ और नाम भी इस सूची में डाल सकते हो।

पालक आलू केला टमाटर नाशपाती चीकू अनानास
लौकी प्याज़ फूलगोभी खीरा अंगूर अदरक

जल्दी खराब होने वाले फल और सब्ज़ियाँ	कुछ दिनों तक रखे जा सकने वाले फल और सब्ज़ियाँ

इनमें से कुछ फल और सब्ज़ियाँ छूने से चिकनी लगती हैं और कुछ खुरदरी। इनके नाम छाँट कर सही सूची में लिखो।

चिकनी सब्ज़ियाँ	खुरदरी सब्ज़ियाँ

© NCERT not to be republished

- किसी एक फल या सब्ज़ी का नाम लिखो, जो तुम्हें उठाने में सबसे भारी लगे। उसका चित्र कॉपी में बनाओ।
- तुमने जो फल और सब्ज़ियाँ खाई हैं, उनमें से सबसे हल्का फल या सब्ज़ी कौन-सी है? उसका नाम लिखकर कॉपी में चित्र बनाओ।
- तीन ऐसी सब्ज़ियों के नाम लिखो, जिनमें बीज नहीं होते।

_____ _____ _____

नीचे दी गई तालिका को पूरा करो। तुम इसमें अपनी पसंद के तीन और नाम जोड़ सकते हो।

	रंग	लंबाई	मात्रा	दाम
सेब			(½ किलो)	
केला			(1दर्जन)	
आलू			(½ किलो)	

- अपने इलाके के किसी सब्ज़ी बेचने वाले व्यक्ति से बातचीत करो। उनसे ये प्रश्न पूछकर कॉपी में एक छोटी-सी रिपोर्ट बनाओ।
  - उनका नाम क्या है?
  - उनके घर में कितने लोग हैं? कितने बच्चे हैं?
  - उनके बच्चों के नाम और उनकी उम्र क्या है।
  - सब्ज़ी बेचने में उनकी मदद कौन-कौन करते हैं?

© NCERT not to be republished

- ठेले/रेहड़ी/दुकान पर उनके अलावा कौन-कौन बैठते हैं?
- वे कौन-कौन सी सब्ज़ियाँ बेचते हैं?
- वे कितने बजे काम शुरू करते हैं?
- वे दिन में लगभग कितने घंटे काम करते हैं?
- उनसे किन्हीं तीन सब्ज़ियों के बारे में कुछ बातें पता करो–

	सब्ज़ी-1	**सब्ज़ी-2**	**सब्ज़ी-3**
सब्जी का नाम			
उसका दाम			
कौन-सी जगह से लाई जाती है?			
एक बार में वे कितनी सब्ज़ी खरीदते हैं?			
यह सब्ज़ी किन महीनों में ज़्यादा आती है?			

© NCERT not to be republished

पाठ-16

चूँ-चूँ करती आई चिड़िया

0428CH16

बाल मंदिर
भावनगर, 13 अप्रैल 1936

प्यारे बच्चो,

दोपहर के ठीक तीन बजे हैं। आकाश में एक भी बादल नहीं है। सूरज तेज़ चमक रहा है।

फ़ाख्ता

गोरैया, फ़ाख्ता, शक्कर-खोरा सब अपनी-अपनी जोड़ी बनाकर, अपना घोंसला बनाने की तैयारी में लगे हैं। कुछ पक्षियों ने तो अपना घोंसला बना भी लिया है। कुछ घोंसलों में अंडों से बच्चे भी निकल आए हैं। उन नन्हें बच्चों के माँ-बाप उन्हें तरह-तरह के कीड़े और अन्य चीज़ें खिलाने में व्यस्त हैं।

हमारे आँगन में भी फ़ाख्ता का एक बच्चा हुआ है। उसके घोंसले में अभी एक अंडा और पड़ा है। लगता है, उसकी माँ ने इसे अभी ठीक से सेया नहीं है।

अध्यापक के लिए–गिजुभाई बधेका गुजरात में रहते थे। वे बच्चों के लिए मज़ेदार किस्से-कहानियाँ और पत्र लिखते थे। उनके द्वारा बच्चों को लिखे इस पत्र में आस-पास के पक्षियों के बारे में बताया गया है। इस पत्र को पढ़ने के बाद बच्चों को अपने आस-पास के पक्षियों को देखने के लिए प्रोत्साहित करें तथा उन पर चर्चा करें।

© NCERT not to be republished

गोपालभाई के घर वाली सड़क के किनारे बहुत सारे पत्थर हैं। इन पत्थरों के बीच खाली जगह में कलचिड़ी (इंडियन रोबिन) ने अंडे दिए हैं। बच्चुभाई ने मुझे वह जगह दिखाई थी। मैंने दूरबीन से घोंसले में देखा। घोंसला घास से बना है। उसके ऊपर पौधों की नाज़ुक टहनी, जड़ें, ऊन, बाल, रूई सब बिछा है। कलचिड़ी का घोंसला ऐसा ही होता है। आखिर उसके बच्चों को आरामदायक घर और बिस्तर चाहिए न! कलचिड़ी कौए जैसी नहीं है! कौए के घोंसले में तो लोहे के तार और लकड़ी की शाखाएँ जैसी चीज़ें भी होती हैं।

कलचिड़ी

कौआ

कलचिड़ी के घोंसले में मैंने एक बच्चा भी देखा। वह अपनी चोंच फाड़कर बैठा था। उसकी चोंच अंदर से लाल थी। कुछ देर बाद कलचिड़ी कहीं से उड़कर आई और बच्चे के मुँह में कुछ रखा। शायद कुछ छोटे-छोटे कीड़े होंगे। तब तक शाम हो गई। कलचिड़ी भी अब अपने बच्चे के साथ घोंसले में बैठ गई।

कोयल

तुम जानते ही हो, कोयल बहुत मीठा गाती है। पर क्या तुम्हें पता है, वह अपना घोंसला बनाती नहीं है। वह कौए के घोंसले में अंडे दे देती है। कौआ अपने अंडों के साथ कोयल के अंडों को भी सेता है।

बसंत गौरी

नज़दीक में एक छोटा-सा पेड़ है। उसकी एक डाल से घोंसला लटका हुआ है। पक्षियों में भी कितना अंतर है! कौआ पेड़ की ऊँची डाल पर घोंसला बनाता है, जबकि फ़ाख्ता कैकटस के काँटो के बीच या मेंहदी की मेंढ़ में। गोरैया आमतौर पर घर में या आस-पास दिखाई देती है। वह कहीं भी घोंसला बना लेती है-अलमारी के ऊपर, आईने के पीछे,

© NCERT not to be republished

दर्जिन चिड़िया

घर की दीवार के आले में। कबूतर भी ऐसे ही अपना घोंसला बनाता है–पुराने मकान या खंडहरों में। बसंत गौरी, जो गर्मियों में 'टुक टुक' करते रहते हैं, पेड़ के तने में गहरा छेद बनाकर उसमें अंडे रखते हैं।

दर्जिन चिड़िया का तो, जैसा नाम वैसा काम। वह अपनी नुकीली चोंच से पत्तों को सी लेती है और उसके बीच में बनी थैली को अंडे देने के लिए तैयार करती है। यही है उसका घोंसला।

शक्कर-खोरा

शक्कर खोरा किसी छोटे पेड़ या झाड़ी की डाली पर अपना लटकता घोंसला बनाते हैं। उसी शाम हमने एक डाल से टँगा शक्कर-खोरा का घोंसला देखा। क्या तुम जानते हो कि यह घोंसला किन चीज़ों से बनता है? घोंसले में बाल, बारीक घास, पतली टहनियाँ, सूखे पत्ते, रूई, पेड़ की छाल के टुकड़े और कपड़ों के चीथड़े होते हैं। यहाँ तक कि मकड़ी के जाले भी होते हैं।

वीवर पक्षी

मैंने दूरबीन से देखा, उस घोंसले में एक बच्चा भी था। घोंसले की एक तरफ़ छोटा-सा छेद था। वहीं बच्चा बैठा था, अपनी माँ और खाने के इंतज़ार में। उसको और काम भी क्या होगा–खाना और सोना!

क्या तुम वीवर पक्षी के बारे में यह बात जानते हो? सभी नर वीवर पक्षी अपने-अपने घोंसले बनाते हैं। मादा वीवर उन सभी घोंसलो को देखती है। उनमें से जो उसे सबसे अच्छा लगता है, उसमें ही वह अंडे देती है

© NCERT not to be republished

आजकल सब पक्षी बहुत व्यस्त हैं। घोंसले बनाना और अंडे देना–यह तो पहला कदम है। बड़ी मेहनत से बनाए गए घोंसले में बच्चों को ठीक से पालकर बड़ा करना बहुत मुश्किल काम होता है।

पक्षियों के कई दुश्मन हैं–मनुष्य और दूसरे जानवर भी। कौए, गिलहरी, बिल्ली और चूहे, मौका देखते ही अंडे चुरा लेते हैं। कई बार घोंसले को भी तोड़ देते हैं।

इन सबसे बचकर रहना, खाना खोजना, घोंसला बनाना, अंडे सेना और बच्चों को पालकर बड़ा करना... यह हर एक पक्षी की परीक्षा है।

फिर भी ये खुलकर गाते हैं और पँख फैलाकर उड़ते रहते हैं!

अच्छा तो, सलाम

तुम्हारे

गिजुभाई का आशीर्वाद

- गिजुभाई बधेका ने यह पत्र कितने साल पहले लिखा था?

- पता करो, तुम्हारे दादा, दादी, नाना और नानी उस समय कितने साल के थे?

- इस पत्र में जिन पक्षियों के नाम आए हैं, उनमें से कितने पक्षी तुमने देखे हैं?

- तुमने इन पक्षियों के अलावा और कौन-कौन से पक्षियों को देखा है?

- क्या तुमने कभी किसी पक्षी का घोंसला देखा है? कहाँ?

© NCERT not to be republished

- तुम्हारा मनपसंद पक्षी कौन-सा है? कक्षा में उसकी तरह उड़कर दिखाओ और आवाज़ निकालो।
- बूझो और पहचानो–

'एक पक्षी ऐसा जिसकी दुम पर पैसा'।
सिर से दुम तक दिखे नीला ही नीला (संकेत–हमारा राष्ट्रीय पक्षी)

- क्या बसंत गौरी की तरह कोई और पक्षी भी पेड़ के तने में घोंसला बनाता है?

- अपने घर में या आस-पास किसी पक्षी का घोंसला ध्यान से देखो। ध्यान रहे, घोंसले के बहुत पास नहीं जाना और उसे छूना भी नहीं। गलती से भी छू लिया, तो फिर पक्षी घोंसले में दोबारा नहीं आएँगे।

कुछ दिन तक किसी एक घोंसले को देखो और इन बातों को पता करके लिखो–

- घोंसला कहाँ पर बना है?
- किन-किन चीज़ों से बना है?
- क्या घोंसला बन चुका है या पक्षी अभी भी इसे बना रहा है?
- क्या पक्षी को पहचानते हो? कौन-सा पक्षी है?
- पक्षी घोंसले में क्या-क्या लेकर आते हैं?

© NCERT not to be republished

- क्या घोंसले में कोई पक्षी बैठा है?
- तुम्हें क्या लगता है, घोंसले में अंडे हैं?
- क्या घोंसले से कुछ आवाज़ें (चीं-चीं) आ रही हैं?
- अगर घोंसले में बच्चे हैं, तो उनके माँ-बाप खाने के लिए क्या-क्या लाते हैं?
- पक्षी एक घंटे में कितनी बार घोंसले पर आते हैं?
- बच्चे कितने दिन बाद घोंसला छोड़कर उड़ गए?
- तुमने जो घोंसला देखा उसका चित्र कॉपी में बनाओ।

- तुमने देखा, पक्षी घोंसला बनाने के लिए अलग-अलग चीज़ें इस्तेमाल करते हैं। उन में से कुछ चीज़ें इस्तेमाल करके तुम एक घोंसला तैयार करो। इसमें एक छोटा-सा कागज़ का पक्षी बिठाओ।

पक्षी केवल अंडे देने के लिए घोंसला बनाते हैं। जब अंडों से बच्चे निकल जाते हैं, तो वे घोंसला छोड़कर उड़ जाते हैं। सोचो, कैसा होता अगर हमें भी अपना घर छोड़कर कहीं चले जाना पड़ता, जब हम चलने, बोलने लगे!

घोंसला छोड़कर पक्षी अलग-अलग जगह चले जाते हैं-पेड़ों पर, ज़मीन पर, पानी में।

दूसरे जानवर भी अलग-अलग जगहों पर रहते हैं– कुछ ज़मीन पर तो कुछ ज़मीन के नीचे, कुछ पेड़ों पर तो कुछ पानी में।

© NCERT not to be republished

आओ, करें कुछ मज़ेदार...

- कक्षा के बच्चे तीन समूहों में बँट जाएँ। हर एक बच्चा एक जानवर का चित्र बनाए और उसमें रंग भरे। चित्र पूरा होने पर उसे अलग काट लें।
- अब, पहले समूह के बच्चे एक बड़े चार्ट पर भूरा रंग करें और उस पर छोटी-छोटी घास, मिट्टी आदि दिखाएँ। अब उस पर, ज़मीन पर मिलने वाले जानवरों के चित्र चिपकाएँ।
- दूसरे समूह के बच्चे चार्ट पर पानी और छोटे-छोटे पत्थर दिखाएँ। पानी में उगने वाले पौधे भी बनाएँ। अब, जो जानवर पानी में रहते हैं, उनके चित्र इस चार्ट पर चिपकाएँ।
- तीसरे समूह के बच्चे चार्ट पर पेड़ बनाकर उसमें रंग भरें। अब इस पर पेड़ों पर रहने वाले जानवरों के चित्र चिपकाएँ।

इन तीनों चार्टों को अपनी कक्षा में सजाओ। उन पर चर्चा करें।

पक्षियों के पंजे–जैसा काम, वैसे पंजे

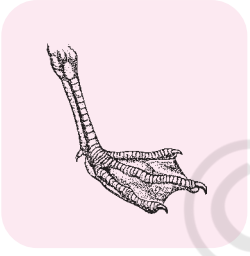

पानी में तैरने के लिए

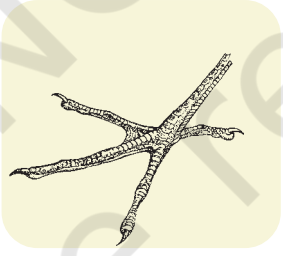

टहनियों को पकड़ने के लिए

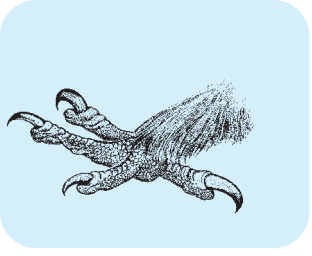

शिकार पकड़ने के लिए

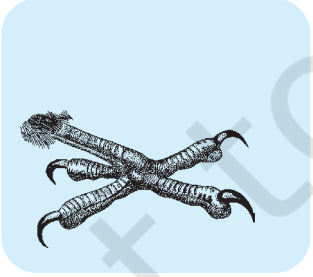

पेड़ पर चढ़ने के लिए

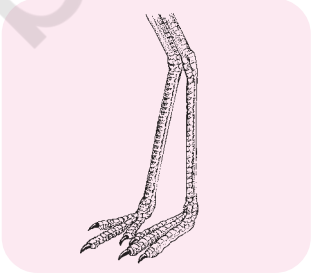

ज़मीन पर चलने के लिए

© NCERT not to be republished

पक्षियों की चोंच–जैसा खाना, वैसी चोंच

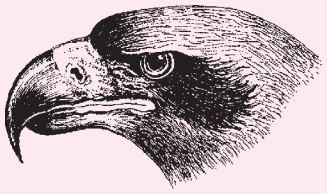

माँस चीरने-फाड़ने के लिए

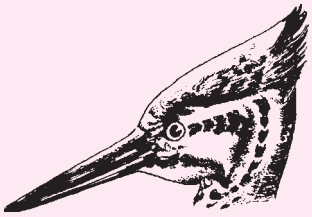

लकड़ी में छेद करने के लिए

फूलों का रस चूसने के लिए

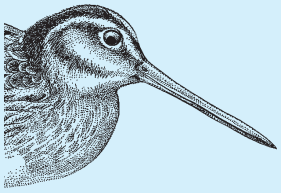

कीचड़ में छानबीन करके कीड़े खोदकर निकालने के लिए

बीजों को दबाकर तोड़ने के लिए

काटने के लिए

जानवरों के दाँत

तुमने देखा होगा कि जानवरों के दाँत अलग-अलग तरह के होते हैं।

गाय के आगे के दाँत छोटे होते हैं, पत्तों को काटने के लिए। घास चबाने के लिए पीछे के दाँत चपटे और बड़े होते हैं।

बिल्ली के दाँत नुकीले होते हैं, जो माँस फाड़ने और काटने के काम आते हैं।

© NCERT not to be republished

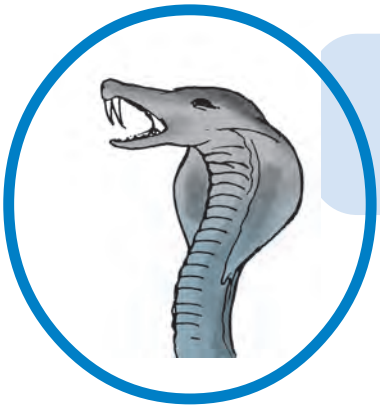

साँप के दाँत होते तो नुकीले हैं, पर वह अपने शिकार को चबाकर नहीं खाता बल्कि पूरा निगल जाता है।

गिलहरी के दाँत हमेशा बढ़ते रहते हैं। दाँतों से काटने और कुतरने के कारण इनके दाँत घिसते रहते हैं।

आओ, अपने दाँतों के बारे में कुछ बातें पता करके लिखो।

- तुम्हारी उम्र
- तुम्हारे मुँह में कुल कितने दाँत हैं?
- तुम्हारे कितने दाँत टूट गए हैं?
- कितने नए दाँत आए हैं?
- कितने दूध के दाँत टूटे हैं, पर उनकी जगह नए नहीं आए हैं?

दाँतों के बारे में कुछ और जानो

अपने दोस्तों के दाँत देखो। क्या दाँत अलग-अलग तरह के हैं? सामने और पीछे के एक-एक दाँत का चित्र कॉपी में बनाओ।

क्या तुम इन दाँतों में कोई अंतर देख सकते हो?

इस पाठ के सभी चित्रों के लिए आभार – पर्यावरण शिक्षा केन्द्र, अहमदाबाद

© NCERT not to be republished

कल्पना करो और बताओ

- तुम्हारे सामने के (ऊपर और नीचे के) दाँत नहीं हैं। तुम अमरूद कैसे खाओगे? करके दिखाओ।
- तुम्हारे सामने के दाँत तो हैं, मगर पीछे का एक भी नहीं। अब तुम रोटी कैसे खाओगे? करके दिखाओ।
- तुम्हारे मुँह में एक भी दाँत नहीं है। तुम किस प्रकार की चीज़ें खा सकोगे?
- अगर तुम्हारे दाँत ही न हों, तो तुम कैसे दिखोगे। कॉपी में चित्र बनाओ।
- जिन बूढ़े लोगों के दाँत नहीं होते हैं, वे किस तरह की चीज़ें नहीं खा पाते हैं? पता लगाओ।

जो पक्षी आपके घर के आस-पास सबसे ज्यादा दिखाई देता हो उसका चित्र बनाओ। उसके शरीर के भागों के नाम भी लिखो।

© NCERT not to be republished

पाठ–17
नंदिता मुंबई में

0428CH17

आज मुझे मुंबई आए एक महीना हो गया है। माँ तभी से अस्पताल में भर्ती है। उनके इलाज के लिए ही तो हम गाँव से मुंबई आए हैं।

मुंबई एक बड़ा शहर!

मुझे धीरे–धीरे शहर की आदत पड़ गई है। पर आज भी वह दिन याद है, जब माँ और मैं, मुंबई स्टेशन पर ट्रेन से उतरे थे। कितनी भीड़ थी। मैंने फ़टाफ़ट माँ का हाथ पकड़ लिया था। मैं सोच रही थी इतनी भीड़ में मामा कैसे दिखाई देंगे। तभी पीछे से ज़ोर से आवाज़ आई, "नंदिता! नंदिता!!" मुड़कर देखा तो मामा ही थे।

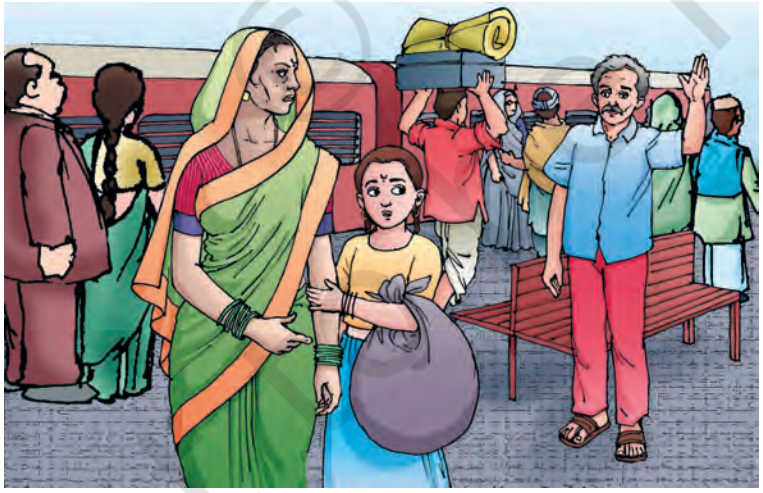

अध्यापक के लिए–माँ के भाई को मामा कहते हैं। बच्चों से पूछिए कि वे अपनी माँ के भाई को क्या कहते हैं।

© NCERT not to be republished

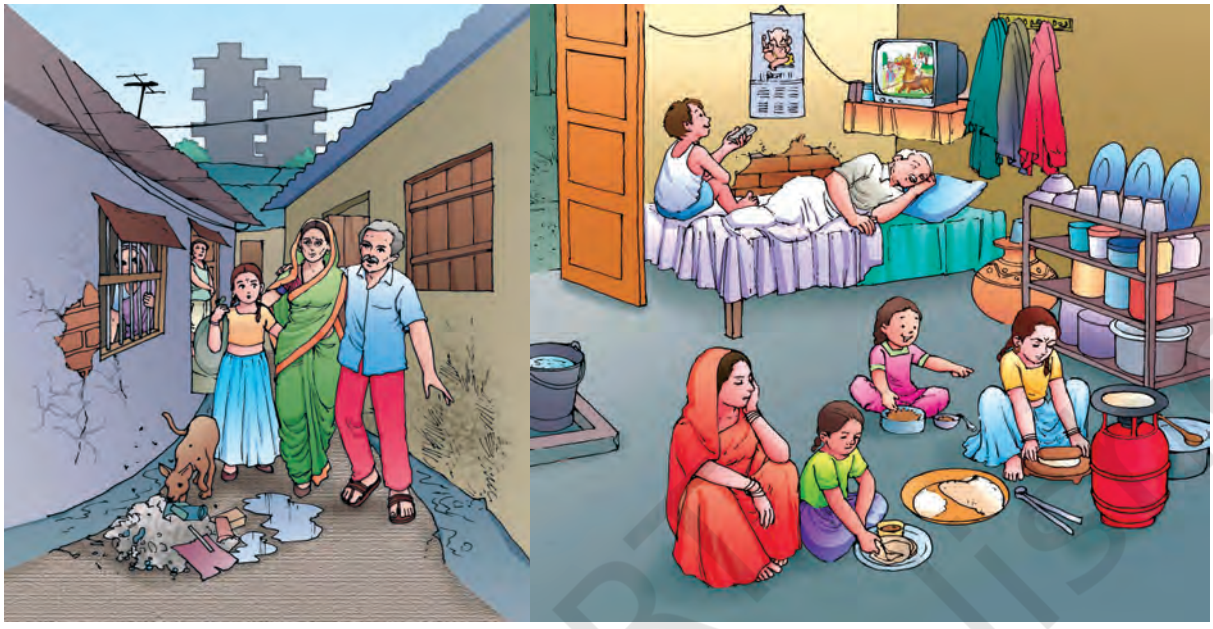

स्टेशन से मामा के घर की ओर चले, पर यह क्या? फिर से इतनी भीड़ वाला इलाका। संकरी गली के दोनों तरफ़ साथ-साथ सटी हुई झुग्गियाँ। उसी गली से होते हुए हम मामा के घर पहुँचे। यहाँ एक कमरे में मामा, मामी, उनकी दो बेटियाँ और बेटा रहते हैं, और अब मैं भी। वहीं बैठना, वहीं सोना, वहीं पकाना और वहीं नहाना।

हमारे गाँव के घर में भी एक ही कमरा है, पर रसोईघर और नहाने की जगह अलग-अलग है। बाहर आँगन भी है।

पानी की किल्लत

मैं, मामी और सीमा के साथ सुबह चार बजे उठकर नल पर पानी भरने जाती हूँ। बाप रे! वहाँ पानी के लिए कितने झगड़े होते हैं। अगर पहुँचने में देर हो गई तो समझो, दिन भर का पानी भरा नहीं जाएगा। हमारे गाँव के घर में भी नल नहीं है। गाँव में तालाब बीस मिनट की दूरी पर है। गर्मियों में कभी-कभी तालाब का पानी

अध्यापक के लिए–माँ के भाई की पत्नी को मामी कहते हैं। बच्चों से पूछिए कि वे अपने इलाके में उन्हें क्या कहते हैं।

© NCERT not to be republished

सूख जाता है। तब घंटा-भर चल कर नदी से पानी लाना पड़ता है। पर पानी के लिए इतने झगड़े तो नहीं होते।

मामा की गली के एक कोने पर टॉयलेट बना है। गली के सभी लोग वहीं जाते हैं। इतनी गंदगी और बदबू! वहाँ जाने पर मुझे पहले तो मितली आती थी। अकसर वहाँ पानी भी नहीं होता। पानी साथ ही ले जाना पड़ता है। अब तो इस सबकी आदत पड़ गई है। गाँव में तो सब खुली जगह पर जाते हैं, लेकिन उसके लिए आदमी और औरतों की जगह अलग-अलग हैं।

लिखो

- नंदिता को गाँव से माँ को मुंबई क्यों लाना पड़ा?

- मामा की बस्ती के टॉयलेट में जाने पर नंदिता को पहले मितली आती थी। क्यों?

© NCERT not to be republished

- नंदिता को अपने और मामा के घर में क्या अंतर लगा?

- बस्ती के नल से पानी भरने और गाँव में पानी भरने में नंदिता को क्या अंतर लगा?

- तुम्हारे अनुसार, क्या नंदिता के मामा की बस्ती में बिजली होगी?

सीख ही लिया

मैं रोज़ माँ से मिलने बस से अस्पताल जाती हूँ। शुरू में तो बसों में भीड़ देखकर हिम्मत ही नहीं पड़ती थी, उनमें चढ़ने की। आदत जो नहीं थी। डर भी लगता था। पर अब ठीक है। मुझे समझ आ गया है कि कैसे लाइन में लगना है, कितने का टिकट लेना है, कहाँ उतरना है।

बस्ती से कुछ दूर एक ऊँची बिल्डिंग है। वहीं सात घरों में मामी सफ़ाई और बर्तन धोने का काम करती हैं। एक दिन मैं भी मामी के साथ वहाँ गई। देखने पर पहले मुझे लगा कि एक ही बड़ा घर है। पर नहीं, वे तो एक के ऊपर एक बने

© NCERT not to be republished

बहुत सारे घर थे। मैं सोच रही थी कि इतनी सारी सीढ़ियाँ कैसे चढ़ूँगी। पर वहाँ लिफ़्ट भी लगी थी–एक बड़े से लोहे के पिंजरे जैसी। पंखा, घंटी और बल्ब सभी लगे थे उसमें। हम कितने सारे लोग उसमें घुस गए। बटन दबाया और झट पहुँच गए ऊपर। सच बताऊँ, मुझे पहले बहुत डर लगा था।

बताओ

- क्या कभी कोई तुम्हारा अपना अस्पताल में भर्ती हुआ है?
  - कितने दिन के लिए?
  - क्या तुम उनसे मिलने जाते थे?
  - वहाँ उनकी देखभाल कौन-कौन कर रहे थे?
- क्या तुमने कभी ऊँची बिल्डिंग देखी है? कहाँ?
- उस बिल्डिंग में कितनी मंज़िलें थीं?
- तुम कितनी मंज़िल तक किसी बिल्डिंग में चढ़े हो?

दूसरे घर में

मामी सबसे पहले मुझे बबलू के घर ले गई। उसका घर बारहवीं मंज़िल पर था। कितना बड़ा घर था! बैठक, खाने का कमरा, सोने का कमरा – सब अलग और रसोई भी अलग। वहाँ टॉयलेट भी घर के अंदर ही था। मामी को बबलू के घर काम करने में टाइम तो बहुत लगा, पर खास परेशानी नहीं हुई। रसोईघर में ही नल लगा था और झर-झर पानी बह

© NCERT not to be republished

रहा था। बबलू ने नहाने के लिए पानी की बालटी लगाई और टी.वी. देखने बैठ गया। कितना पानी बेकार बह गया! यह मुझे अच्छा नहीं लगा। मैंने जाकर नल बंद कर दिया।

बबलू के घर में बड़ी-बड़ी काँच की खिड़कियाँ थीं। मामी ने मुझे खिड़की से नीचे देखने को कहा। बबलू के घर की खिड़कियों से मामा की बस्ती दिखाई दे रही थी। बस्ती तो दिखाई दी, पर पता नहीं चल रहा था कि मामा का घर कौन-सा है। ऊपर से नीचे, सब कुछ खिलौने की तरह छोटा-छोटा लग रहा था। मुझे डर भी कितना लगा था, ऊपर से बहुत नीचे झाँकने में।

शुरू में नंदिता को मुंबई में क्या-क्या करने में डर लगता था?

अध्यापक के लिए–पाठ में मामा की बस्ती और ऊँची बिल्डिंग के बीच के अंतर की बात की गई है। इनके कारणों पर चर्चा करते समय बच्चों को उनके अनुभवों से और भी अंतर और उसके कारणों के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

2022-23

- मामा के घर और बिल्डिंग के मकानों में क्या-क्या अंतर है?

मामा की बस्ती के घर	ऊँची बिल्डिंग में बने घर

- यह अंतर क्यों है? चर्चा करो।

अपने बारे में बताओ

- इनमें से तुम्हारा घर किसके जैसा है? उस पर गोला लगाओ।

  नंदिता **मामा** **बबलू** **किसी और तरह का**

- तुम्हारे घर में पानी कहाँ से आता है?
- क्या तुम्हारे घर में बिजली का कनेक्शन है? यदि हाँ, तो एक दिन में बिजली कितने घंटे आती है?
- तुम्हारे घर के पास कौन-सा अस्पताल है?
- नीचे दी गई जगहें तुम्हारे घर से लगभग कितनी दूर हैं?

	समय (मिनटों में)	दूरी (कि.मी.)
बस स्टॉप		
स्कूल		
बाज़ार		
पोस्टऑफ़िस		
अस्पताल		

- तुम्हारे इलाके में बने अलग-अलग तरह के घरों का चित्र कॉपी में बनाओ।

© NCERT not to be republished

एक नई चिंता

मामा ने कहा था कि वे मुझे मुंबई घुमाने ले जाएँगे। बस्ती के बच्चे चौपाटी की बहुत बातें करते हैं। सुना है, वहाँ बड़े-बड़े फ़िल्म स्टार भी आते हैं। काश, जब हम वहाँ जाएँ, तो मुझे भी कोई फ़िल्म स्टार दिख जाए!

आजकल मामा बहुत परेशान हैं। मैं उनसे मुझे मुंबई घुमाने को भी नहीं कह सकती। पिछले हफ़्ते कुछ लोग बस्ती खाली करने का नोटिस दे गए थे। अब यहाँ बड़ा होटल बनेगा। मामा ने बताया था कि पिछले दस सालों में उन्हें तीसरी बात नोटिस मिला है। जो लोग यहाँ रह रहे हैं, उन्हें अपना घर बनाने के लिए कोई दूसरी जगह दी जा रही है। इस झुग्गी के बदले जो जगह मिली है, वह शहर से बहुत दूर है। समझो, शहर का दूसरा कोना। वहाँ न पीने का पानी है, न बिजली। पता नहीं, वहाँ कोई बस भी जाती है या नहीं! मामा इतनी दूर से काम पर कैसे आएँगे? कितना ज़्यादा पैसा लगेगा और कितना ज़्यादा टाइम भी और मामी, उनको वहाँ काम मिलेगा भी या नहीं! अगर मामा नई जगह चले गए, तो मैं माँ से मिलने कैसे आऊँगी? माँ तो अभी पूरी तरह से ठीक भी नहीं हुई।

अध्यापक के लिए–नंदिता के मामा के परिवार की तरह ही कई लोगों को अपने घर छोड़ने पड़ते है। कक्षा में इनके कारणों पर चर्चा करवाई जा सकती है। इस बदलाव से उन परिवारों पर पड़ने वाले प्रभाव पर भी चर्चा हो सकती है।

© NCERT not to be republished

कॉपी में लिखो

- मामा को अपना घर क्यों बदलना पड़ रहा है?
- क्या तुमने कभी अपना घर बदला है? यदि हाँ, तो किन कारणों से?
- क्या तुम्हारे परिवार के लोगों को काम के लिए दूर जाना पड़ता है? वे कहाँ जाते हैं? वे कितनी दूर जाते हैं?

चर्चा करो

- क्या मामा की बस्ती को हटाकर वहाँ पर होटल बनाना ठीक है?
- इससे किसको फ़ायदा होगा?
- इससे किसको परेशानी होगी?
- क्या तुम किसी ऐसे परिवार को जानते हो, जिन्हें नंदिता के मामा के परिवार की तरह ही परेशानियों का सामना करना पड़ा हो? उसके बारे में कक्षा में बताओ।

अपनी पसंद के घर का चित्र बनाओ और उसमें रंग भरो।

© NCERT not to be republished

पाठ-18

पानी कहीं ज़्यादा, कहीं कम

0428CH18

प्यास कैसे बुझाएँ?

नल्लामडा, आँध्र प्रदेश

सुगुणा किताब पढ़ रही थी कि तभी किसी के आने की आवाज़ आई। देखा, शहर से कोई मेहमान आए हैं। अप्पा ने उन्हें बिठाया और सेल्वा से कहा कि उनके लिए कोल्ड ड्रिंक लेकर आए। मेहमान बोले, "कोल्ड ड्रिंक तो मैं नहीं पीता। बस, एक गिलास पानी दे दीजिए।" अप्पा बोले, "हमारे यहाँ आजकल पानी ठीक नहीं आ रहा है। दिखने में भी साफ़ नहीं है। आप यह पानी न ही पीएँ तो अच्छा है। हमारी तो मज़बूरी है। हमें तो पीना ही पड़ता है।"

© NCERT not to be republished

चर्चा करो

- गंदा पानी पीने से शरीर को क्या नुकसान हो सकता है?
- क्या कभी तुम्हारे इलाके में पीने का पानी गंदा आया है? क्या कारण था?
- क्या तुम्हारे यहाँ कभी पानी साफ़ न होने के कारण कोई बीमार हुआ है? चर्चा करो।
- सुगुणा की बस्ती में लोगों के पीने के लिए साफ़ पानी नहीं था। इसलिए मेहमान के लिए कोल्ड ड्रिंक मँगवाया गया। तुम क्या सोचते हो, सुगुणा के परिवार वाले रोज़ पीने के पानी के लिए क्या करते होंगे?
- मेहमान ने कोल्ड ड्रिंक पीने से मना किया। तुम्हारे अनुसार उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा?

पानी के खेल

बाज़ार गाँव, महाराष्ट्र

बाज़ार गाँव के पास ही एक बड़ा-सा वॉटर पार्क था। एक दिन रोहन और रीना अपने मम्मी-पापा के साथ वहाँ गए। वहाँ बड़े-बड़े फव्वारे चल रहे थे। तभी रीना बोल उठी, "अरे, रोहन! देखो। यहाँ तरह-तरह के पानी के झूले हैं।" "और वहाँ देखो! कितने बड़े-बड़े तालाब!" रोहन बोला। छपाक! छपाक!! दोनों ने पीछे देखा। ज़ूम! ज़ूम! ज़ूम! बड़ी-सी फिसल-पट्टी पर से तेज़ी से फिसलते हुए बच्चे छपाक करके पानी में गिर रहे थे। रोहन एक बड़े से झूले में घुस गया और

© NCERT not to be republished

बस एक सेकंड में ही बहुत ऊँचाई से नीचे पानी में जा पहुँचा। रीना की तो चीख ही निकल गई।

तभी पार्क के बाहर से शोर-गुल और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने की आवाज़ सुनाई देने लगीं। सब बड़े गेट की तरफ़ भागे। वहाँ खाली बाल्टियाँ और घड़े लिए हुए बहुत सारे लोग खड़े थे। एक छोटा-सा बच्चा खाली बोतल पकड़े अपनी माँ के साथ चिपक कर खड़ा था। रोहन की मम्मी ने उस भीड़ में से एक औरत से पूछा, "क्या हो रहा है यहाँ?"

वह औरत तमतमा कर बोली, "बाई! तुम पूछती हो, क्या हो रहा है। हमारे कुँए सूखे पड़े हैं। हफ़्ते में एक बार पीने के पानी का टैंकर आता है। आज तो वह भी नहीं आया। और यहाँ इतना सारा पानी तुम लोगों के खेल के लिए! बोलो, हम क्या करें?"

पढ़ो और लिखो

- क्या कभी तुम्हारे घर में पानी की किल्लत हुई है? कब?

- तब तुम ने क्या किया?

© NCERT not to be republished

- क्या तुम कभी पानी में खेले हो? कब और कहाँ?

- क्या तुम्हें कभी पानी में खेलने से मना किया जाता है? क्यों?

- अपने पड़ोस में क्या आपने पानी को बेकार बहते देखा है? चर्चा करो।

- 'वॉटर पार्क' में खेलने के लिए पानी ही पानी था, लेकिन उस गाँव में लोगों के पीने के लिए नहीं। सोचो ऐसा क्यों?
- अगर तुम कभी 'वॉटर पार्क' में जाओ, तो पता करो कि वहाँ पानी कहाँ से आता है।

क्या इसे पी सकते हैं?

कफ़ परेड, मुंबई

लिफ़्ट रुक गई, 26वीं मंज़िल पर! बड़ा मज़ा आता है, दीपक को लिफ़्ट में। आज स्कूल की छुट्टी है। इसलिए वह माँ के साथ रज़िया मेम साहब के यहाँ आया है। यहाँ तो सब कुछ चकाचक, ठंडा और शांत लगता है। रज़िया अखबार पढ़ रही थी। दीपक को देखा तो हँसकर पूछा, "क्यों, आज छुट्टी है क्या?" मेम साहब ने टी.वी. चला दिया और दीपक कार्टून की दुनिया में खो गया। इतने में रज़िया ने आवाज़ लगाई, "अरे, पुष्पा! अखबार में खबर है कि इस इलाके में पीने के पानी वाले पाइप में गटर का पानी मिल गया था। लिखा है, इस गंदे पानी के

© NCERT not to be republished

कारण बहुत लोग दस्त और हैज़े से बीमार हैं। कल का भरा हुआ पानी फेंक दो और पीने के लिए कुछ पतीले पानी उबाल लो। और हाँ! अपने घर के लिए भी उबला हुआ पानी ले जाना।" दीपक खुश हुआ कि चलो उसे आज घंटा-भर लाइन में खड़े होने से छुट्टी मिली।

कॉपी में लिखो

- अखबार पढ़कर रज़िया परेशान क्यों थी?
- रज़िया ने पिछले दिन का भरा हुआ सारा पानी फेंकने के लिए कहा। क्या उस पानी को किसी और काम के लिए इस्तेमाल किया जा सकता था? किस काम के लिए?
- रज़िया ने पानी साफ़ करने का क्या तरीका अपनाया?
- तुम पानी साफ़ करने के कौन-कौन से तरीके जानते हो?
- अगर रज़िया अखबार में आई खबर न पढ़ती और सब बिना उबला पानी पी लेते, तो क्या होता?

चर्चा करो

- दीपक की बस्ती में पानी भरने के लिए लाइन में लगना पड़ता है, जबकि रज़िया के यहाँ दिन भर पानी आता है। ऐसा क्यों?
- रज़िया को अखबार से पानी की खबर मिली। क्या तुमने कभी अखबार में पानी से जुड़ी कोई खबर पढ़ी है? क्या?

© NCERT not to be republished

स्वयं करके चर्चा करो

- पिछले एक महीने में, अलग-अलग अखबारों में पानी से जुड़ी जो खबरें आई हैं, उन्हें इकट्ठा करो । इन खबरों को एक बड़े कागज़ पर चिपकाओ और इन पर चर्चा करो।

क्या तुम्हें कभी दस्त लगे हैं, उल्टियाँ हुई हैं? तब क्या हुआ था? जब दस्त लगते हैं या उल्टियाँ होती हैं, तो हमारे शरीर से बहुत सारा पानी बाहर निकल जाता है। यह शरीर के लिए हानिकारक हो सकता है। इसलिए ज़रूरी है कि शरीर में पानी की कमी पूरी की जाए। जब तक उल्टियाँ-दस्त हों, तब तक थोड़ी-थोड़ी देर में पानी पीते रहना चाहिए। पानी में शक्कर और नमक भी मिला लें।

आओ, नमक-शक्कर का घोल बनाएँ।

एक गिलास पीने का पानी उबालकर ठंडा करो। इसमें एक छोटा चम्मच शक्कर घोलो। चुटकी भर नमक डालो। इस घोल को चखकर देखो। इसका स्वाद हमारे आँसुओं के स्वाद से ज़्यादा नमकीन न हो।

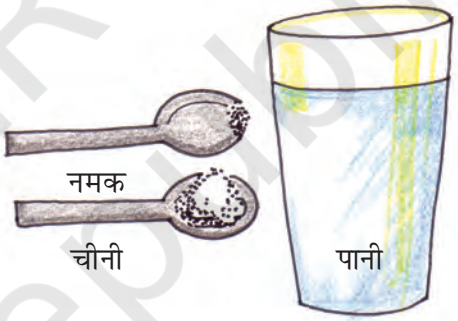

बीमार व्यक्ति को जब भी दस्त या उल्टी हो, तब इस घोल को पिलाते रहो। साथ में हल्का भोजन ज़रूर लेते रहना चाहिए। बहुत छोटे बच्चों को माँ का दूध पिलाते रहना बहुत ज़रूरी है। बीमारी रोकने के लिए दवाइयाँ—जो घरेलू भी हो सकती हैं, लेनी चाहिएँ। अगर दस्त और उल्टी न रुके, तो डॉक्टर की सलाह लेना बहुत ज़रूरी है।

अपने स्कूल में पानी का सर्वे

क्लास के सभी बच्चे तीन समूहों में बँट जाएँ।

- एक समूह के बच्चे स्कूल में पीने के पानी के इंतज़ाम के बारे में पता करें।
- दूसरे समूह के बच्चे स्कूल में टॉयलेट के इंतज़ाम के बारे में जानकारी इकट्ठा करें।

© NCERT not to be republished

- तीसरा समूह अपनी कक्षा के बच्चों को हुई बीमारियों के बारे में पता करे।

  नीचे दिए गए सवाल बच्चों को जानकारी इकट्ठा करने में सहायता करेंगे।

समूह एक

देखो और लिखो–

- सही जगह पर (✓) निशान लगाओ।
  - स्कूल में पीने का पानी कहाँ से आता है?

    नल ☐ टंकी ☐ हैंडपंप ☐ कहीं और से ☐
  - तुम स्कूल में पीने का पानी कहाँ से लेते हो?

    नल ☐ टंकी ☐ हैंडपंप ☐ कहीं और से ☐
- यदि नल, मटके या हैंडपंप नहीं हैं, तो पीने का पानी कहाँ से लाते हो?

_____

- क्या सभी नलों या हैंडपंपों में पानी आता है?

_____

- क्या इनमें से कोई नल बहता या टपकता रहता है?

_____

- क्या सभी मटकों या बर्तनों में पानी भरा और ढँका रहता है?

_____

- क्या मटकों या पानी के दूसरे बर्तनों की नियमित सफ़ाई की जाती है?
- पानी को पीने लायक कैसे बनाया जाता है?

© NCERT not to be republished

- क्या मटकों या बर्तनों से पानी निकालने के लिए लंबे हैंडल वाले बर्तन हैं? अगर हैं तो कितने?

- क्या पानी पीने की जगह की नियमित सफ़ाई की जाती है?

सोचो और चर्चा करो

- ये जगहें गंदी क्यों हो जाती हैं?
- इन जगहों को साफ़ रखने के लिए क्या किया जा सकता है?

पता करो और कॉपी में लिखो

- मटके और उसमें से पानी निकालने वाले बर्तनों की धुलाई कितने दिनों में की जाती है? कौन करता है?
- स्कूल में कितने बच्चे हैं? कितने नल, मटके या हैंडपंप हैं? क्या वे सभी बच्चों के लिए काफ़ी है?
- इन जगहों की सफ़ाई कौन करते हैं?
- जो पानी नीचे गिर जाता है, वह कहाँ जाता है?

समूह दो

देखो और लिखो–

- सही जगह पर (✓) निशान लगाओ।
- स्कूल में टॉयलेट के लिए क्या इंतज़ाम है?

पक्का टॉयलेट ☐ खुली जगह ☐

- वहाँ कितने टॉयलेट हैं?

© NCERT not to be republished

- क्या लड़के और लड़कियों के टॉयलेट अलग-अलग हैं? ☐ हाँ ☐ नहीं
- क्या वहाँ पानी है? ☐ हाँ ☐ नहीं
- पानी कहाँ से आता है?
  - नल से ☐ हाँ ☐ नहीं
  - भरी हुई टंकी से ☐ हाँ ☐ नहीं
  - घर से लाना पड़ता है ☐ हाँ ☐ नहीं
- हाथ धोने के लिए पानी है क्या? ☐ हाँ ☐ नहीं
- टॉयलेट जाने के बाद क्या तुम हाथ धोते हो? ☐ हाँ ☐ नहीं
- क्या कोई नल बहता या टपकता रहता है? ☐ हाँ ☐ नहीं
- क्या टॉयलेट साफ़ रहते हैं? ☐ हाँ ☐ नहीं

पता करो और लिखो

- स्कूल में कितने लड़के और कितनी लड़कियाँ हैं?

  लड़के ☐ लड़कियाँ ☐

- लड़के और लड़कियों के लिए कितने-कितने टॉयलेट हैं?

  लड़कों के लिए ☐ लड़कियों के लिए ☐

- यदि नल नहीं है, तो टॉयलेट में पानी भरकर कौन रखता है? पानी कहाँ से लाना पड़ता है?

- इस जगह को कौन साफ़ करता है?

© NCERT not to be republished

बताओ

- टॉयलेट को साफ़ रखने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है?
- इसके लिए हम सब क्या कर सकते हैं?
- क्या तुमने कभी बस स्टैंड या रेलवे स्टेशन पर टॉयलेट देखा है? घर के अंदर बने टॉयलेट से ये कैसे अलग होते हैं?

समूह तीन

अपनी कक्षा में बच्चों से पता करके नीचे दी गई तालिका पूरी करो। पिछले कुछ महीनों में तुम्हारी कक्षा के कितने बच्चों को नीचे लिखी हुई किसी बीमारी का सामना करना पड़ा है? उन बच्चों के नाम सही जगह पर लिखो।

क्र.म.	दस्त	उल्टी	दस्त व उल्टी एक साथ	पेशाब का रंग पीला, हल्का बुखार, आँखों व शरीर में पीलापन	पेट दर्द
1.					
2.					
3.					
4.					
5.					

सर्वे से, तुमने जो जानकारी इकट्ठी की, उसके बारे में अपनी टीचर से चर्चा करो और अपने सुझाव लिखकर एक रिपोर्ट तैयार करो। इस रिपोर्ट को स्कूल की सभा में पढ़ो और नोटिस बोर्ड पर लगाओ।

अध्यापक के लिए–यहाँ केवल उन लक्षणों की बात की गई है, जिन्हें बच्चे पहचानते हैं। अगर ऐसा हैज़े के कारण हुआ है, तो बीमारी के बारे में चर्चा करें। आस-पास कौन-सी बीमारियाँ हैं? ज़रूरी नहीं है, कि सभी बच्चे इन बीमारियों के नाम जानते हों।

© NCERT not to be republished

बच्चों ने उठाया पहला कदम

कर्नाटक के होलगुण्डी गाँव के लोगों को पानी की कमी की आदत पड़ गई थी। बारिश के दिनों में ही कुँओं में पानी रहता था। पिछले तीन सालों में बारिश की कमी से वहाँ सूखा पड़ गया। पानी था ही नहीं–न खेती के लिए, न पीने के लिए, न ही जानवरों के लिए। हार मान कर लोग मज़दूरी करने शहर जाने लगे। बच्चों को भी स्कूल छोड़ कर बड़ों के साथ जाना पड़ा।

गाँव की पंचायत परेशान थी। सब लोगों ने इसके बारे में बात की। इस गाँव की पंचायत की एक बहुत खास बात है। इस पंचायत में बड़ों के साथ बच्चे भी हैं। बच्चों की इस पंचायत का नाम है–'भीमा संघ'।

बच्चों ने बड़ों से पूछा, "क्या हमारे यहाँ हमेशा से ही पानी की दिक्कत रही है?" कुछ बड़े लोगों ने उन्हें बताया कि पहले ऐसा नहीं था। पहाड़ी के ऊपर एक टंकी थी, जिसमें बारिश का पानी भरा रहता था। उसमें मछलियाँ भी होती थीं और आस-पास बहुत हरा-भरा रहता था। तब तो गाँव के बाकी कुँओं और तालाबों में भी पानी रहता था।

'भीमा संघ' ने सोचा कि वे पहले उस टंकी को देखेंगे। देखा तो पता चला कि टंकी कीचड़-पत्थरों से भरी थी। उसमें पानी कहाँ से भरता? उसकी दीवारों में भी दरारें थीं, फिर पानी कैसे टिकता? आस-पास न कोई पौधा था, न घास! फिर कैसे होती हरियाली?

बच्चों ने गाँव के बड़ों से टंकी को साफ़ करने की और उसके आस-पास की जगह को फिर से हरा-भरा बनाने की बात की। पानी की समस्या का हल, न केवल उसी साल, बल्कि हमेशा के लिए ही ढूँढना था। नयी योजना बनाने

अध्यापक के लिए–बच्चों को भारत के नक्शे में कर्नाटक ढूँढ़ने के लिए कहें।

© NCERT not to be republished

के लिए यह समझना भी ज़रूरी था कि पानी पहले से कम क्यों हो गया। सब कुछ पहले जैसा क्यों नहीं रहा। इन बातों को ठीक से समझने के लिए पंचायत ने शहर के कुछ लोगों की मदद भी ली। ये लोग पानी के रखरखाव के बारे में जानते थे। सब ने मिलकर योजना बनाई और एक साथ काम किया।

टंकी एक पहाड़ी पर थी। टंकी में ठहरने की बजाए पानी नीचे बह जाता था। पानी के साथ ही मिट्टी भी बह जाती थी। उन्होंने सबसे पहले टंकी को साफ़ किया। फिर उसकी दीवार की दरारों को भर कर उसे मज़बूत बनाया। आस-पास नए छायादार पेड़ लगाए और पुराने पेड़ों को पानी दिया। घास भी लगाई। बच्चों ने ढलान पर जगह-जगह बाँध बनाए और फिर किया उन सबने बारिश का इंतज़ार।

बारिश आई और टंकी पहले की तरह ही पानी से भर गई। उन्होंने उसमें कुछ मछलियाँ भी छोड़ीं। बच्चे वहाँ की रखवाली करने लगे ताकि कोई मछली न चुरा सके और पेड़-पौधे न तोड़े।

उन्हें मेहनत का फल मिला। दो-तीन सालों में ही टंकी फिर पानी से लबालब भर गयी। उसमें पूरे साल पानी रहने लगा। आस-पास का इलाका भी घास और पेड़-पौधों से हरा-भरा हो गया। धीरे-धीरे गाँव के बाकी कुँओं और तालाबों में भी पानी भरने लगा। भीमा संघ की इस कामयाब कोशिश से अब गर्मियों में किसी को गाँव नहीं छोड़ना पड़ता।

यह सब कर दिखाया तुम्हारी उम्र के बच्चों ने—भीमा संघ ने। वे बच्चे तो अब बड़े हो गए हैं, पर भीमा संघ आज भी है। आज भी उसमें नए-नए बच्चे जुड़ते हैं और काम करते हैं।

अध्यापक के लिए—बच्चों से इस तरह के अनुभव सुनें तथा ऐसे अनुभवों को इकट्ठा करने को कहें।

© NCERT not to be republished

पाठ-19
जड़ों का जाल

0428CH19

अब्दुल छुट्टी के दिन बगीचे की देखभाल में अपने अब्बू की मदद करने गया। अब्बू आज मटर की क्यारियों में से सूखे पत्ते और जंगली घास निकाल कर एक जगह जमा कर रहे थे। अब्दुल भी पास की एक क्यारी में से घास खींचने लगा। वह घास के पौधे को आसानी से नहीं खींच पा रहा था। दो-तीन घास के पौधे खींचते ही उसके हाथ लाल हो गए। खींचने के चक्कर में बेल के सहारे के लिए जो डंडी लगी थी, गिर गई। और तो और मटर की नाज़ुक बेल भी टूट गई। अब्बू ने कहा, "तुम घास के पौधे क्यों खींच रहे हो? घास की जड़ें बहुत मज़बूत होती हैं। तुम्हें इन्हें खोदकर निकालना पड़ेगा।" अब्दुल ने खुरपी से कुछ घास के पौधों को उखाड़ना चाहा, पर मुश्किल था। उसने देखा कि घास का पौधा जितना बड़ा ज़मीन के ऊपर था, उससे कहीं ज़्यादा ज़मीन के नीचे फैला हुआ था।

- घास का छोटा-सा पौधा भी आसानी से क्यों नहीं निकल पाया, जबकि मटर की बेल के सहारे के लिए लगी डंडी एक झटके में गिर गई?
- क्या सभी पौधों की जड़ें होती हैं?
- अपने आस-पास कुछ पेड़-पौधे देखो। अंदाज़ा लगाओ, इनकी जड़ें कितनी गहरी होंगी?

© NCERT not to be republished

- तीन दिन बाद अब्दुल ने देखा कि मटर के पौधे का टूटा हुआ एक हिस्सा सूख गया था। चित्र को देखो। अंदाज़ा लगाओ, पौधे का कौन-सा हिस्सा सूखा होगा? क्यों?

अब्दुल को याद आया कि सलाद के लिए कुछ मूलियाँ निकालनी हैं। अब्दुल मूलियाँ उखाड़ने लगा। उसने सोचा—क्या ये भी जड़ें हैं? अभी अब्दुल ने कुछ ही मूलियाँ उखाड़ी थीं कि बहुत तेज आँधी-बारिश होने लगी। उन्होंने मूलियों को उठाया और घर की ओर भागे। वे अभी घर पहुँचे ही थे कि अचानक आँगन में खड़े नीम के पेड़ की टहनी टूट कर गिर गई। अब्बू बाल-बाल बचे। वे दोनों अम्मा के साथ चाय पीने बैठ गए। अब्बू बोले, "पौधे सूखे जा रहे थे। अब बारिश हो गई है, सो हमें पौधों को पानी देने की ज़रूरत नहीं है। अब हम आराम से बैठकर लूडो खेल सकते हैं।"

- तुम क्या सोचते हो कि तेज़ आँधी के बावजूद नीम का पेड़ क्यों नहीं गिरा?
- मुरझाए हुए पौधों को पानी देने से उनकी पत्तियाँ फिर से हरी हो जाती हैं। कैसे?
- तुम्हें क्या लगता है, क्या सभी पौधों को पानी चाहिए?
- तुम्हारे आस-पास किन पौधों को नियमित रूप से पानी देने की ज़रूरत होती है?

_____ _____

- अगर इन पौधों को पानी न दें, तो क्या होगा?
- अब्दुल का ध्यान इस बात पर गया कि उसने तो कभी नीम के पेड़ को पानी नहीं दिया। उसने सोचा, "नीम के पेड़ को पानी मिलता कहाँ से है?"
- तुम्हारे आस-पास ऐसे कौन-से पेड़-पौधे हैं, जिन्हें पानी देने की ज़रूरत नहीं पड़ती। उन्हें पानी कहाँ से मिलता है? कोई दो अंदाज़ लगाओ।

_____ _____

© NCERT not to be republished

- अब्दुल को यह सोचकर आश्चर्य हुआ, क्या मूली भी जड़ है। क्यों?

- नीचे दिए गए चित्र को देखो। पता लगाओ, इनमें कौन-सी सब्ज़ियाँ पौधों की जड़ें हैं।

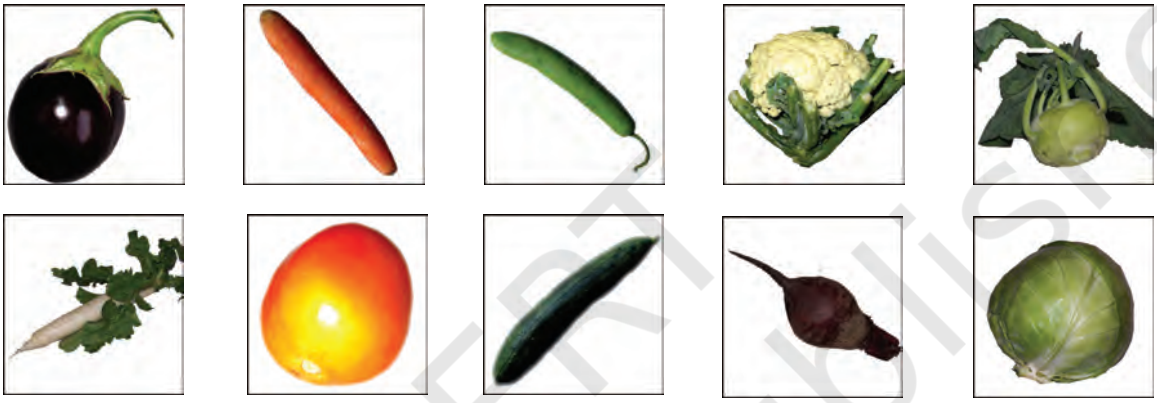

सवाल ही सवाल

आजकल तो अब्दुल के दिमाग में पौधे ही घूमते हैं। उनके बारे में अनेकों सवाल उठते हैं।

स्कूल की दीवार से एक पौधा निकलते देखकर अब्दुल सोचने लगा–

- इस पौधे की जड़ें कहाँ तक जा रही होंगी?
- इसकी जड़ों को पानी कहाँ से मिलता होगा?
- यह पौधा कितना बड़ा होगा?
- दीवार का क्या होगा?
- सामने के चित्र में दिखाए गए पौधे को पहचानो और नाम बताओ?

अध्यापक के लिए– पौधे, जड़ों द्वारा पानी कैसे लेते है, यह इस उम्र के बच्चों के लिए समझना कठिन है। फिर भी यह आवश्यक है कि उन्हें इस बारे में सोचने के अवसर दिए जाएँ। बच्चों का चिंतन अलग-अलग स्तर का होता है। यह ज़रूरी है कि उनके विचार भी सुनें।

© NCERT not to be republished

क्या तुमने कभी किसी दीवार की दरार से कोई पौधा उगते हुए देखा है? कहाँ पर? उसे देखकर क्या तुम्हारे मन में कोई सवाल उठा?

कुछ प्रश्न बताओ। अपने बड़ों से उनके उत्तर पता करो। उस पौधे का नाम पता करो, जिसे तुमने देखा।

अब्दुल ने देखा कि रास्ते में एक बहुत बड़ा पेड़ गिरा हुआ था। उस पेड़ की कुछ टूटी हुई जड़ें भी दिखाई दीं। उसे अपने घर का नीम का पेड़ याद आ गया। उसने सोचा–

- क्या इतने बड़े पेड़ को किसी ने उखाड़ा होगा या यह अपने आप ही गिर गया?
- यह पेड़ कितना पुराना होगा?
- चित्र में देखो, कैसे पेड़ के चारों तरफ़ की ज़मीन सीमेंट से पक्की की गई है। इसे बारिश का पानी कैसे मिलेगा?

बताओ

- तुम्हारे इलाके में सबसे पुराने पेड़ कौन-से हैं? अपने बड़ों से पता करो कि वे पेड़ कितने साल पुराने हैं?
- इस पेड़ पर कौन-कौन से पक्षी रहते हैं?
- क्या कभी तुमने कोई बड़ा पेड़ गिरा हुआ देखा है? उसे देखकर तुमने क्या सोचा?

अरे, जड़ें ऐसी भी!

और सुनो, एक मज़ेदार बात! बरगद के पेड़ की लटकन, जिस पर अब्दुल और तुम्हारे जैसे बच्चे झूला झूलते हैं, असल में इसकी जड़ें हैं। वे टहनियों से निकलती हैं और

© NCERT not to be republished

बढ़ते-बढ़ते ज़मीन के अंदर चली जाती हैं। ये मज़बूत खंभों की तरह पेड़ को सहारा देती हैं। दूसरे पेड़ों की तरह ज़मीन के अंदर भी बरगद की जड़ें होती हैं।

पेड़ काटने के खिलाफ़ कानून है।

सड़क पर बिजली के खंभे के पास एक इतना लंबा घना पेड़ था कि बल्ब की रोशनी भी नहीं आ रही थी। इसलिए लोगों को उसकी छँटाई की ज़रूरत हुई। ऐसा करने के लिए भी लोगों को इलाके के सरकारी दफ़्तर से लिखित मंजूरी लेनी पड़ी।

क्या तुमने कभी कोई ऐसा पेड़ देखा है, जिसकी जड़ें, टहनियों से लटकती हों?

आओ करें

क्लास में तीन या चार बच्चों के समूह में बँट जाओ। इन चीज़ों को इकट्ठा करो।

काँच का गिलास या चौड़े मुँह वाली बोतल, रुई, रबर-बैंड या धागा, कुछ दाने साबूत मूँग, गेहूँ, बाजरा, सरसों, चना या राजमा।

अब यह प्रयोग करो। हर समूह अलग-अलग प्रकार के बीज ले। एक ही तरह के (5-6) बीजों को एक कटोरी पानी में रात भर भिगो दो। एक काँच का गिलास या फिर चौड़े मुँह वाली बोतल लो। इसके मुँह पर रुई की एक तह गीली करके रखो। इसे रबर-बैंड या धागे से बाँध दो। भीगे हुए इन बीज़ों को गीली रुई पर रखो। ध्यान रखें कि रुई गीली रहे। इसे दस-बारह दिन तक रोज देखो। क्या बीजों में से कुछ निकलता हुआ दिखाई दे रहा है। पौधा चौथे और आठवें दिन कैसा दिखता है, उसका चित्र बनाओ।

दिन 4

दिन 8

इन प्रश्नों के उत्तर कॉपी में लिखो

- सूखे और भिगोये हुए बीजों में क्या अंतर दिखे?
- अगर रुई सूखी रह जाती, तो क्या होता?
- जड़ किस तरफ़ उगी? तना किस तरफ़ उगा?
- ये पौधे रुई में कितने बड़े हो पाए?
- क्या सभी बीजों में से पौधे निकले?
- जड़ों का रंग क्या है?
- क्या तुम्हें जड़ों पर बाल दिखाई दे रहे हैं?

© NCERT not to be republished

- इन पौधों को रुई से अलग करने की कोशिश करो। क्या अलग कर पाए? क्यों?
- तुमने देखा कि जड़ों ने रुई को जकड़ा हुआ था। तुम क्या सोचते हो, क्या इसी तरह से जड़ें मिट्टी को जकड़े रहती हैं?

अपने दोस्तों के उगाये हुए पौधों को भी देखो।

क्या तुम जानते हो?

ऑस्ट्रेलिया में एक पेड़ पाया जाता है, जिसका नाम है 'रेगिस्तानी ओक'। इसकी ऊँचाई तुम्हारी क्लास की दीवार के लगभग होती है और पत्तियाँ बहुत ही कम। अंदाज़ा लगाओ, इसकी जड़ें ज़मीन में कितनी गहरी जाती होंगी। सोचो, यदि ऐसे तीस पेड़ ज़मीन पर लाइन से लिटा दिए जाएँ। उस लंबाई तक ज़मीन में गहरी जाती हैं इस पेड़ की जड़ें, जब तक कि पानी तक न पहुँच जाएँ। यह पानी पेड़ के तने में जमा होता रहता है। उस इलाके में रहने वाले लोग यह बात जानते थे। जब कभी इस इलाके में पानी नहीं होता तो वहाँ के लोग इसके तने के अंदर पतला पाइप डालकर पानी निकाल लेते थे।

क्या-क्या बढ़ता है?

आरिफ़ और रूपाली में आपस में बहस छिड़ गई कि ये-ये चीज़ें बढ़ती हैं

आरिफ़ – पत्ते, मुन्ना, कली, पिल्ला, नाखून, गाड़ी

रूपाली – चाँद, पेड़, मैं, बाल, तरबूज़, मच्छर, कौआ

© NCERT not to be republished

- तुम्हें क्या लगता है, इनमें से कौन-कौन सी चीज़ें बढ़ती हैं। तुम भी अपनी एक सूची बनाओ और लिखो।

तुम अपने बारे में सोचो, तुम किस-किस तरह से पिछले कुछ वर्षों में बदले हो, जैसे–

- क्या तुम्हारी लम्बाई बढ़ी है? पिछले एक साल में कितनी?
- सोचो, अगर तुमने अपने नाखून कभी काटे ही न होते, तो वे कितने बड़े होते। अपनी कॉपी में उनका चित्र बनाकर दिखाओ।
- तुम्हारे शरीर की क्या ऐसी कोई चीज़ है, जो बढ़ती रहती है? क्या उसे समय-समय पर काटना पड़ता है?

अध्यापक के लिए– बच्चों को स्कूल अथवा अपने इलाके में विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधे लगाने के लिए प्रेरित करें। पौधे के लगाने के बाद उसकी देखभाल भी करने को कहें।

© NCERT not to be republished

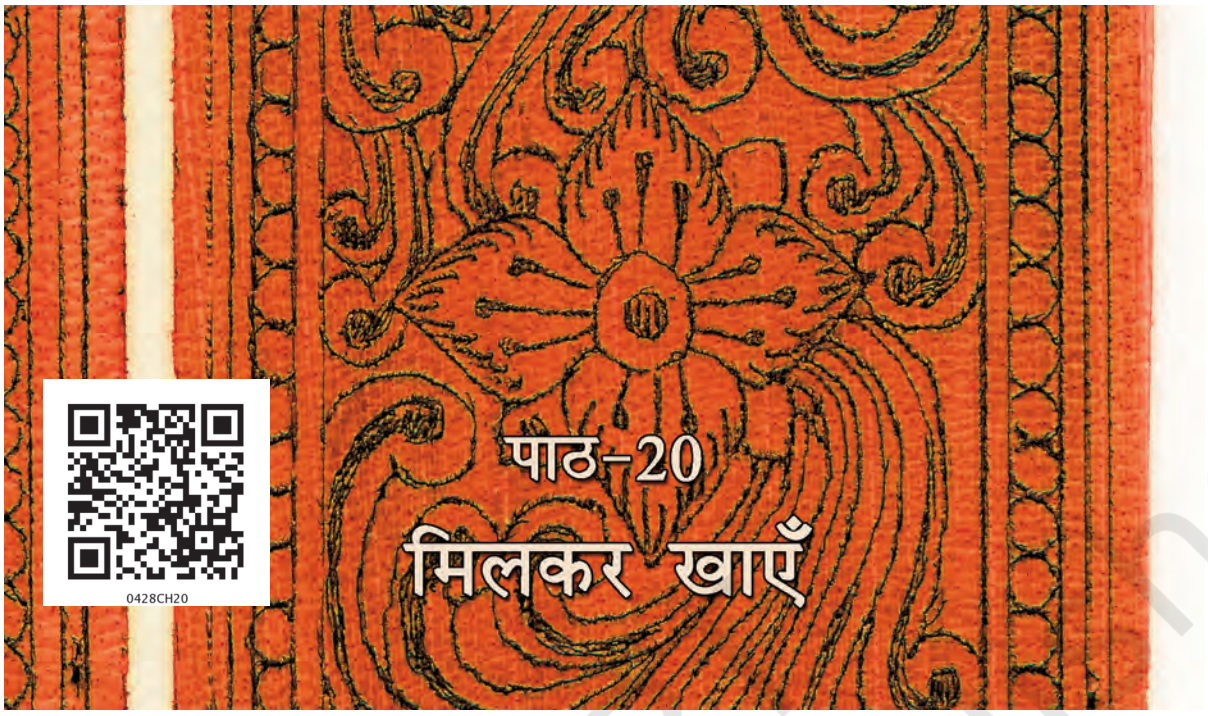

क्लास में पार्टी

छुट्टियों के बाद आज स्कूल खुला है। सभी बच्चे आपस में छुट्टियों के बारे में बातें कर रहे हैं।

मीना आरती की हथेली देखकर बोली, "तुमने मेंहदी कब लगाई?" "मामा की शादी में," आरती ने बताया। "वहाँ तो बहुत मज़ा आया होगा," डेविड बोला। "हाँ! सबसे ज़्यादा मज़ा तो खाने में आया। वहाँ हम सब भाई-बहन और रिश्तेदार एक साथ बैठकर खाते थे," आरती खुशी से चहकी। "क्यों न हम भी स्कूल में ऐसा ही कुछ करें?" रेहाना बोली।

"हाँ, हम क्लास में मिलकर पार्टी ज़रूर कर सकते हैं। कितना मज़ा आएगा, तब!" डेविड ने सुझाया। "हमारी कॉलोनी में सभी त्योहारों पर पार्टी होती है। सब घरों से पैसे इकट्ठे कर लेते हैं। कुछ खाना साथ मिलकर बनाते हैं और कुछ बाज़ार से लाते हैं," रेहाना ने कहा।

"पार्टी करने के लिए त्योहार क्यों? शनिवार को आधी छुट्टी है। उसी दिन पार्टी करते हैं," रीना बोली।

© NCERT not to be republished

सबने मिलकर तय किया कि पार्टी के लिए कौन क्या-क्या लाएगा। पार्टी में बहुत मज़ा आया। तरह-तरह की खाने की चीज़ें थीं। सब ने मिलकर बहुत-से खेल खेले। नाच-गाना भी हुआ। बच्चों ने यह तय किया कि वे अकसर मिलकर पार्टी किया करेंगे।

कॉपी में लिखो

- क्या तुम्हें मिल-जुलकर खाना अच्छा लगता है?
- कौन-कौन-से मौकों पर तुम सब मिलकर खाते हो?
- क्या तुमने कभी क्लास में पार्टी की है? कब की थी और उसके लिए क्या-क्या किया था?
- पार्टी में तुम और तुम्हारे साथी क्या-क्या चीज़ें लाए थे?
- तुम सभी ने क्या-क्या खाया?
- तुमने अपनी क्लास पार्टी में किन-किन को बुलाया था?
- क्या ऐसा भी हुआ है कि स्कूल में काम करने वाले कुछ लोगों को तुम नहीं बुला पाए? वे कौन थे?
- क्या तुमने अपनी क्लास पार्टी में विशेष कपड़े पहने थे?
- पार्टी को मज़ेदार बनाने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है? चर्चा करो।

अध्यापक के लिए–कक्षा में पार्टी करवाने का एक कारण बच्चों को मिल-जुलकर, एक साथ बैठकर खाने के अवसर देना है। इसके लिए बच्चों को नाच-गाना, नाटक जैसे कार्यक्रम तैयार करने के लिए भी प्रेरित किया जा सकता है।

© NCERT not to be republished

बीहू का त्योहार

भेला-घर

सोनमोनी जल्दी से उठी और भागी-तनवीर, फ़ातिमा और मज़ानी के पास। आज बीहू त्योहार जो मनाया जा रहा है—चावल की नई फ़सल कटी है न! चारों सहेलियाँ मस्ती में गीत गाने लगीं। वे बातें करतीं-करतीं बाँस से भेला-घर बनाने लगीं। सभी मिलकर बीहू की तैयारियों की बातें कर रही हैं। तुम भी पढ़ो, इनकी बातचीत।

सोनमोनी – जल्दी करो! रात के भोज से पहले घास और बाँस से भेला-घर बनाकर तैयार करना है।

तनवीर – आज तो पूरे गाँव के लोग रात को एक साथ खाना खाएँगे। भई, 'उरुका' जो है!

फ़ातिमा – भोज की तैयारियाँ शुरू हो गईं क्या?

सोनमोनी – हाँ! हाँ! सभी परिवारों ने पैसे मिलाकर 'बोरा' चावल, मछली, सब्ज़ी आदि का इंतज़ाम किया है। उन्होंने मेज़ी के लिए लकड़ी का इंतज़ाम भी किया है। हरिया और भादिया ने पैसे तो नहीं दिए हैं, पर वे सारा काम करवा रहे हैं।

फ़ातिमा – माँस, मछली और सब्ज़ियों का क्या हुआ?

सोनमोनी – कुछ लोग यही सब खरीदने गए हुए हैं। बोरा चावल भिगो दिया है। पीठा बनाने के लिए पूरा गाँव काम में लगा हुआ है। कुछ खाना पका रहे हैं और कुछ शकरकंदी भून रहे हैं। कुछ लोग रात को खाना खिलाने में लगेंगे। शाम को सभी को चाय और पीठा भी देंगे।

अध्यापक के लिए– 'माघ बीहू', 14 और 15 जनवरी (असमिया कैलेण्डर के दसवें महीने 'माघ' की प्रथमा एवं द्वितीया तिथि) को मनाया जाता है। पहले दिन को 'उरुका' कहते हैं। इस दिन अस्थायी शेड (छप्पर) बनाते हैं, जिसे भेला-घर कहते हैं और सामूहिक भोज का आयोजन होता है। 'बोरा' असम में खाए जाने वाले चावलों की एक किस्म है, जो पकने के बाद चिपचिपे हो जाते हैं। बच्चों को नक्शे में असम ढूँढ़ने के लिए प्रेरित करें।

© NCERT not to be republished

तनवीर – रात के खाने में 'चेवा' चावल भी मिलेगा न? मुझे वह बहुत ही पसंद है।

फ़ातिमा – कैसे पकाएँगे चेवा चावल?

सोनमोनी – 'ताओ' (कड़ाही) को आग पर रखकर उसमें पानी उबालेंगे और उस पर रखेंगे भीगे हुए चावलों से भरी हुई कड़ाही। फिर उसे केले के पत्तों से ढँक देंगे। थोड़ी देर में हो जाएगा चेवा चावल तैयार।

बताओ

- बीहू त्योहार कहाँ मनाया जाता है?
- तुम्हारे यहाँ कौन-कौन-से त्योहार मिल कर मनाए जाते हैं?
- क्या इन त्योहारों पर भी सब लोग मिलकर पकाते और खाते हैं?
- क्या-क्या विशेष पकाते हैं और कैसे?
- क्या खाना पकाने में किसी तरह के खास बर्तन इस्तेमाल होते हैं? कौन-से?
- सबसे बड़ा बर्तन कौन-सा होता है? कॉपी में उसका चित्र बनाओ। अंदाज़ा लगाकर बताओ कि उसमें एक बार में पके खाने को कितने लोग खा सकते हैं।

© NCERT not to be republished

मेज़ी

भेला-घर बन कर तैयार हो गया। अब ये सहेलियाँ भागीं तैयार होने के लिए। थोड़ी ही देर में गाँव के सब लोग भी आ गए। ज़्यादातर औरतों ने *पाट* और *मूगा* की *मेखला चादर* पहनी थी। सोनमोनी और उसकी सहेलियाँ भी भेला-घर के पास पहुँच गईं। ढोल बजने लगा और सभी मस्ती में झूमते हुए गीत गाने लगे। फिर सब ज़मीन पर बैठ गए। उन्हें केले के पत्तों पर खाना परोसा गया। सबने हँसते-गाते और बातें करते हुए मिलकर खाना खाया। सभी रात भर भेला घर में ही रहे।

मज़ानी – सोनमोनी! अब हम लोगों को सोना चाहिए। सुबह जल्दी उठकर 'मेज़ी' जलाना है और भेला घर भी।

पता लगाओ और करो

- अंदाज़ा लगाकर बताओ कि इस भोज में लगभग कितने लोगों ने एक साथ खाना खाया होगा।
- क्या तुमने कभी बीहू नृत्य देखा है? कैसा लगा?
- पता करो–तुम्हारी क्लास के बच्चे कौन-कौन से त्योहार मनाते हैं और उन त्योहारों पर क्या खास खाया जाता है। त्योहार पर खाने की चीज़ कौन बनाता है?
- क्या तुम किसी त्योहार या अवसर पर कुछ खास तरह के या खास रंग के कपड़े पहनते हो? उन कपड़ों के चित्र अपनी कॉपी में बनाओ।
- क्या तुम त्योहारों पर कुछ खास तरह के गाने गाते हो? कुछ गीत सीखकर क्लास में सुनाओ।

© NCERT not to be republished

- त्योहारों पर होने वाले कुछ खास नृत्य सीखो। फिर स्कूल की सुबह की सभा में ये नृत्य अपने दोस्तों के साथ करके दिखाओ।
- अपनी उम्र के बच्चों के साथ मिलकर क्या तुम कुछ खास करते हो, जैसे कोई खेल, गप-शप, सिनेमा देखना या कुछ और?

मिड-डे मील

दोपहर का एक बजने वाला है। पेट में चूहे दौड़ रहे हैं। हम बच्चों का ध्यान पढ़ाई पर कम और बाहर बरामदे से आने वाली खाने की खुशबू पर ज़्यादा है।

टन्..टन्..टन्...! आखिरी घंटी बज ही गई। सभी बच्चे बाहर की ओर भागे। कुछ खाने के बर्तनों की तरफ़ तो कुछ हाथ धोने। मास्टर मोशाय ने सभी को आँगन के कोने में लगे पानी के हैंडपंप की तरफ़ भेजा।

"आनंदो! देखो तो, सब ठीक से तो हाथ धो रहे हैं न!" उन्होंने कहा।

हाथ धोकर हम सभी ने कतार में खड़े होकर खाना लिया। कुछ ने अपने डिब्बे में, तो कुछ ने थाली में। इसके बाद सब एक बड़ा गोला बनाकर बैठ गए। खाने से पहले सबने मिलकर गाया–

साथ हम खेलें,
साथ हम खाएँ,
साथ करेंगे, अच्छे काम,
और रहें हम, हर दम साथ।

हफ़्ते के हर दिन दोपहर के खाने में क्या मिलेगा, यह दीदी मोनी के ऑफ़िस के बाहर लिखा होता है। कभी भात-शुक्तो (चावल और रसेवाली सब्ज़ी), तो कभी लूची और छोला-दाल। कभी मिष्टी मिल जाए, तो क्या मज़े!

दोपहर के खाने के समय हमारे स्कूल में एक और मज़ेदार बात होती है। गोले में रोज़ जगह बदलकर अलग-अलग बच्चों के साथ बैठना होता है। मुझे यह बहुत अच्छा लगता है। कई बच्चों से पहचान हो जाती है और कई नए दोस्त भी बन जाते हैं।

© NCERT not to be republished

पहले कभी-कभी भात में कंकड़ होते थे, तो कभी दाल कच्ची। तब लोगों ने कहा—हमारे बच्चे ऐसा खाना नहीं खाएँगे। दीदी मोनी ने समझाया—हम सभी को मिलकर देखना चाहिए कि खाना साफ़-सुथरा, ठीक से पका हुआ, गरम और ताज़ा हो। दोपहर का खाना सभी बच्चों को मिलना ही चाहिए। बच्चों के घरों से लोगों ने मदद करने की ठानी।

अब सब ठीक है। गरमा-गरम, पका हुआ खाना, वह भी सभी को एक साथ! कभी-कभी जितना खाना मिलता है, उससे छोटे बच्चों का पेट तो भर जाता है, पर मेरा और मेरे दोस्तों का नहीं।

आजकल तो स्कूलों में भोजन मिलता है, पर पहले ऐसा नहीं था। जब मेरी दीदी प्राइमरी स्कूल में पढ़ती थीं, तब खाना नहीं दिया जाता था। कई बच्चे तो सुबह बिना खाए ही स्कूल जाते थे। खाली पेट और दिन-भर पढ़ाई—वे कैसे करते होंगे?

पता करो और कॉपी में लिखो

- तुम भी अपने स्कूल के खाने के बारे में बताओ। अगर तुम्हारे स्कूल में खाना नहीं मिलता, तो किसी ऐसे दोस्त से पूछो, जिसके स्कूल में मिलता है। लिखो—
  - भोजन किस समय मिलता है?
  - तुम्हें यह खाना कैसा लगता है?
  - जितना खाना मिलता है, क्या उससे तुम्हारा पेट भर जाता है?
  - क्या अपना बर्तन साथ लाते हो या स्कूल से मिलता है?
  - स्कूल में दोपहर के खाने में क्या-क्या मिलता है?
  - खाना कौन परोसता है?
  - क्या तुम्हारे टीचर तुम्हारे साथ खाते हैं?
  - हफ़्ते भर के खाने के बारे में क्या स्कूल के बोर्ड पर लिखा होता है?

© NCERT not to be republished

- बुधवार और शुक्रवार को दोपहर के खाने में तुम्हें क्या मिलेगा?
- अगर तुम्हें अपने स्कूल में मिलने वाले खाने की सूची में बदलाव करने का मौका मिले, तो क्या-क्या बदलना चाहोगे? तुम क्या-क्या खाना पसंद करोगे। अपने खाने की सूची बनाओ।

दिन	खाने की चीज़
सोमवार	
बुधवार	
शुक्रवार	

- यदि तुम्हारे स्कूल में खाना नहीं मिलता है, तो पता करो कि ऐसा क्यों है?

बच्चों का हक
'मिड-डे मील'

हमारे देश के बहुत-से बच्चों को भरपेट खाना नहीं मिलता। इनमें से कई बच्चे तो स्कूल बिना कुछ खाए जाते हैं, खाली पेट होने के कारण, पढ़ाई में ठीक से ध्यान नहीं लगा पाते।

कुछ साल पहले हमारे देश की सबसे बड़ी अदालत ने एक बहुत बड़ा फ़ैसला सुनाया – प्रारंभिक शिक्षा (कक्षा 1-8) के स्कूलों में सभी बच्चों को पका हुआ, गरम खाना मिलना ही चाहिए। यह सभी बच्चों का अधिकार है।

- तुम मिड-डे मील के बारे में अपनी शिकायत कहाँ दर्ज करोगे?
- शिकायत दर्ज करने के लिये टोल फ्री (Toll-free) फोन नम्बर, वेबसाइट या ई-मेल के बारे में पता करो।

© NCERT not to be republished

ट्रिनऽऽऽ...! घंटी बजते ही मनप्रीत ने दरवाज़ा खोला। बाहर दिव्या और स्वास्तिक को देखते ही वह खुशी से चिल्लाई, "गुरनूर! देखो तो, कौन आया है?" गुरनूर दौड़ती हुई आई। दोस्तों को देखते ही वह खुशी से उनसे लिपट गई और बोली, "तुम लोग अपने बोर्डिंग स्कूल से कब आए?" "कल ही! तुम्हारे मम्मी-पापा कहाँ हैं? उनसे तो मिल लें," स्वास्तिक बोला।

"वे तो गुरुद्वारे गए हैं। हम भी वहीं जा रहे हैं," गुरनूर ने जवाब दिया। "अरे, वाह! चलो हम भी चलते हैं," दिव्या खुशी से बोली।

गुरनूर ने पूछा, "तुम तो बस छुट्टियों में ही घर आते हो। क्या तुम्हें हॉस्टल में रहना अच्छा लगता है? कैसे रह लेते हो मम्मी-पापा के बिना?"

"उनकी याद तो आती है, पर हॉस्टल में बड़े मज़े भी आते हैं। भले ही कभी-कभी हमें खाना पसंद नहीं आता, पर सभी बच्चों के साथ एक साथ बैठकर खाना खाने में मज़ा आता है," दिव्या ने बताया।

© NCERT not to be republished

"हॉस्टल में जब किसी के घर से खाने की कोई चीज़ आती है, तो सभी बच्चे उसके कमरे में पहुँच जाते हैं, और बस! मिनटों में चीज़ खत्म," स्वास्तिक ने हँसते हुए बताया।

- क्या तुम बोर्डिंग स्कूल में पढ़ते हो? अगर नहीं, तो किसी हॉस्टल में रहने वाले बच्चे से बातचीत करके पता करो–
  - बोर्डिंग स्कूल और दूसरे स्कूल किन-किन बातों में अलग होते हैं?
  - वहाँ पर कैसा खाना मिलता है?
  - बच्चे कहाँ बैठकर खाना खाते हैं?
  - बोर्डिंग स्कूल में बच्चों के लिए खाना कौन बनाता है? कौन परोसता है?
  - बर्तन कौन धोता है?
  - क्या कभी बच्चों को घर के खाने की याद आती है?
  - क्या तुम बोर्डिंग स्कूल में पढ़ना चाहोगे? क्यों?

गुरुद्वारे में

बच्चे बातें करते हुए गुरुद्वारे पहुँचे। वहाँ सभी ने सिर ढँके।

वे गुरुद्वारे के रसोई घर में गए, जो बहुत बड़ा था। वहाँ कई काम हो रहे थे। खाना बड़े-बड़े बर्तनों में पक रहा था। वहाँ एक बड़े पतीले में उड़द और चने की दाल पक रही थी। दूसरी तरफ़ पतीले में आलू और गोभी की सब्ज़ी बन रही थी। स्वास्तिक ने कहा, "अरे! देखो गुरनूर तुम्हारे पापा वहाँ हैं! चलो, मिलकर आते हैं।"

© NCERT not to be republished

मनजीत सिंह बच्चों से बहुत प्यार से मिले और पूछा, "तुम सब यहाँ क्या कर रहे हो?"

"अंकल! क्या हम भी खाना पकाने में मदद करें? आप क्या बना रहे हैं?" स्वास्तिक ने पूछा।

मनजीत सिंह ने बताया, "मैं कड़ाह प्रसाद बना रहा हूँ। इस बड़ी-सी कड़ाही में आटे को भून रहा हूँ। इसमें बड़ी मेहनत लगती है।"

"मुझे पता है, यह हलुआ है। इसमें आप चीनी कब डालेंगे?" दिव्या ने पूछा।

तभी उन्हें मनप्रीत की मम्मी दिखाई दीं। वे लोग मुस्कराते हुए उनके पास गए। "आंटी! आप क्या कर रही हैं?" दिव्या ने पूछा। "बेटा, हम लोग तंदूर में रोटी सेंक रहे हैं," उन्होंने बताया। दिव्या ने आश्चर्य से कहा, "आंटी, इतनी सारी रोटियाँ एक साथ! मैं भी सेकूँ?" "हाँ, हाँ, आओ, तुम भी करके देखो। यहाँ तो हर कोई सेवा कर सकता है। लेकिन पहले अपने हाथ धो लो," आंटी ने कहा।

दिव्या जल्दी से हाथ धोकर आ गई। तंदूर में हाथ डालते ही उसे बहुत गर्म लगा। सेंकना छोड़ कर वह रोटियों पर घी लगाने लगी।

स्वास्तिक ने हैरानी से पूछा, "इतने सारे लोगों के लिए खाना पकाने का सामान कौन लाता है?"

एक औरत ने बताया, "सभी मिल-जुल कर मदद करते हैं। कोई सामान देता है,

© NCERT not to be republished

तो कोई पैसे। जिसका जैसा मन होता है, वैसे ही काम में मदद करते हैं।"

मनप्रीत ने चिढ़ाते हुए कहा, "क्यों स्वास्तिक! कैसा लग रहा है? पहले भी कभी रसोई का काम किया है क्या?"

"नहीं, पर सबके साथ काम करने में बहुत अच्छा लग रहा है," स्वास्तिक ने कहा, पता ही नहीं चला कि कब रोटी, चावल, हलुआ, दाल और सब्ज़ी तैयार हो गए।

अरदास के बाद सभी को कड़ाह प्रसाद दिया जाने लगा। कुछ लड़कों ने जल्दी से बरामदे में दरियाँ बिछा दीं। सब लोग लाइनों में बैठ गए। कुछ लोग पत्तलों में खाना परोसने लगे और कुछ लोग पानी। सभी ने मिल-जुलकर खाना खाया।

खाने के बाद सब ने अपने-अपने पत्तल उठा कर बड़े से ड्रम में डाले। अंत में खाना-खिलाने वाले लोगों ने भी मिलकर एक साथ खाया और वहाँ की सफ़ाई करके बर्तन भी साफ़ किए।

बताओ

- गुरुद्वारे में एक साथ मिलकर खाना पकाने और खाने को 'लंगर' कहते हैं। क्या तुमने कभी लंगर में खाना खाया है? कब और कहाँ?
- कितने लोग खाना बना रहे थे और कितने लोग खाना परोस रहे थे?
- क्या किसी दूसरे अवसर पर भी तुमने बहुत से लोगों के साथ मिलकर खाना खाया है? कब और कहाँ? वहाँ किस-किस ने खाना बनाया और परोसा था?

© NCERT not to be republished

गुरुद्वारे में लंगर के कुछ चित्र

© NCERT not to be republished

पाठ–22
दुनिया मेरे घर में

0428CH22

नोक-झोंक

रोज़ की तरह आज फिर मैरीटा के घर में बहस शुरू हो गई कि टी.वी. पर कौन–सा प्रोग्राम देखें? मैरीटा का भाई क्रिकेट मैच देखना चाहता है, जबकि छोटी सूसन, अपने पसंदीदा गाने का प्रोग्राम। मम्मी और आंटी वैसे तो गहरे दोस्त हैं, पर उनकी पसंद अलग–अलग है। मम्मी समाचार देखना चाहतीं हैं, जबकि आंटी एक सीरियल। मैरीटा कार्टून देखना चाहती है और डैडी को फुटबाल मैच देखना है। डैडी कहते हैं कि वे बस शाम को ही टी.वी. देख पाते हैं। आखिर सबको फुटबाल मैच ही देखना पड़ा।

© NCERT not to be republished

बताओ

- क्या तुम्हारे घर में भी पंखा, टी.वी., समाचारपत्र, कुर्सी या किसी और चीज़ को लेकर झगड़े होते हैं?
- तुम्हारे घर के ऐसे झगड़े कौन सुलझाता है?
- अपने घर के ऐसे झगड़ों के बारे में कोई मज़ेदार किस्सा सुनाओ।
- क्या तुमने कहीं और एक ही चीज़ के लिए लोगों को आपस में झगड़ते देखा है? किस बात पर?

अलग क्यों?

शाम के सात बजे हैं। प्रतिभा अपनी सहेली के घर से भागी-भागी अपने घर जा रही है। नुक्कड़ पर उसके भाई संदीप और संजय दोस्तों के साथ खेलने में लगे हैं। उन्हें घर पहुँचने की कोई जल्दी नहीं है। उन्हें देर से घर पहुँचने पर कोई नहीं टोकता।

प्रतिभा को यह बात ठीक नहीं लगती। उस के लिए एक नियम और उसके भाइयों के लिए दूसरा। पर वह क्या करे?

बताओ

- क्या तुम्हारे या किसी दोस्त के परिवार में ऐसी बातें होती हैं? तुम इस बारे में क्या सोचते हो?
- क्या लड़का-लड़की और आदमी-औरत के लिए अलग-अलग नियम होने चाहिएँ?

© NCERT not to be republished

- सोचो–अगर लड़कियों के लिए बनाए गए नियम, लड़कों पर और लड़कों के लिए बनाए गए नियम लड़कियों पर लागू हों, तो क्या होगा?

पिलू मामी

एक दिन फली, नाज़ू और उनके दोस्त पिलू मामी के साथ समुद्र तट पर घूमने गए। पानी और रेत में खूब खेलने के बाद बच्चों ने आकाशी झूले में चक्कर लगाए, भेलपूरी खाई और गुब्बारे भी खरीदे। बाद में सभी ने मज़े से ठंडी-ठंडी कुल्फ़ी खाई। कुल्फ़ी वाले ने गलती से सात के बजाए पाँच कुल्फ़ी के ही पैसे माँगे। बच्चों ने सोचा 'चलो पैसे बच गए।' पर पिलू मामी ने कुल्फ़ीवाले को सही हिसाब समझाया और सात कुल्फ़ियों के ही पैसे दिए।

उस दिन बच्चों ने पिलू मामी से जो बात सीखी, उसे शायद वे कभी नहीं भूलेंगे।

- अपनी कल्पना से, इस कहानी का अंत बदलकर कॉपी में लिखो।

© NCERT not to be republished

- क्या तुम्हारे परिवार में भी कोई पिलू मामी की तरह है? कौन?
- अगर पिलू मामी कम पैसे देकर वहाँ से चलीं जातीं, तो बच्चे इस बारे में क्या सोचते? तुम इस बारे में क्या सोचते हो?

मैं क्या करूँ?

अक्षय को अपनी दादी-माँ से बहुत लगाव है। वे भी उसे बहुत प्यार करतीं हैं। वे उससे खूब रोचक बातें करतीं हैं। वे अक्षय के दोस्त अनिल को पसंद करतीं हैं। पर वे अक्षय को एक बात बार-बार समझाती हैं – उसे कभी भी अनिल के घर का खाना नहीं खाना और तो और पानी भी नहीं पीना है। वे कहतीं हैं कि अनिल के परिवार वाले उनके परिवार से बहुत अलग हैं।

एक दिन अनिल के घर के पास वाले बड़े मैदान में वॉलीबाल का मैच हुआ। उस दिन बहुत गर्मी थी। मैच के बाद सभी प्यासे और थके थे। अनिल सबको अपने घर ले गया। सब दोस्तों को अनिल की माँ ने पानी दिया। जब अनिल ने अक्षय के हाथ में पानी का गिलास थमाया, तो अचानक उसे दादी की चेतावनी याद आ गई। हाथ में गिलास लिए अनिल को देख, अक्षय को समझ नहीं आया कि वह क्या करे।

© NCERT not to be republished

बताओ

- तुम्हें क्या लगता है, अक्षय क्या करेगा?
- अक्षय उलझन में क्यों पड़ गया?
- अक्षय की दादी-माँ ने उसे अनिल के घर का पानी तक पीने के लिए मना क्यों किया होगा?
- क्या तुम किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हो, जो अक्षय की दादी-माँ की तरह ही सोचते हैं?
- क्या तुम अक्षय की दादी-माँ से सहमत हो?
- तुम्हारी राय में अक्षय को क्या करना चाहिए?

किसका फ़ैसला?

धोंडू का परिवार बहुत बड़ा है। परिवार के रुपए-पैसे और खेतीबाड़ी का सारा काम बड़े काका ही सँभालते हैं। परिवार के छोटे-बड़े सभी निर्णय वे ही लेते हैं।

अभी तक तो धोंडू खेत में काम करता था। पर, अब वह कुछ नया करना चाहता है। वह बैंक से कुछ पैसे उधार लेकर आटे की चक्की लगाना चाहता है। गाँव में एक भी चक्की नहीं है। धोंडू को पूरा यकीन है कि उसके नए काम से परिवार को फ़ायदा होगा। उसने बाबा को तो मना लिया है, पर बड़े काका उसकी एक भी सुनने को तैयार नहीं हैं।

अध्यापक के लिए–इन उदाहरणों के द्वारा बच्चों का ध्यान उन बातों की तरफ़ खींचा जा सकता है, जो हमारे परिवार और समाज में सामान्यत: होती हैं। इन सभी बातों का हम पर गहरा असर होता है। बच्चों को इन बातों के बारे में सोचने और स्वयं के विचार बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। उनके विचारों पर कक्षा में चर्चा करवाई जा सकती है।

© NCERT not to be republished

बताओ

- तुम धोंडू की जगह होते तो क्या करते?
- क्या तुम्हारे साथ कभी ऐसा हुआ है कि तुम कुछ करना चाहते हो, पर घर के बड़ों ने मना किया हो?
- तुम्हारे घर में ज़रूरी फ़ैसले कौन लेता है? तुम्हें इस बारे में क्या लगता है?
- अगर तुम्हारे परिवार में या रिश्तेदारी में हमेशा एक ही व्यक्ति अपनी बात मनवाता रहे, तो तुम्हें कैसा लगेगा?

मुझे यह अच्छा नहीं लगता!

मीना और रितु स्टापू खेल कर घर लौट रहे थे। "चलो न, मेरे घर चलो," मीना ने रितु को खींचते हुए कहा।

"तुम्हारे मामा तो घर पर नहीं होंगे? अगर वे होंगे, तो मैं नहीं आऊँगी," रितु ने जवाब दिया।

"पर क्यों? मामा को तो तुम अच्छी लगती हो। कह रहे थे – अपनी सहेली रितु को घर लाना। मैं दोनों को खूब सारी चॉकलेट खिलाऊँगा।"

रितु ने मीना से अपना हाथ छुड़ाया और बोली, "तुम्हारे मामा से मुझे डर लगता है। हाथ भी पकड़ते हैं, तो मुझे अच्छा नहीं लगता।" यह कहकर रितु अपने घर चली गई।

अध्यापक के लिए–कुछ बच्चों के अनुभव रितु की तरह के हो सकते हैं। कक्षा में इन पर चर्चा होने से बच्चों को अपने अनुभवों के बारे में सोचने का मौका मिलेगा। इससे उनका धीरज भी बँधेगा और शिक्षक के प्रति विश्वास भी बढ़ेगा। ज़रूरत के अनुसार, बच्चों से व्यक्तिगत रूप से बात की जा सकती है। अगर स्कूल में बच्चों के सलाहकार (काउंसलर) हों, तो उनकी मदद भी ली जा सकती है।

© NCERT not to be republished

बताओ

- क्या तुम्हें भी कभी किसी का छूना बुरा लगा है? किसका छूना तुम्हें अच्छा नहीं लगा?
- अगर तुम रितु की जगह होते, तो क्या करते?
- ऐसा होने पर और क्या किया जा सकता है?
- सभी का छूना एक जैसा नहीं होता। जब मीना के मामा रितु का हाथ पकड़ते थे, तब उसे अच्छा नहीं लगता था, लेकिन उसे मीना का हाथ पकड़ना अच्छा लगता था। सोच कर बताओ, ऐसा अंतर क्यों था?

अध्यापक के लिए– यदि कुछ बच्चे अपने परिवार के सदस्यों की आदतों जैसे नशीली/मादक दवाओं की लत के बारे में बताना चाहते हों तो ऐसे किस्सों पर बात-चीत बड़ी ही संवेदनशीलता से की जानी चाहिए। उनसे होने वाले हानिकारक प्रभाव पर चर्चा जरूरी है। इन मुद्दों पर आप सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी चर्चा अवश्य करें।

कभी-कभी कुछ ऐसे परिवारों (नशीली दवाओं की लत) के बच्चों में भी यह लत पड़ जाती है। यदि उन बच्चों में या किसी अन्य बच्चे में ऐसा व्यवहार दिखाई दे तो उनसे अलग से बात-चीत की जानी चाहिए ताकि समय पर उनकी यह लत छुड़वाई जा सके। इस विषय पर बच्चों से पोस्टर अथवा चार्ट बनवाएँ और उन पर चर्चा करें।

© NCERT not to be republished

मुख्तापुर गाँव में रहने वाले वाणी और प्रसाद के घर में रंग-बिरंगे धागों का ढेर लगा रहता है। उनके अम्मा-अप्पा और परिवार के सभी लोग बुनाई का काम करते हैं। यह बुनाई बहुत ही सुंदर और अपने-आप में अनोखी होती है।

उनका गाँव तेलंगाना राज्य के पोचमपल्ली कस्बे के पास है। यहाँ ज़्यादातर परिवार बुनकर हैं। इसलिए इस बुनाई को पोचमपल्ली नाम से पहचाना जाता है।

इन गाँवों के लोग बहुत पुराने समय से यह काम कर रहे हैं। वाणी और प्रसाद के अम्मा-अप्पा ने अपने परिवार के बड़ों से यह बुनाई सीखी। अब वाणी और प्रसाद भी स्कूल से आकर अपने अम्मा-अप्पा की मदद करते हैं।

अध्यापक के लिए–बच्चों का ध्यान इस ओर दिलाएँ कि पारंपरिक व्यवसाय अधिकतर घर में ही सीखे जाते हैं। इनमें पोचमपल्ली कारीगरी की तरह बहुत सारे हुनर सीखने होते हैं। इसी तरह के अन्य पारंपरिक व्यवसायों, जैसे- कालीन बनाना, खिलौने बनाना, इत्र बनाना इत्यादि पर चर्चा करवाई जा सकती है। बच्चों को भारत के नक्शे में आँध्र प्रदेश ढूँढ़ने के लिए कहें।

© NCERT not to be republished

पोचमपल्ली साड़ी बनाने का तरीका

2022-23

धागे से कपड़े तक

अप्पा पोचमपल्ली से धागे की लड़ियाँ लाते हैं। अम्मा लड़ियों को उबलते पानी में डालकर उनकी गंदगी और दाग धोतीं हैं। फिर सब मिलकर धागों को सुंदर रंगों में रंगते हैं और सुखाकर उनकी गट्ठी बनाते हैं। धागे की गट्ठियाँ करघे पर लपेटी जाती हैं। फिर इनसे कपड़े बुने जाते हैं। रेशम का धागा हो तो रेशमी कपड़ों, साड़ियों या सूटों के लिए कपड़े बुने जाते हैं। सूती धागे से भी साड़ियाँ, कपड़ों के थान और चादरें बुनी जाती हैं।

करघे में कई सुइयाँ होती हैं। डिज़ाइन के हिसाब से सुइयों का नंबर घटता-बढ़ता है। कारीगर चमकदार रंगों की बहुत ही सुंदर पोचमपल्ली साड़ियाँ बुनते हैं। इन कारीगरों ने अपनी इस कला से इलाके का नाम दुनियाभर में मशहूर कर दिया है।

खतरे में कला

ऐसी साड़ी बुनने के लिए अच्छी कारीगरी चाहिए। इसके लिए कई दिनों तक कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। फिर भी साड़ियाँ सही दाम में बेचना बहुत मुश्किल होता है। रेशम लगातार महँगा होता जा रहा है। बड़े दुकानदार बुनकरों को तो साड़ी का बहुत ही कम पैसा देते हैं। खुद वे भाव बढ़ा-चढ़ा कर बेचते हैं। इसीलिए कई बुनकर यह काम छोड़ रहे हैं। वे अपना गाँव छोड़कर बड़े शहरों में मज़दूरी करने जा रहे हैं। इस समस्या का कुछ हल निकालना चाहिए। बरसों पुरानी बुनकरों की यह कला कहीं धीरे-धीरे खो न जाए।

अध्यापक के लिए–ऐसे परंपरागत व्यवसायों में भी कई औज़ारों और कलाओं का इस्तेमाल होता है। इस बात पर भी ज़ोर डालें कि अकसर एक चीज़ को बनाने के लिए परिवार के सभी लोग मिलकर काम करते हैं और सभी का काम बँटा होता है।

© NCERT not to be republished

चर्चा करो

आज वाणी और प्रसाद जैसे कई बच्चों ने अपने परिवारों से यह सुंदर कला सीख ली है। क्या बड़े होकर ये भी अपने बच्चों को इस कला के हुनर सिखा पाएँगे?

इनके उत्तर कॉपी में लिखो

- क्या तुमने कभी किसी को करघे पर कुछ बुनते देखा है? क्या और कहाँ?
- साड़ी के धागों को रंगा जाता है। क्या तुम किसी और चीज़ के बारे में जानते हो, जिसको रंगा जाता है?
- वाणी और प्रसाद के गाँव में जाओ तो लगता है कि जैसे पूरा गाँव साड़ियाँ ही बना रहा है। क्या तुम कोई ऐसा काम जानते हो, जो एक ही जगह के बहुत सारे लोग करते हैं?
- क्या वे कोई चीज़ तैयार करते हैं?
- उस को तैयार करने का तरीका पता करो।
- उस चीज़ को बनाने के लिए क्या आदमी और औरतें अलग-अलग तरह के काम करते हैं?
- क्या उस चीज़ को बनाने में बच्चे भी मदद करते हैं?

पता करो और लिखो

- किसी लुहार, बढ़ई या कुम्हार से बातचीत करो और उनके काम के बारे में पता लगाओ।

- उन्होंने अपना काम कहाँ से सीखा?

© NCERT not to be republished

- उनको काम में क्या-क्या चीज़ें सीखनी पड़ती हैं?

- क्या उन्होंने अपना काम अपने परिवार में किसी और को भी सिखाया है?

- नीचे तालिका में कुछ कामों की सूची दी गई है। क्या तुम ऐसे लोगों को जानते हो, जो ये काम जानते हैं? उन लोगों के नाम लिखो। पता करो कि उन्होंने ये काम किस से सीखे।

काम	**उनके नाम, जो यह काम करते हैं**	**उन्होंने यह काम कहाँ से सीखा**
कपड़े की बुनाई करना	वाणी, प्रसाद के अम्मा-अप्पा	अपने परिवार से
खाना पकाना		
साइकिल रिपेयर करना		
हवाई जहाज़ उड़ाना		
सिलाई-कढ़ाई करना		
गाना गाना		
जूते बनाना		
पतंग उड़ाना		
खेती करना		
बाल काटना		

अध्यापक के लिए–पोचमपल्ली की तरह ही भारत के कई इलाकों में कुछ खास चीज़ें बनाई जाती हैं। इन चीज़ों के नाम उस इलाके के नाम से ही मशहूर हो गए हैं, जैसे-कुल्लू की शॉल, मधुबनी पेंटिंग, असम की सिल्क, कश्मीरी कढ़ाई। इस पर चर्चा करवाई जा सकती है।

© NCERT not to be republished

पाठ–24
दूर देश की बात

0428CH24

आज मालू के घर में बहुत चहल–पहल है। चिट्टप्पन और उनका परिवार पाँच साल बाद घर आए हैं। पाँच साल पहले चिट्टप्पन की नौकरी अबू धाबी में लगी थी। तभी से वे वहीं रह रहे हैं। मालू और उसके अप्पा, चिट्टप्पन के परिवार को लेने हवाई अड्डे गए।

हवाई जहाज़ के पहुँचने के बाद सभी यात्रियों का सामान उतरने में काफ़ी समय लग गया। आखिरकार, चिट्टप्पन, कुंजम्मा और बच्चे हवाई अड्डे से बाहर आते दिखाई दिए। "शांता और शशि कितने बड़े हो गए हैं!" अप्पा एकाएक बोल पड़े। सारा सामान टैक्सी में रखा और सब चल दिए, मालू के घर की ओर।

"शांता, तुम इतने लंबे सफ़र के बाद बहुत थक गई होगी। अप्पा बता रहे थे कि अबू धाबी भारत से बहुत दूर है।" मालू ने कहा।

"अरे नहीं, हम तो बिलकुल नहीं थके। माना, अबू धाबी यहाँ से बहुत दूर है, पर हवाई जहाज़ से पहुँचने में हमें दो ही घंटे लगे। हवाई जहाज़ बहुत तेज़ जो उड़ता है।" शांता बोली।

अध्यापक के लिए–मलयालम में चिट्टप्पन–पिता का छोटा भाई, कुंजम्मा–पिता के छोटे भाई की पत्नी अर्थात् चाची।

© NCERT not to be republished

मालू यह सुनकर बहुत हैरान हुई। उसे याद आया, जब वह अपने स्कूल के ट्रिप पर चेन्नई गई थी, तो उसे ट्रेन में पूरे 12 घंटे लगे थे लेकिन नक्शे में तो चेन्नई और कोच्ची बहुत पास दिखाई देते थे। हवाई अड्डे से घर तक के रास्ते में मालू, शांता और शशि ने बहुत सारी बातें कीं। मालू को याद आया कि वह जब अपने स्कूल के बच्चों के साथ ट्रिप पर गई थी, तो उसे बहुत ही अच्छा लगा था। वह शांता से भी पूरे सफ़र की बातें जानना चाहती थी।

रेत ही रेत!

मालू ने पूछा, "क्या तुमने हवाई जहाज़ से बहुत-सी मज़ेदार चीज़ें देखीं?" "हाँ! ज़्यादातर हवाई जहाज़ से बादल-ही-बादल दिखाई दिए, क्योंकि हवाई जहाज़ बादलों से बहुत ऊपर उड़ रहा था। इससे पहले कुछ समय तक तो नीचे रेत-ही-रेत दिखाई दी, पर रेत का रंग बदलता रहा—कभी सफ़ेद, कभी भूरा तो कभी पीला, लाल या काला। कभी-कभी उन्हें रेत के पहाड़ भी दिखाई दिए। फिर नीचे ज़मीन दिखाई देनी बंद हो गई," शांता बोली। "इन्हें रेत के टीले भी कहते हैं," शशि ने आगे कहा।

"मैंने तो केवल समुद्र के किनारे ही रेत देखी है," मालू बोल पड़ी।

"तब तो तुम्हें अबू धाबी ज़रूर आना चाहिए," चिट्टप्पन बोले।

© NCERT not to be republished

उन्होंने बताया कि अबू धाबी और आस-पास के देश रेगिस्तानी इलाके में हैं। शहर से थोड़ी ही दूर जाओ, तो चारों ओर दूर-दूर तक रेत ही रेत दिखाई देती है। न कोई पेड़, न ही हरियाली, केवल रेत!

"केरल में बने अपने घर के आस-पास की हरियाली और ठंडे पानी को मैं बहुत याद करती थी, अब यहाँ आकर बहुत अच्छा लग रहा है," कुंजम्मा बोली।

"बारिश कैसी होती है, यह बात तो शांता और शशि भूल ही गए हैं। वैसे भी, रेगिस्तान में बारिश नहीं होती। वहाँ पानी सचमुच बहुत कीमती है। वहाँ न बारिश है, न ही नदियाँ, न झील है और न ही तालाब। ज़मीन के नीचे भी वहाँ पानी नहीं है," चिट्टप्पन ने कहा। शशि ने बीच में कहा, "लेकिन, वहाँ रेतीली ज़मीन के नीचे तेल होता है। इसलिए तो वहाँ पेट्रोल आसानी से मिल जाता है।" "वहाँ पेट्रोल पानी से सस्ता है।" चिट्टप्पन ने बताया।

बातें करते-करते सब मालू के घर पहुँच गए। टैक्सी से उतरते ही शशि और शांता आस-पास इतने सारे फलों के पेड़ देखकर हैरान रह गए—नारियल, केले, पपीते, सुपारी, कटहल—कितनी ही तरह के पेड़!

शशि बोली, "अबू धाबी में तो सिर्फ़ खजूर के ही पेड़ दिखाई देते हैं क्योंकि वही एक ऐसा पेड़ है, जो वहाँ उग सकता है।"

© NCERT not to be republished

कितने सुंदर तोहफ़े और फ़ोटो

सबसे मिलने के बाद कुंजम्मा ने अपने बैग और अटैची खोले। वे सभी के लिए तोहफ़े लाईं थीं, और खजूर भी, मीठे-मीठे और स्वादिष्ट। शशि ने मालू को अबू धाबी में चलने वाले नोट और सिक्के भी दिखाए। शांता ने बताया कि वहाँ अलग तरह के रुपये होते हैं, जिन्हें 'दिरहम' कहा जाता है। उन पर वहाँ की अरबी भाषा में कुछ लिखा होता है। उन्होंने अपने घर और आस-पास की जगहों की तसवीरें भी दिखाईं।

चिट्टप्पन ने मालू को एक ग्लोब निकालकर दिया। बोले, "मालू ढूँढ़ो, अबू धाबी कहाँ है और केरल कहाँ।" सब बच्चे ग्लोब पर अलग-अलग जगह ढूँढ़ कर मज़े लेने लगे। मालू ने चेन्नई और कोच्ची भी ढूँढ़ा।

शाम को बरामदे में बैठे सभी ठंडी-ठंडी हवा का मज़ा ले रहे थे और अबू धाबी की तसवीरें देख रहे थे। बहुत ऊँची-ऊँची इमारतें और उनमें बड़ी-बड़ी शीशे की खिड़कियाँ! उनको देख मालू झट बोली, "इन खिड़कियों से कितनी ठंडी हवा आती होगी।" चिट्टप्पन बोले, "अबू धाबी में खिड़कियाँ खोलने का तो सवाल ही नहीं उठता। बाहर बहुत ही गर्मी होती है। ज़्यादातर जगह तो एयर-कंडीशनर चलते हैं। गर्मी की वजह से वहाँ के लोग ढीले-ढाले सूती कपड़े

© NCERT not to be republished

पहनते हैं और पूरा शरीर और सिर भी ढँककर रखते हैं। इससे वे तेज़ धूप से बच जाते हैं।"

मालू को वहाँ की तसवीरें देखने में बहुत मज़ा आ रहा था। उसे कितनी सारी नई-नई बातें भी सुनने को मिल रही थीं। वह हर तसवीर से अपने शहर की तुलना भी कर रही थी। उसने सोच लिया कि वह अबू धाबी की एक रिपोर्ट भी अपनी कक्षा के लिए तैयार करेगी।

चर्चा करो और लिखो

- तुम भी अपने शहर की तुलना अबू धाबी से करते हुए एक छोटी-सी रिपोर्ट तैयार करो। उसमें तसवीरें या चित्र बनाकर भी लगा सकते हो। अपनी रिपोर्ट में इन बातों के बारे में लिखना मत भूलना–
  - जलवायु और मौसम
  - पेड़-पौधे
  - लोगों का पहनावा
  - इमारतें
  - सड़कों पर वाहन
  - भाषा
  - खान-पान
- रेगिस्तानी इलाके में पेड़-पौधे कम क्यों होते हैं?

_____

- क्या तुम्हारी जान-पहचान के कोई व्यक्ति किसी और देश में रहते हैं?

_____

© NCERT not to be republished

- वे वहाँ कब से रहते हैं? वे वहाँ पढ़ाई करने गए थे या काम करने? क्या उनके वहाँ जाने का कोई अन्य कारण था?

- **इन नोटों को देखो।**

हर नोट के सामने के बक्से में उसका मूल्य लिखो।

© NCERT not to be republished

- ये कौन-से देश के नोट हैं? तुम कैसे जानोगे?
- नोटों पर किसकी तसवीर बनी है?
- क्या नोटों पर मूल्य के अलावा और भी नंबर लिखे हैं?
- क्या दो नोटों पर एक ही नंबर छपा हो सकता है?
- एक दस रुपये के नोट को ध्यान से देखो। इस पर लिखी कितनी भाषाओं को तुम पहचान सकते हो?
- किसी एक नोट पर लिखे बैंक का नाम लिखो।

सिक्कों का मिलान करो

- इनमें से कितने सिक्के तुम पहचान सकते हो?

© NCERT not to be republished

- सिक्कों पर मूल्य के अलावा और क्या-क्या लिखा है?

- इन नोटों को देखो। क्या ये सभी नोट भारत के हैं? जो नोट भारत के नहीं हैं, उन पर लाल गोले बनाओ। पता करो और लिखो कि बचे हुए नोट कहाँ के हैं?

not to be republished

0428CH25

पाठ-25

चटपटी पहेलियाँ!

कूटी जाती, पीसी जाती,
भोजन तीखा खूब बनाती।
खाने में जो ज़्यादा डल गई,
तो फिर मुँह से निकली सी-सी।
आँख-नाक से निकले पानी,
याद दिला दूँ, सबको नानी।
सोचो, सोचो कौन हूँ मैं,
जल्दी बोलो, कौन हूँ मैं?

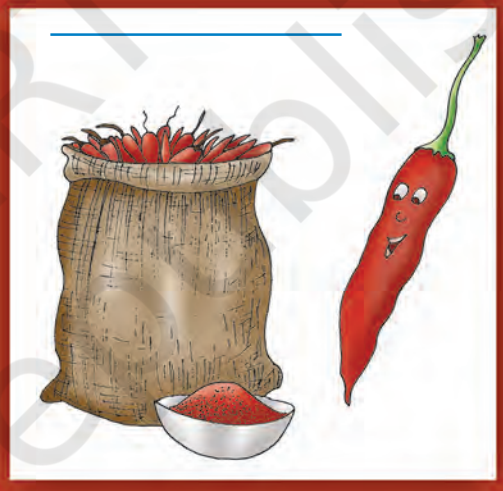

कूटी जाती, पीसी जाती,
खाने में पीला रंग लाती।
तेल में मुझे मिलाकर दादी,
चोट लगे तो झट से लगाती।
सबकी चोट को ठीक कराती,
इसीलिए मैं सबको भाती।
सोचो, सोचो कौन हूँ मैं,
जल्दी बोलो, कौन हूँ मैं?

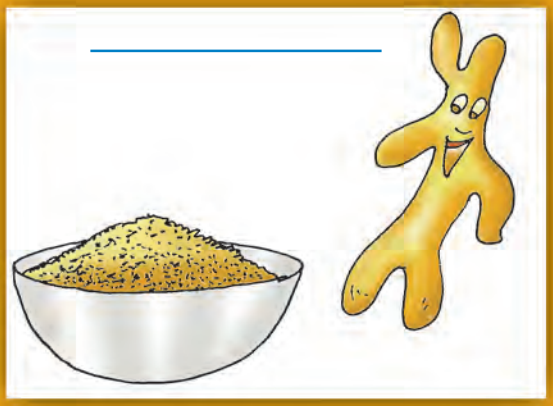

© NCERT not to be republished

काले-काले मोती जैसी,
छोटी-सी पर गोल हूँ,
बारीक पिसी या दरदरी,
मैं तीखे स्वाद वाली हूँ।
मीठे और नमकीन में,
मैं दोनों में ही डाली जाती हूँ,
सोचो, सोचो कौन हूँ मैं,
जल्दी बोलो, कौन हूँ मैं?

मैं पतला-सा, पर छोटा हूँ,
भूरा भी हूँ, और काला भी हूँ।
गरम घी और तेल में,
मैं खुशबू फैलाता हूँ,
दही और जलज़ीरे में,
भून कर डाला जाता हूँ।
सोचो, सोचो कौन हूँ मैं,
जल्दी बोलो, कौन हूँ मैं?

हरे रंग की जीरे जैसी,
ठीक हाज़मा रखती
खाने के बाद मुझे खाते,
मैं मुँह का स्वाद बढ़ाती।
सोचो, सोचो कौन हूँ मैं,
जल्दी बोलो, कौन हूँ मैं?

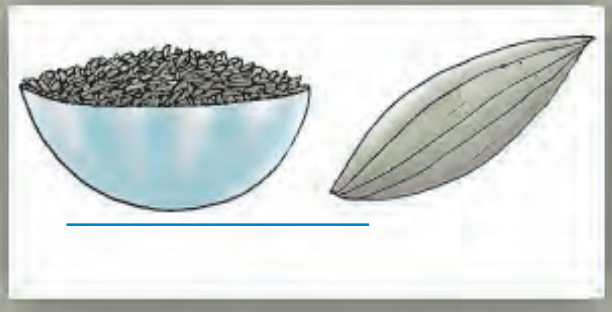

© NCERT not to be republished

कील जैसी दिखती हूँ,
पर मैं एक कली हूँ।
चॉकलेटी भूरे रंग की,
तेज़ खुशबू वाली हूँ।
जब दर्द होता दाँत में,
तब मुझे रखते दाँत में।
सोचो, सोचो कौन हूँ मैं,
जल्दी बोलो कौन हूँ मैं?

किन्हीं दो मसालों के लिए पहेलियाँ बनाओ और अपनी क्लास में पूछो। उन मसालों के चित्र बनाकर नाम भी लिखो।

- पता करो – तुम्हारे घर में खाने में कौन-कौन से मसाले काम में लाए जाते हैं। उनकी सूची बनाओ। अपने साथियों की सूची भी देखो।

- अपने दादा-दादी/नाना-नानी से पता करो, जब वे बच्चे थे, तब उनकी रसोई में कौन-कौन से मसाले अधिकतर इस्तेमाल होते थे?

- एक ऐसे मसाले का नाम लिखो, जो नमकीन और मीठी – दोनों चीज़ों में डाला जाता है।

- पता करो, खाने को खट्टा बनाने के लिए उसमें क्या-क्या डाला जाता है?

© NCERT not to be republished

मैं हूँ कुट्टन। मैं केरल में रहता हूँ। मेरे घर के आँगन में मसालों का बगीचा है। वहाँ मैं तेज़पत्ता, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, काली मिर्च आदि को उगते देखता हूँ।

- पता करो, क्या तुम्हारे इलाके में किसी मसाले के पौधे हैं? उनके नाम लिखो।

_____ _____ _____

- कक्षा में कुछ साबूत मसालों के थोड़े-से नमूने लाओ। इकट्ठे किए गए मसालों के नाम तालिका में लिखो। अपनी आँखें बंद करके सभी मसालों को बारी-बारी से छूकर और सूँघकर पहचानने की कोशिश करो। जिन्हें तुम पहचान पाते हो, उनके नाम के आगे सही का निशान (✓) लगाओ। न पहचान पाने पर गलत का निशान (×) लगाओ।

क्र. सं	मसाले का नाम	सूँघकर	छूकर
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			

चलो अब बनाएँ, आलू की चटपटी चाट।

- इसके लिए चाहिए–
  - उबले हुए आलू–जो कक्षा में सभी के लिए पूरे हो जाएँ।
  - नमक, लाल मिर्च, अमचूर अथवा नींबू–स्वाद के अनुसार।

अध्यापक के लिए–गरम मसाला, कई मसालों का पिसा पाउडर, जैसे, ज़ीरा, इलायची (छोटी और बड़ी), लौंग, दालचीनी काली मिर्च, तेजपात के पत्ते, सोंठ, आदि।

© NCERT not to be republished

- अगर मिल सके, तो भुना ज़ीरा, काला नमक, गरम मसाला, हरे धनिये के पत्ते

आलू छीलकर छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लो। इसमें अपने स्वाद के अनुसार नमक, लाल मिर्च और अमचूर या नींबू डालो। चाट का स्वाद बढ़ाने के लिए, इसमें थोड़ा-सा भुना हुआ ज़ीरा, काला नमक और गरम मसाला डालो। आलुओं को अच्छी तरह से हिला लो। इसके ऊपर कटा हुआ हरा धनिया डाल दो, तो बात ही क्या! चटपटी चाट खाने के लिए तैयार है।

- कैसी लगी तुम्हें आलू की चाट?
- सोचो, अगर चाट में मसाले न डाले होते, तो इसका स्वाद कैसा होता?
- एक तरह की चाट बनाना और सीखो। कक्षा में उसे मिल-बाँट कर खाओ।
- कम मसाले और तेज़ मसाले वाली चीज़ खाने से जीभ पर कैसा लगता है?

© NCERT not to be republished

0428CH26

पाठ–26
फ़ौजी वहीदा

क्या तुमने इनकी फ़ोटो कहीं देखी है? ये हैं लेफ़्टीनेंट कमांडर वहीदा प्रिज़्म। ये भारतीय नौसेना में डॉक्टर हैं और नौसेना के समुद्री जहाज़ पर काम करने वाली गिनी–चुनी महिलाओं में से एक हैं। ये पहली महिला हैं, जिन्होंने एक पूरी परेड की कमान सँभाली। किसी भी सेना में यह बहुत बड़ी बात मानी जाती है।

तुम्हारी इस किताब के लिए हमने उनसे एक खास बातचीत की। आओ, उसे पढ़ते हैं।

प्रश्न–वहीदा, आप अपने बचपन और स्कूल के बारे में बताइए।

वहीदा–मैं थन्नामंडी नाम के बहुत छोटे गाँव से हूँ। यह जम्मू–कश्मीर के राजौरी ज़िले में है। मैंने सरकारी स्कूल से पढ़ाई की है। मेरे गाँव की कई लड़कियाँ इसी स्कूल में पढ़ने आती थीं, पर वे इसके बाद आगे के बारे में

अध्यापक के लिए–बच्चों को भारत के नक्शे में जम्मू और कश्मीर ढूँढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें।

© NCERT not to be republished

कुछ नहीं सोचती थीं। लेकिन मैं तो कुछ बनना चाहती थी। हमेशा आगे बढ़ना चाहती थी। मुझे आगे पढ़ने की इच्छा थी और मैं दसवीं की पढ़ाई पूरी करना चाहती थी। उस समय, यह हमारे इलाके के लिए नई बात थी। इसके कारण मेरे मम्मी-पापा को बहुत मुश्किलें आईं। यहाँ तक कि हमें गाँव भी छोड़ना पड़ा। तब हम नानी के घर राजौरी में रहे। मैंने बारहवीं भी वहीं से की।

प्रश्न–तो आप पहले से ही कुछ अलग सोचती थीं?

वहीदा–जब मैं बहुत छोटी थी, तभी से कुछ अलग करना चाहती थी। मुझे मोटर साइकिल चलाने का बहुत शौक था। हम तीन बहनें हैं। पापा भी यही चाहते थे कि हम बहनों में से एक डॉक्टर बने, एक वकील बने या पुलिस में जाए और एक बच्चों को पढ़ाए। मैं भारतीय नौसेना में डॉक्टर बन गई हूँ और मेरी बहन जम्मू पुलिस में है।

प्रश्न–आप डॉक्टर कैसे बनीं?

वहीदा–इसके लिए मैंने बहुत मेहनत की थी। मेरे दोस्तों और घरवालों ने भी मेरी बहुत मदद की। मैंने जम्मू मेडिकल कॉलेज में दाखिला पाया। वहाँ मैंने पाँच साल पढ़ाई की और एम.बी.बी.एस. की परीक्षा पास की।

प्रश्न–आप सेना में कैसे आईं? आपके घरवालों ने रोका नहीं?

वहीदा–अरे नहीं! उन्हें तो लगता था कि यही नौकरी मेरे लिए सबसे अच्छी है। जब मैं बहुत छोटी थी, तब अपने गाँव में फ़ौजियों को देखती थी। मेरा मन करता था कि मैं भी उन्हीं की तरह बनूँ। यह मेरे लिए एक बहुत ही बड़ा सपना था। स्कूल के समय में मैं कैंपों में भी जाती थी, पहाड़ों पर चढ़ती थी और 'गर्ल गाइड' भी थी। डॉक्टर बनने के बाद सेना में भर्ती होने के लिए मेरा एक इंटरव्यू हुआ।

अध्यापक के लिए–बच्चों को भारत की तीनों सेनाओं के बारे में जानकारी दी जा सकती है। इसके लिए फ़ौजी परिवार से आने वाले बच्चों की मदद ली जा सकती है।

© NCERT not to be republished

उसमें मुझे चुन लिया गया। मेरी छह महीने की ट्रेनिंग भी हुई थी।

प्रश्न–अच्छा, तो आप नौसेना में क्यों आईं? नौसेना में तो समुद्री जहाज़ पर रहना पड़ता है न?

वहीदा–मुझे घूमने का बहुत शौक है। मेरा दूर-दूर जाने का मन करता है। मैं पहाड़ वाली जगह पर पैदा हुई हूँ। अब मैं समुद्र में काम कर रही हूँ। बहुत अच्छा लगता है।

बहुत कम महिला अधिकारियों ने जहाज़ पर काम किया है। मैं उनमें से एक हूँ। पहले नौसेना में महिलाएँ जहाज़ पर नहीं जाती थीं। जब मौका दिया गया, तो मैंने खुद ही आगे बढ़ कर अपना नाम दिया। मैं तो पनडुब्बी में भी जाना चाहती हूँ। मैं हर ऐसा काम करना चाहती हूँ, जो लोग सोचते हैं कि महिलाएँ नहीं कर सकतीं। अभी तो महिलाओं को पनडुब्बी में जाने नहीं दिया जाता। जब भी मौका मिलेगा, मैं ज़रूर जाऊँगी।

प्रश्न–तो आपकी डॉक्टरी की पढ़ाई का क्या हुआ?

वहीदा–मैं भारतीय नौसेना में डॉक्टर हूँ। नौसेना में काम करने वाले डॉक्टर, मरीज़ों को सिर्फ़ दवाई ही नहीं देते। वे तो दरअसल मेडिकल अधिकारी होते हैं। जहाज़ तीन-चार महीने के लिए समुद्र में जाता है। तब मेरी ज़िम्मेदारी होती है कि सबकी तबीयत ठीक रहे। मैं जहाज़ पर मौजूद सभी अधिकारियों और नाविकों का चेकअप करती हूँ। इसके अलावा यह भी

अध्यापक के लिए–इस बातचीत की मदद से बच्चों को प्रोत्साहित करें कि वे भी बड़ा बनने का सपना देखें और उसके लिए मेहनत करें।

© NCERT not to be republished

देखना होता है कि जहाज़ पर सफ़ाई रहे। कहीं गंदगी न फैले और चूहे न आएँ। गंदगी और चूहों से बीमारियाँ फैल सकती हैं। इसके अलावा मैं सबको इसकी तैयारी करवाती हूँ कि वे 'मेडिकल इमरजेंसी' में क्या करेंगे। अगर कोई ऐसी दुर्घटना हो जाए, जैसे आग लगना, तब जहाज़ पर ऐसी बातों के लिए तैयार रहना होता है।

प्रश्न–क्या जहाज़ पर अस्पताल होता है?

वहीदा–नौसेना के हर जहाज़ पर 'फ़र्स्ट-एड' दी जाती है। जहाज़ पर एक डॉक्टर और दो-तीन सहायक होते हैं। ज़रूरी दवाइयाँ और कुछ मशीनें भी होती हैं। ये सब एक छोटे-से कमरे में रखी रहती हैं।

प्रश्न–आपने जब परेड की टुकड़ी का नेतृत्व किया, तब आप ऐसा करने वाली पहली महिला बनीं। इसके लिए आपने बहुत मेहनत की होगी।

वहीदा–तीन साल तक मेरी परेड देखने के बाद मेरे अधिकारियों ने मुझे यह मौका दिया। मुझे लगा कि मेरे अधिकारियों ने मुझे चुना, मुझ में विश्वास दिखाया। इसीलिए मैंने बहुत लगन से परेड का अभ्यास किया था।

प्रश्न–परेड के बारे में कुछ बताइए।

वहीदा–जब परेड होती है, तो पीछे चार टुकड़ियाँ चलती हैं। पूरी परेड में 36 निर्देश देने होते हैं। निर्देश इतनी ज़ोर से देने होते हैं कि सबसे पीछे वाली टुकड़ी के लोग भी सुन पाएँ। देखने वाले तक भी आवाज़ सुनें, जो मैदान के दूसरी तरफ़ बैठते हैं।

अध्यापक के लिए–इस पाठ को पढ़ाते हुए अन्य व्यवसायों की भी चर्चा करवाई जा सकती है।

© NCERT not to be republished

प्रश्न–चार टुकड़ियों के आगे चलते हुए आप घबराई नहीं?

वहीदा–घबराहट तो नहीं थी, पर ये है कि 36 बार चिल्ला कर निर्देश देने होते हैं। एक भी भूल जाओ, तो पूरी परेड गड़बड़ा जाती है। मैंने पूरा एक महीना सुबह-शाम अभ्यास किया था। परेड तो मैं स्कूल में भी करती ही थी।

प्रश्न–आपके नाम में जो यह शब्द है 'प्रिज़्म', इसका क्या मतलब है?

वहीदा–यह नाम मेरे पापा ने मुझे दिया था। प्रिज़्म ऐसा काँच होता है, जो सात रंग दिखाता है। वे चाहते थे कि मैं भी इसी तरह अपनी पहचान बनाऊँ। इसीलिए उन्होंने बचपन से ही मुझे यह नाम दिया।

- क्या तुम किसी को जानते हो जो सेना में हैं? वे कौन-सी सेना में हैं – नौसेना, थल सेना या वायु सेना?

- वे क्या काम करते हैं?

- क्या तुम सेना में जाना चाहते हो?

- कौन-सी सेना में जाना चाहते हो – थल सेना, वायु सेना या नौसेना?

अध्यापक के लिए–इस बात पर ज़ोर दिया जा सकता है कि अब महिलाएँ भी बड़ी संख्या में तीनों सेनाओं और पुलिस में जा रही हैं। बच्चों को कक्षा में प्रिज़्म दिखाएँ।

© NCERT not to be republished

- सेना की तरह कौन-कौन सी नौकरियों में लोग वर्दी पहनते हैं?

- वहीदा नौसेना में डॉक्टर का काम करती हैं। नौसेना के तुम कोई और पाँच काम बताओ।

- क्या तुमने कोई परेड देखी है? अपने स्कूल में परेड करो और 36 बार निर्देश देकर देखो। जैसे– "परेड, दाएँ देखेगी, दाएँ देख", "परेड हिलो मत", "खुली लाइन चल", "निकट लाइन चल"। क्या तुम इसमें परेड के कुछ और निर्देश जोड़ सकते हो?

- एक डॉक्टर से बातचीत करो। उनके काम के बारे में पता लगाओ।

- क्या तुम ऐसी किसी महिला को जानते हो, जिन्होंने अनोखा काम किया है? उनके साथ ऐसी ही बातचीत करो जैसी हमने वहीदा के साथ की है। सोचो, क्या प्रश्न पूछोगे। उनसे पता करो कि उन्होंने उस काम को क्यों चुना और उन्हें कैसी-कैसी मुश्किलें आईं।

© NCERT not to be republished

0428CH27

पाठ–27

कोशिश हुई कामयाब

चुसकिट का सपना

चुसकिट के लिए आज बहुत-बहुत खास दिन है – इतना खास कि उसे रात को नींद ही नहीं आई। जानते हो क्यों? चुसकिट दस साल की हो गई है, पर आज पहली बार स्कूल जा रही है। कितने सालों से वह इस दिन का इंतज़ार कर रही थी।

स्कूल चुसकिट के घर से बहुत ज़्यादा दूर नहीं है। वहाँ पहुँचने के लिए बस बड़ी सड़क से होकर, झील के साथ-साथ चलते जाओ। पोपलर के पेड़ के पास से झील पार कर लो। फिर थोड़ी-सी चढ़ाई और पहुँच गए स्कूल। लद्दाख के 'स्किटपो पुल' गाँव के सभी बच्चे ऐसे ही स्कूल पहुँचते हैं, बस चुसकिट को छोड़कर।

© NCERT not to be republished

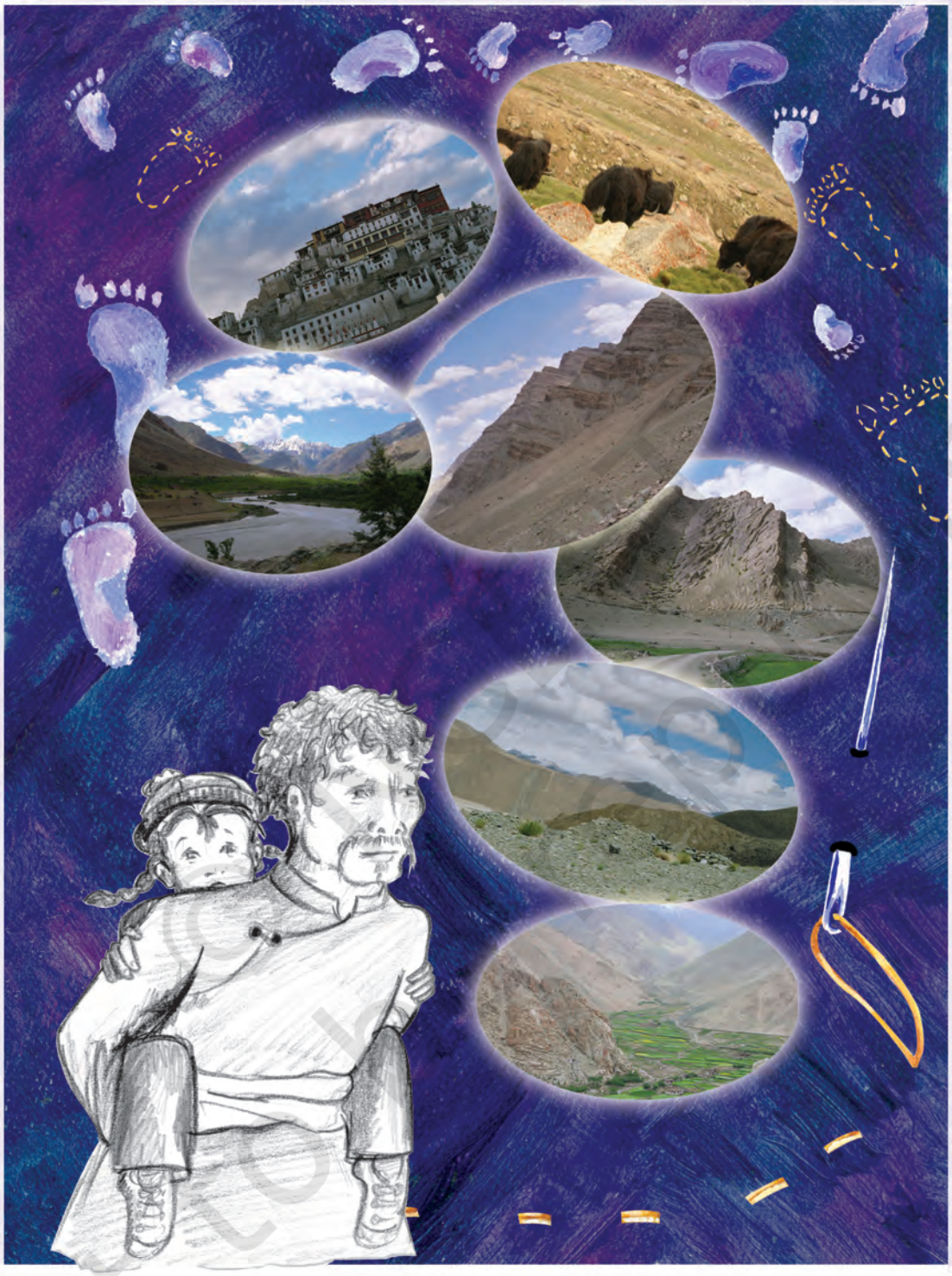

चुसकिट और लद्दाख के कुछ चित्र

- तुम स्कूल कैसे जाते हो?
- पता करो, लद्दाख कहाँ है। वह कैसा इलाका है?

पहले-पहले तो चुसकिट को भी पता नहीं था कि वह दूसरे बच्चों से कैसे अलग है। धीरे-धीरे उसे लगने लगा कि वह अन्य बच्चों की तरह सभी काम नहीं कर पाती। कारण, उसकी टाँगें। उसके जन्म के समय से ही उसकी टाँगों में खराबी थी।

चुसकिट की कुर्सी

चुसकिट पूरा-पूरा दिन खिड़की के पास बैठी ड्रॉइंग बनाती रहती थी। उसकी माँ (आमा-ले) कहती थी कि वह सबसे सुंदर ड्रॉइंग बनाती है। इससे चुसकिट खुश हो जाती थी। एक दिन उसके पिताजी (आबा-ले) उसके लिए पहियों वाली कुर्सी ले आए। चुसकिट ने ज़ल्दी ही अपनी कुर्सी को आगे-पीछे घुमाना सीख लिया।

चुसकिट की खुशी का कोई ठिकाना न था। अब उसके पिताजी को उसे हर जगह उठाकर नहीं ले जाना पड़ता था। जब मन करता, वह आमा-ले से कहती कि वे उसे उस कुर्सी पर बिठा दें। फिर वह अपनी कुर्सी चलाकर बाहर आँगन में आ जाती।

चुसकिट हर सुबह बच्चों को देखती थी। बच्चे हँसते-खेलते, मज़े करते हुए स्कूल जाते थे। उसका भी मन करता था कि काश! वह भी उनमें शामिल हो जाए।

© NCERT not to be republished

एक दिन अब्दुल उसके घर चिट्ठी पहुँचाने आया, तो उसने पूछा, "चुसकिट तुम स्कूल क्यों नहीं आती?" चुसकिट ने बहुत उदास होकर जवाब दिया, "आबा-ले, मुझे रोज़-रोज़ उठाकर स्कूल नहीं ले जा सकते। मैं अपनी कुर्सी चलाकर भी नहीं जा सकती। स्कूल जाने का रास्ता इतना ऊबड़-खाबड़ जो है। मैं नदी भी कैसे पार कर सकती हूँ?"

अब्दुल ने पूछा, "क्या तुम स्कूल जाना चाहती हो?" चुसकिट का मन उछल पड़ा। वह बोली, "क्यों नहीं, क्यों नहीं! मैं भी तुम सब की तरह स्कूल जाना चाहती हूँ, पढ़ना चाहती हूँ, खेलना चाहती हूँ..."

मेमे-ले (दादाजी) ने उसे, उसी समय टोक दिया। वे बोले, "चुसकिट सपने देखना छोड़ दो। तुम जानती हो, यह मुमकिन नहीं है।"

- तुम्हें स्कूल में क्या-क्या करना अच्छा लगता है?
- क्या तुम्हें स्कूल जाना अच्छा लगता है?
- यदि तुम कभी स्कूल नहीं जा पाते, तो तुम्हें कैसा लगता?

एक उपाय

अब्दुल चुसकिट के घर से चला गया, परंतु वह उसके बारे में सोचता रहा। उसने एक बहुत बढ़िया तरीका सोचा, चुसकिट को स्कूल पहुँचाने का। फिर क्या था! वह हैडमास्टर साहब और सब अध्यापकों के पीछे पड़ गया और अपनी बात मनवाकर ही रहा। अब उन सब का एक ही काम था—चुसकिट की परेशानी को आसानी में बदलना। उन्होंने मिलकर तरीका ढूँढ़ लिया, जिससे चुसकिट अपनी पहियों वाली कुर्सी को स्कूल के रास्ते पर चला सके।

© NCERT not to be republished

इसके लिए ऊबड़-खाबड़ रास्ते को समतल करना था। बच्चों की एक टोली उसके घर के सामने वाली ऊबड़-खाबड़ ज़मीन को ठीक करने में लग गई। दूसरा टोली नदी के पास वाली ज़मीन को। परंतु अभी एक समस्या और थी चुसकिट नदी कैसे पार करेगी? इसके लिए बड़े बच्चों ने अध्यापक की मदद ली। उन्होंने लकड़ी की फट्टियों से नदी पर पुलिया बनाई। बच्चों ने हँसते-खेलते, खुशी-खुशी यह काम किया। वे सभी चाहते थे कि चुसकिट जल्दी ही स्कूल जाए।

चुसकिट के आमा-ले और आबा-ले भी कहाँ पीछे रहने वाले थे। उन्होंने सभी को गरमागरम चाय पिलाई और बिस्कुट खिलाए। वहीं बैठे चुसकिट के मेमे-ले की आँखों में खुशी के आँसू थे। इसलिए नहीं कि वे दुखी थे, परंतु इसलिए कि वे बहुत खुश थे।

शाम होते-होते सारा काम हो गया। सभी बच्चे बहुत खुश थे। पर सबसे ज़्यादा खुश थी—चुसकिट। उसका सपना अब पूरा होने वाला था।

© NCERT not to be republished

और आज वह दिन आ ही गया! चुसकिट जल्दी-जल्दी तैयार हो रही है- स्कूल जाने के लिए। वह अब और इंतज़ार नहीं कर सकती!

बताओ

- चुसकिट किस-किस की मदद से स्कूल पहुँच पाई?
- अगर तुम अब्दुल होते, तो तुम क्या-क्या करते?
- चुसकिट स्कूल तो पहुँच गई परंतु स्कूल के अंदर उसे कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं? कौन-कौन सी? अगर तुम चुसकिट के दोस्त होते, तो उसकी मदद कैसे-कैसे करते?
- क्या तुम्हारे स्कूल में पहियों वाली कुर्सी के लिए रैंप बने हैं?
- क्या तुम्हारे घर के आस-पास कोई ऐसा बच्चा रहता है, जिसे किन्हीं कारणों से स्कूल जाने में परेशानी हो रही हो? क्या तुम उस बच्चे की मदद करना चाहोगे? कैसे?
- अपने घर के आस-पास की इमारतों को देखो। क्या उनमें पहियों वाली कुर्सी अंदर ले जाने की सुविधा है?

आओ, बना कर देखें

- रैंप और पहियों वाली कुर्सी का चित्र कॉपी में बनाओ।
- तुम भी अपना एक पुल बनाओ। इसके लिए सामान तुम्हें अपने आस-पास ही मिल सकता है, जैसे– आइसक्रीम की डंडियाँ, प्लास्टिक के चम्मच, छोटी डंडियाँ, रस्सी, सुतली आदि। अपने सारे दोस्तों को भी पुल बनाने के लिए कहो।
- अब समूह के साथ मिलकर एक मॉडल बनाओ। मॉडल में खेत, नदियाँ, पर्वत, सड़क और रेल की पटरियाँ बनाओ। इसके लिए तुम चिकनी मिट्टी, रेत, कंकड़-पत्थर के टुकड़े, टहनी आदि काम में ले सकते हो। अब इस मॉडल में अलग-अलग जगहों पर पुल रखो।

© NCERT not to be republished

चुसकिट और उसका स्कूल

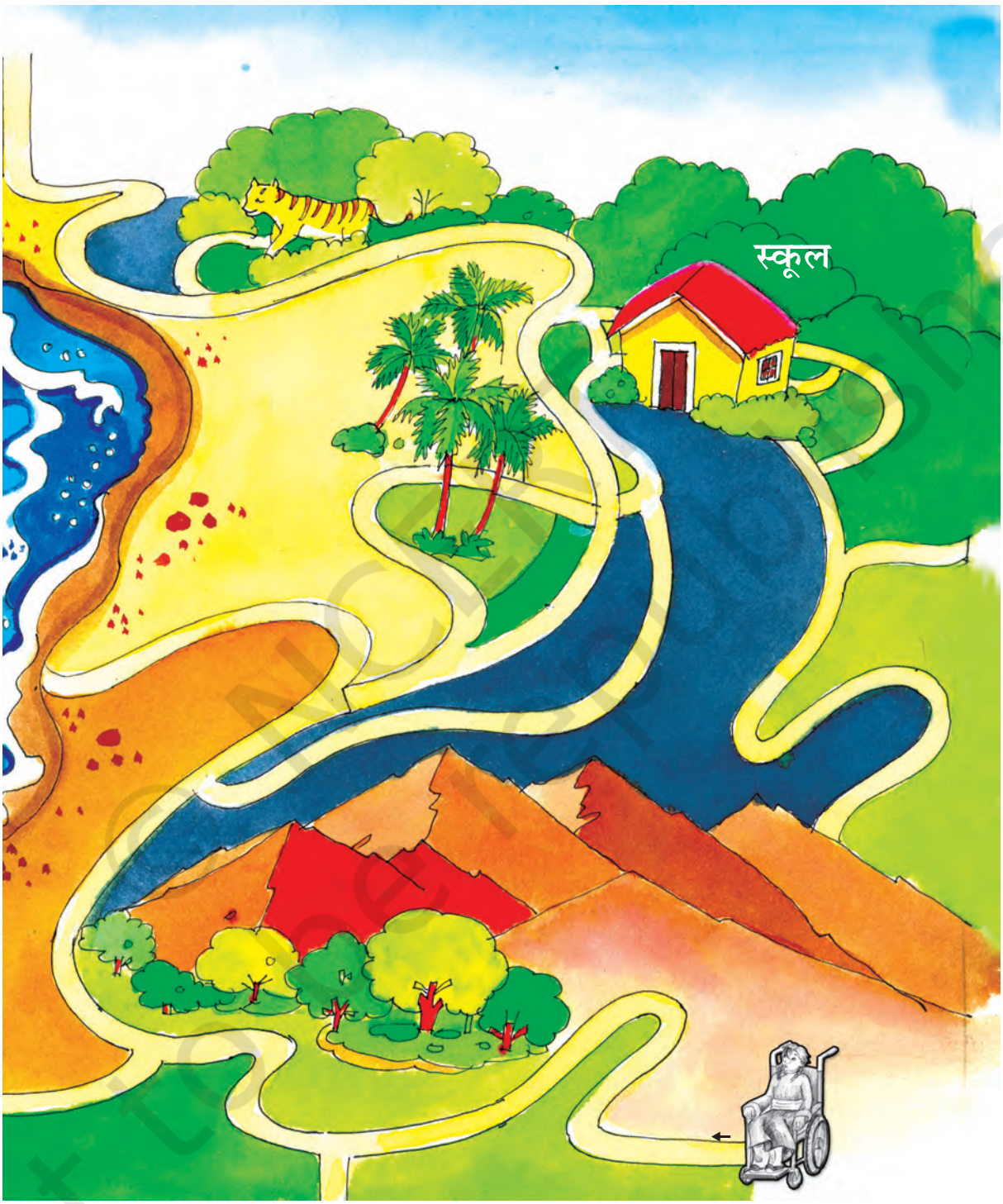

चुसकिट को स्कूल पहुँचाओ।

© NCERT not to be republished